श्रीमन्मिश्रबलभद्रविरचितं

द्वितीयो भागः

व्याख्याकारः

डॉ॰ मुरलीधर चतुर्वेदी

श्रीमन्मिश्रबलभद्रविरचितम्

# होरारत्नम्

'इन्दुमती' हिन्दी व्याख्योपेतम्

## द्वितीयो भागः


व्याख्याकारः

डॉ० मुरलीधर चतुर्वेदी



**मोतीलाल बनारसीदास**

दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास बंगलौर

कलकत्ता पुणे मुम्बई

# भूमिका

## श्री हनुमते नमः

सर्वदा स्मरणीयो मे पिता सुद्बुद्धिदायकः ।
कोविदाऽब्जकदम्बार्को देवाख्यः श्रीलकेशवः ।।

मुझे आज परम हर्ष का अनुभव हो रहा है कि बाबा विश्वनाथ जी की अनुकम्पा से आचार्य पं० बलभद्रजी द्वारा संगृहीत होरारत्न का दूसरा भाग प्रथम बार हिन्दी अनुवाद के साथ फलित ज्योतिष विद्यानुरागियों के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है।

उक्त ग्रन्थ व ग्रन्थकार एवं काल के विषय में इसके प्रथम भाग में वर्णन हो चुका है।

इसके अवशिष्ट ५ अध्याय प्रस्तुत द्वितीय भाग में हिन्दी व्याख्यान के साथ पाठकों के कर-कमलों में हैं, जो कि बड़े महत्वपूर्ण हैं। इस में मेरी दृष्टि में मुख्य कारण यही प्रतीत होता है कि इन दोनों भागों में आये हुए ग्रन्थ तथा ग्रन्थकारों के विषय में प्रायः जनता अनभिज्ञ सी मालूम होती है। क्योंकि प्रकाशन के अभाव में आये हुए ग्रन्थों की उपलब्धि इस समय नहीं हो रही है।

जैसे इसके प्रथम भाग में कश्यप, गर्ग, गर्गजातक, गर्गसंहिता, गार्गि, कश्यप, जयार्णव, जातक सर्वस्व, जातकोत्तम, जीवशर्मा, ज्ञानप्रकाश, दामोदर पद्धति, देवकीर्ति, पराशरजातक, पुलस्तिसिद्धान्त, बादरायण, भरद्वाज, भौम जातक, मणित्थ, मनुसंहिता, माण्डव्यजातक, वामन, वीरजातक, शुकजातक शौनक, श्रुतकीर्ति, समुद्रजातक, सिद्धसेन, सूर्यजातक, सोमजातक आदि ग्रन्थ व उक्त ग्रन्थकारों की रचनाओं का अभाव ही दृष्टिगोचर होता है।

इनमें से कुछ ग्रन्थ तो सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन में उपस्थित हैं। अन्यों की जानकारी मुझ से साधारण मनुष्य को नहीं है।

दूसरे भाग में भी कश्यपजातक, चन्द्राभरणजातक, जन्मसरणिः, ज्ञानमुक्तावली, देवशालजातक, त्रैलोक्यप्रकाश, मरीचिजातक, यवनेश्वर, योगजातक, राजविजय आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

इस भाग में समागत अध्यायों की विशेष बातें या यों समझिये कि अन्य ग्रन्थों से विशेष फल एवं चमत्कृत योगों का सारांश निम्न प्रकार से है।

**छठा अध्याय**—इसमें नाभस योगों के अतिरिक्त सर्प, किंकर, कुस्यादि शयनी, जाङ्गलादि, नगर व होलादि, चतुश्चक्र व ध्वजोत्तमादि, गृद्ध पुच्छादि, सुख, दरिद्र, रोगोत्पत्ति, कुष्ठ, अङ्गच्छेद, पक्षाघात, व्रण दोष, मुख दुर्गन्ध तथा व्यापारिक फल विक्रय, वस्त्रविक्रय, अन्नविक्रय, पशुमणिविक्रय, कारुक, ऊर्णादिकर्म, शस्त्रवीणाकाष्ठादि-कर्म, चर्मबालकर्म-वस्त्ररञ्जन-घटकर्म-चित्रादिक-वाद्यवादन-भैषज्यप्रसूतकादि कर्म तथा भिक्षुक योगों का वर्णन है।

**सातवें अध्याय में**—बारह भावों के फल का विवेचन है। इसमें विशेषता यह है कि बारह भावों में ग्रहों को १२ प्रकार की स्थिति वश अर्थात् उच्च नीचादि में ग्रह के रहने पर जो फल होता है, उसका विचार कश्यप मुनि के वचनों से उपलब्ध है।

**आठवें अध्याय में**—प्रथम १२ राशियों में चन्द्र का तथा चन्द्रमा से बारह भावों में ग्रहों का फल वर्णित है। पुनः सुनफादि योग व उनके फल-सूर्य से केन्द्रादि में चन्द्र-फल-वेशिवाशि-उभयचरी योग-प्रव्रज्या विचार सफल अष्टकवर्ग-सर्वतोभद्रचक्र-सूर्यकाला-नल व चन्द्रकालानलचक्र का फल के साथ विवेचन है।

**नवें अध्याय में**—पिण्डादि आयु चिन्ता-दशारिष्ट विचार-विशेषता के साथ ग्रहों की दशा का फल तथा महादशाफल एवं ग्रहों की प्राणान्त दशा का फल—लग्नादि १२ भावों में २, ३, ४, ५, ६, ७ ग्रहों की युति का फल उपलब्ध है।

**दसवें अध्याय में**—स्त्री जन्माऽङ्ग के शुभाशुभ योग-त्रिंशांशवश फल—सातवें भाव में स्वर्क्ष-स्वांश में स्थित सूर्यादि ग्रहों का फल—विविध जातकोक्त योगों का, सफल डिम्भचक्र-लग्नस्थ राशि फल, नक्षत्र फल, १२ भावों में सूर्यादि ग्रहों के फल और स्त्री कुण्डली में राजयोगों का वर्णन किया गया है।

मेरी दृष्टि में यह ग्रन्थ अत्युत्तम प्रतीत होता है। क्योंकि इसमें अनेक बातें ऐसी हैं जो कि अन्य ग्रन्थों में नहीं है विशेष क्या लिखूं। विज्ञ फलित ज्योतिष विद्यानुरागी इसको स्वयं ही जान सकते हैं।

मेरे इस कार्य में श्रद्धेय मनीषी पर्वतीय पं० जनार्दनजी शास्त्री ने समय-समय पर सहायता की है अतः मैं आपका चिरकृतज्ञ हूँ।

अन्त में फलित विद्या प्रेमियों से निवेदन है कि मेरे इस काम में जो भी त्रुटियाँ हों उन्हें समझ कर मुझे सूचित करने की कृपा करें।

विदुषामनुचरः

मथुरावास्तव्य श्रीमद्भागवताभिनवशुक

सं० २०३७ का० शु० ११ भौमवार

पं० केशवदेव चतुर्वेदात्मज

मुरलीधर चतुर्वेदः

सं० सं० वि० वि० अध्यापक ज्यो० वि०

# विषय सूची

| विषय | पृष्ठांक |
|---|---|

विषय — पृष्ठांक

—:꙳:—

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

# अथ षष्ठोऽध्यायः

## नाभसयोगानाह

### नाभस योगों का कथन

[1]यवनाद्यैर्विस्तरतः कथिता योगास्तु नाभसा नाम्ना ।
अष्टादशशतगुणितास्तेषां द्वात्रिंशदिह वक्ष्ये ॥ १ ॥

यवनादि आचार्यों ने १८०० योगों का वर्णन नाभस नाम से विस्तारपूर्वक किया है। उन १८०० में से मैं ३२ नाभस योगों को कहता हूँ ॥ १ ॥

आश्रययोगानाह सत्याचार्यः—

अब आश्रय योगों का वर्णन सत्याचार्यजी के वाक्य से कहते हैं।

### रज्जु, नल, मुशल योगज्ञान

[2]चरराशिगैरशेषै रज्जुः स्थिरगस्तथा मुशलम् ।
द्विशरीरगतैर्योगो नलसंज्ञो मुनिभिरुद्दिष्टः ॥ २ ॥
एतद्योगत्रितयं चाश्रयसंज्ञं च विज्ञेयम् ।

अत्र चरादिराशिचतुष्के सर्वग्रहाऽवस्थित्या योगाः भवन्तीति कैश्चिदुक्तं तदसत् । यतो गर्गेण स्पष्टमुक्तम्—

[3]एको द्वौ वा त्रयः सर्वे सर्वैर्युक्ता यदा ग्रहैः ।
चरयोगस्तदा रज्जुर्दुःखिजन्मप्रदो भवेत् ॥ ३ ॥
स्थिराश्चेन्मुसलं नाम ज्ञानिनां कृतकर्मणाम् ।
द्विस्वभावा नलाख्यस्तु धनिनां परिकीर्त्तितः ॥ ४ ॥

आश्रमयोगेषु विशेषमाह वराहः—

[4]आश्रयोक्तास्तु विफला भवत्यन्यैर्विमिश्रिताः ।
मिश्रास्तु तत्फलं दद्युरमिश्रा ह्यफलप्रदाः ॥ ५ ॥

यदि कुण्डली में समस्त ग्रह एक चर राशि में या दो या तीन या चारों चर राशियों में हों तो रज्जु नामक योग, इसी प्रकार १ या २ या ३ या ४ राशि में समस्त ग्रह हों तो मुशल और सब ग्रह एक या दो या तीन या चारों द्विस्वभाव राशि में हों तो नल नामक योग होता है ॥ २ ॥

---

१. सारा० २१ अ० १ श्लो० ।
२. बृ० जा० १२ अ० २ श्लो० भट्टो० ।
३. बृ० जा० १२ अ० २ श्लो० भट्टो० ।
४. बृ० जा० १२ अ० १२ श्लो० ।

यहाँ रज्जुमुशलादि योग कहने में किसी का पक्ष है कि चारों चर या स्थिर या द्विस्वभाव राशियों में समस्त ग्रह हों तो रज्जु, मुशल व नलयोग होते हैं। किन्तु यह मत ठीक नहीं है। क्योंकि आचार्य गर्ग ने स्पष्टतापूर्वक कहा है कि यदि एक या दो या तीन या चारों चर राशियों में सब ग्रह हों तो रज्जु नामक योग होता है। इसमें जन्म लेने वाला प्रायः दुःखी होता है ॥ ३ ॥

यदि स्थिर एक या दो या तीन या चारों राशियों में ग्रह हों तो मुशल नाम का योग होता है। इसमें जातक ज्ञानी और यज्ञकर्ता होता है।

इसी प्रकार द्विस्वभाव राशि या राशियों में ग्रह हों तो नल योग होता है। इस योग में पैदा होने वाला धनो होता है ॥ ४ ॥

बृ० पा० में कहा है—'सर्वैश्चरे स्थितै रज्जुः स्थिरस्थैर्मुसलः स्मृतः। नलाख्यो द्विस्वभावस्थैराश्रयाख्या इमे स्मृताः' ॥ २-४ ॥

**विशेष**—समस्त चर व स्थिर तथा द्विस्वभाव राशियों में सब ग्रहों के रहने पर रज्जु मुशलादि योग का वर्णन सत्याचार्य ने किया है।

यथा—'सर्वे चरेषु राशिषु यदा स्थिता योगमाह तं रज्जुम्। अनयप्रियस्य सततं विदेशवासार्थयुक्तस्य। सर्वे स्थिरेषु राशिषु यदा स्थिता मुशलमाह तं योगम्। जन्मनि कर्मकराणां युक्तानामार्थमानाभ्याम्। द्विशरीरेषु नल इति योगो हीनातिरिक्तदेहानाम्। निपुणानां पुरुषाणां धनसञ्चयभोगिनां भवति' ( बृ० १२ अ० २ श्लोक भट्टोत्पली ) ॥ ४ ॥

अब आश्रय योगों के विषय में वराहमिहिर ने जो विशेष बात बतलाई है उसी को आगे कहते हैं।

यदि आश्रय योग की प्राप्ति में यवावि योग की भी प्राप्ति हो तो आश्रय योग मिश्रित होने से फल रहित होता है। अर्थात् आश्रय योग का फल नहीं होता है। इसी प्रकार अन्य किसी योग से मिश्रित आश्रय योग कुण्डली में हो तो निष्फल होता है। तथा जिससे मिश्रित होता है उसी योग का फल जातक प्राप्त करता है।

**निष्कर्ष**— स्वतन्त्र आश्रय योग ही फल देने में समर्थ होता है ॥ ५ ॥

दलयोगद्वयमाह पराशरः—

अब आगे पराशर के वाक्य से दो दल योगों को बताते हैं।

**सर्प व माला योगज्ञान**

[1]केन्द्रत्रयगतैः पापैः सौम्यैर्वा दलसंज्ञितैः।
द्वौ योगौ सर्पमालाख्यावनिष्टेष्टफलप्रदौ ॥ ६ ॥

१. बृ० पा० ३६ अ० ८ श्लो०।

अत्र दलयोगे चन्द्रः क्रूरेषु सौम्येषु च न ग्राह्यः। यदाह गर्गः—

[1]त्रिकेन्द्रगैर्यमाराकैंः सर्पो दुःखी तदुद्भवः।
भोगिजन्मप्रदा माला तद्वज्जीवसितेन्दुजैः ॥ ७ ॥

अत्र मिश्रग्रहैः केन्द्रस्थैर्योगो भवतीत्याह बादरायणः—

[2]केन्द्रेषु पापेषु सितज्ञजीवैः केन्द्रत्रयस्थैः कथयन्ति मालाम्।
सर्पस्तु सौम्येषु यमारसूर्यैर्योगाविमौ द्वौ कथितौ दलाख्यौ ॥ ८ ॥

इति।

यदि जन्म के समय में तीन केन्द्रों में पापग्रह हों तो सर्प और तीन केन्द्रों में शुभ ग्रह हों तो माला नाम का योग होता है। ये दोनों दल योग शुभाशुभ फल अर्थात् माला शुभ व सर्प अशुभ फल प्रदान करता है ॥ ६ ॥

यहाँ दल योग में चन्द्रमा की गणना शुभ पाप में नहीं होती है जैसा कि गर्गाचार्य ने कहा है कि तीन शुभ केन्द्रों में व शनि, भौम व सूर्य हों तो सर्पयोग होता है इसमें उत्पन्न होने वाला जातक दुःखी होता है ॥ ७ ॥

यहाँ दल योग के कहने में बादरायण जी का मत है कि ये दोनों योग मिश्र ग्रहों से अर्थात् शुभ व पाप दोनों से होते हैं, अब उसी को कहते हैं।

यदि जन्म के समय में तीन केन्द्रों में पापग्रह व शुक्र, गुरू, बुध हों तो माला तथा तीनों केन्द्रों में शुभ व शनि, भौम व सूर्य हों तो सर्प नामक योग होता है। इन दोनों की दल संज्ञा होती है ॥ ८ ॥

**विशेष**—यहाँ पर ६ श्लोक पराशर का है ऐसा ग्रन्थकार ने कहा है किन्तु बृ० पा० में—'केन्द्रत्रयगतैः सौम्यैः पापैर्वादलसंज्ञकौ। क्रमान्मालाभुजङ्गाख्यौ शुभाशुभफलप्रदौ' इस प्रकार से पद्य उपलब्ध है।

यह छटा श्लोक बृ० जा० १२ अ० २ श्लोक की भट्टोत्पली में मणित्थ के नाम से प्राप्त होता है।

८वें श्लोक का भी पाठान्तर भट्टोत्पली में—'केन्द्रेष्वपापेषु सितः' 'सर्पस्त्वसौम्यैश्च यमार' इस प्रकार से उपलब्ध होता है। मेरी दृष्टि में भी यही पाठान्तर उचित प्रतीत होता है ॥ ६-८ ॥

अथाकृतियोगाः। ज्ञानमुक्तावल्याम्—

ज्ञान मुक्तावली के वाक्यों से अब आगे आकृति योगों को बतलाते हैं।

**गदायोग का ज्ञान**

लग्नाम्बुगैरम्बुनगास्थितैर्वा सप्ताम्बरैरम्बरलग्नसंस्थैः।
एवं चतुर्धा कथितो गदाख्यः शुभाशुभैः खेचरकैस्तु सर्वैः ॥ ९ ॥

---

१. बृ० जा० १२ अ० २ श्लो० भट्टो०। २. बृ० जा० १२ अ० २ श्लो० भट्टो०।

यदि जन्म के समय में लग्न व चौथे में या चतुर्थ व सप्तम में या सप्तम व दशम में अथवा दशम तथा लग्न में समस्त शुभाशुभ ग्रह हों तो चार स्थिति में गदा योग होता है ॥ ९ ॥

**शकट, विहङ्ग व शृङ्गाटक योगज्ञान**

लग्नास्तगैस्तु शकटं विहङ्गः सुखकर्मगैः ।
लग्नपञ्चमनन्दस्थैः खगैः शृङ्गाटकं स्मृतम् ॥ १० ॥

यदि जन्म के समय में समस्त ग्रह लग्न व सप्तम भाव में हों तो शकट, यदि चौथे व दशम भाव में सब ग्रह हों तो विहङ्ग योग और लग्न पञ्चम तथा नवम में सम्पूर्ण ग्रह हों तो शृङ्गाटक नाम का योग होता है ॥ १० ॥

**हलयोग ज्ञान**

द्वितीयषष्ठकर्मस्थैस्त्रिसप्तायगतैः खगैः ।
बन्धुनैधनरिष्फस्थैस्त्रिधा तु हलसंज्ञकः ॥ ११ ॥

यदि जन्म के समय में दूसरे, छटे, दशवें भाव में या तीसरे, ग्यारहवें, सातवें भाव में अथवा चौथे आठवें व बारहवें भाव में समस्त ग्रह हों तो तीन प्रकार से हल योग होता है ॥ ११ ॥

**वज्र व यवयोग ज्ञान**

विलग्नास्ते शुभाः सर्वे खबन्धौ पापखेचराः ।
वज्रं नाम विजानीयात्तद्व्यस्तैर्यवसंज्ञकः ॥ १२ ॥

यदि जन्म के समय में लग्न व सप्तम में सब शुभग्रह और चौथे व दशवें में समस्त पापग्रह हों तो वज्र नामक योग होता है। इसके विपरीत में अर्थात् लग्न व सप्तम में सब पापग्रह एवं चतुर्थ व दशम में समस्त शुभग्रह हों तो यव नाम का योग होता है ॥ १२ ॥

वज्रादि योगेषु दूषणमाह वराहः—

अब आगे वज्रादि योगों में जो दोषारोपण वराहमिहिरजी ने किया है उसे बताते हैं।

**वज्रादि योग में दोष का निरूपण**

[1]पूर्वशास्त्रानुसारेण मया वज्रादयः कृताः ।
चतुर्थभवने सूर्याज्ज्ञसितौ भवतः कथम् ॥ १३ ॥

अत्र वराहमिहिरेण सूर्याद्बुधशुक्रयोश्चतुर्थगत्वासंभवः स्वदेशाभिप्रायेणोक्तः। यतो द्वादशाङ्गुलाधिकपलभादेशे रवेश्चतुर्थे बुधशुक्रयोः संभवो भवति। अत्र धूलीकर्मणार्थज्ञानमात्मनो दूरो करोत्यायुष्मान्। उक्तञ्च चिन्तामणौ वराहमिहिराचार्यैः 'सूर्यपुत्राक्षमे युतः। तत्संभवोस्त्यतः स्वीयदेशाभिप्रायतः स्मृतमिति।

१. बृ० जा० १२ अ० ६ श्लो०।

आचार्य वराहमिहिर का कथन है कि ये वज्रादि योग मय यवनाचार्यादि जी के कहने से मैंने भी इन योगों को कहा है। इन योगों के होने में प्रत्यक्ष यह दोष है कि परम शीघ्राङ्क व मन्दाङ्कों का योग आपस में सूर्य से इतना बड़ा अन्तर नहीं होता है। इसलिये सूर्य व बुध शुक्र में ४ राशि का अन्तर न होने से योग की सम्भावना ही नहीं होती है ॥ १३ ॥

यहाँ ग्रन्थकार का कहना है कि वराहमिहिर ने चौथी राशि में सूर्य से शुक्र बुध की सत्ता का खण्डन अपने देश के अभिप्राय से किया है। क्योंकि १२ अंगुल से अधिक पलभादेश में सूर्य से चतुर्थ राशि में बुध शुक्र की सम्भावना होती है।

ज्ञानमुक्तावल्याम्—

अब ज्ञान मुक्तावली में कथित अन्य योगों को कहते हैं।

**कमल व वापीयोग ज्ञान**

मिश्राः पापाः शुभाः सर्वे चतुः केन्द्रेऽथ पद्मकम्।
तैरेवापोक्लिमस्थैर्वा पणफरेऽपि च वापिका ॥ १४ ॥

यदि कुण्डली में चारों केन्द्रों में समस्त शुभ व पापग्रह मिश्रित होकर स्थित हों तो कमल योग होता है। यदि सब शुभ व पापग्रह पणफर तथा आपोक्लिम में हों तो वापी नाम का योग होता है ॥ १४ ॥

**यूप, शर, शक्ति व दण्डयोग ज्ञान**

एकद्वित्रिचतुर्थस्थैः सर्वखेटैस्तु यूपकम्।
तुर्यादिसप्तमान्तस्थैरेवं बाणः प्रजायते ॥ १५ ॥
सप्ताष्टनन्दकर्मस्थैः खगैः शक्तिरिति स्मृतः।
दशादिलग्नपर्यन्तैः सर्वैर्दण्डाभिधानकः ॥ १६ ॥

यदि कुण्डली में एक, दो, तीन और चौथे भाव में सब ग्रह हों तो यूपयोग और चार, पाँच, छै और सातवें भाव में सकल ग्रह हों तो शर नाम का योग होता है ॥ १५ ॥

यदि कुण्डली में सप्तम, अष्टम, नवम एवं दशम भाव में समस्त ग्रह हों तो शक्ति और दशम, एकादश, द्वादश तथा लग्न में समस्त ग्रह हों तो दण्ड योग होता है ॥ १६ ॥

**नौ, कूट, छत्र, चापयोग ज्ञान**

लग्नादिसप्तमान्तस्थैः सर्वखेटैस्तु नौरिति।
तुर्यादिदशमान्तस्थैः कूट इत्यभिधीयते ॥ १७ ॥
सप्तमादिविलग्नान्तैः छत्रः सकलखेचरैः।
एवं दशादितुर्यान्तैश्चाप इत्युच्यते बुधैः ॥ १८ ॥

यदि कुण्डली में लग्न से सप्तम पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक करके समस्त ग्रह हों तो नौ योग अर्थात् नौका योग और चतुर्थ से दशम भाव पर्यन्त समस्त ग्रह सब भावों में हों तो कूट नाम का योग होता है ।। १७ ।।

यदि कुण्डली में सप्तम भाव से लग्न पर्यन्त समस्त ग्रह हों तो छत्रयोग और दशम भाव से चतुर्थ भाव तक समस्त ग्रह हों तो चाप नाम का योग होता है ।।१८।।

**अर्धचन्द्र, चक्र व समुद्र योग ज्ञान**

परस्परद्वयादष्टौ तृतीयान्नवमान्तिकम् ।
पञ्चमैकादशः षष्ठाद्द्वादशं त्वष्टधा शशी ।। १९ ।।
लग्नत्रिपञ्चसप्तर्क्षनवमैकादशे स्थितैः ।
सर्वैश्चक्रं द्वितीयादावेवं योगः समुद्रकः ।। २० ।।
इत्याकृतियोगाः ।

यदि कुण्डली में द्वितीय भाव से अष्टम भाव तक प्रत्येक भावों में सब ग्रह हों तो अर्धचन्द्र नामक योग होता है । यह योग आठ प्रकार से होता है । १—द्वितीय से अष्टम, २—तृतीय से नवम, ३—पञ्चम से एकादश, ४—षष्ठ से द्वादश तक, ५—आठ से द्वितीय तक, ६—नवम से तृतीय तक, ७—एकादश से पञ्चम भाव तक और बारहवें भाव से छटे भाव तक प्रत्येक भाव में सब ग्रह हों तो अर्धचन्द्र नामक योग होता है ।। १९ ।।

यदि कुण्डली में लग्न, तृतीय, पञ्चम, सप्तम, नवम और एकादश भाव में सब ग्रह हों तो चक्र नाम का योग होता है ।

यदि कुण्डली में २, ४, ६, ८, १०, १२ इन भावों में समस्त ग्रह हों तो समुद्र नाम का योग होता है ।। २० ।।

इस प्रकार आकृति योग ज्ञान समाप्त हुआ ।

**अथ संख्यायोगानाह वराहः—**

अब आगे वराहमिहिरोक्त संख्या योगों का वर्णन करते हैं ।

**संख्या योग ज्ञान**

[1]संख्यायोगाः सप्तसप्तर्क्षसंस्थैरेकोपायाद्वल्लकीदामपाशाः ।
केदारः स्याच्छूलयोगो युगञ्च गोलश्चान्यान् पूर्वमुक्तान् विहाय ।।२१।।

पूर्वोक्तानन्यान् विहाय संख्या योगाः स्युस्तदा फलप्रदाः स्युः । अन्य योगसंभवे संख्या योगाः सर्वे कार्यां इत्यर्थः ।

संख्या योग सात प्रकार का होता है । यदि कुण्डली में सात स्थानों में सात ग्रह हों तो वल्लकी नामक योग होता है । यदि ६ स्थानों में सात ग्रह हों तो दामिनी योग, पाँच स्थानों में सात ग्रह हों तो पाश योग, ४ स्थानों में सात ग्रह हों तो केदार

---

१. बृ० जा० १२ अ० १० श्लो० ।

योग, ३ स्थानों में सात ग्रह हों तो शूल योग, २ स्थानों में सात ग्रह हों तो युग योग और सातों ग्रह एक स्थान में हों तो गोल योग होता है।

यदि पूर्वोक्त आश्रय योगादि का कुण्डली में अभाव हो तो जातक संख्या योग का फल प्राप्त करता है, अन्यथा आश्रय व संख्या योग दोनों की प्राप्ति कुण्डली में हो तो आश्रय योग का ही फल जातक को प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

## अथैतेषां फलानि क्रमेण सारावल्याम्[१]—

अब आगे पूर्वोक्त योगों के फल को सारावली के वाक्यों से कहते हैं।

### पूर्वोक्त योगों का फल

अटनप्रियाः सुरूपाः परदेशस्वास्थ्यभागिनो मनुजाः।
क्रूराः खलस्वभावा रज्जुप्रभवाः सदा कथिताः ॥ २२ ॥
मानज्ञानयुताः कुस्त्रीयुक्ता नृपप्रियाः ख्याताः।
बहुपुत्राः स्थिरचित्ताः मुसलसमुत्थिता भवन्ति नराः ॥ २३ ॥

न्यूनातिरिक्तदेहा धनसञ्चयभागिनोऽतिनिपुणाश्च।
बन्धुहिताश्च सुरूपा नलयोगे संप्रसूयन्ते ॥ २४ ॥

नित्यं सुखप्रधाना वाहनवस्त्रान्नभोगसंपन्नाः।
कान्ताः सुबहुस्त्रीका मालायां संप्रसूताः स्युः ॥ २५ ॥
विषमाः क्रूरा निस्वा नित्यं दुःखार्दिताः सुदीनाश्च।
परपक्षपातनिरताः सर्पप्रभवा भवन्ति नराः ॥ २६ ॥

सततोद्युक्तास्तवशा यज्वानः शास्त्रगेयकुशलाश्च।
धनकनकरत्नसंपत्संप्रयुक्ता मानवा गदायान्तु ॥ २७ ॥
रोगार्ताः कुनखा मूर्खाः शकटानुजीविनो निःस्वाः।
मित्रस्वजनविहीना शकटे जाता भवन्ति नराः ॥ १८ ॥

भ्रमणरुचयो विकृष्टा दूताः सुरतानुजीविनो धृष्टाः।
कलहप्रियाश्च नित्यं विहगे योगे सदा जाताः ॥ २९ ॥

प्रियकलहाः समरसहाः सुखिनो नृपतेः प्रियाः शुभकलत्राः।
आढ्या युवतिद्वेष्या शृङ्गाटकसंभवा मनुजाः ॥ ३० ॥

बह्वाशनो दरिद्राः कृपीबला दुःखिताश्च सोद्वेगाः।
बन्धुसुहृद्भिस्त्यक्ताः प्रेष्या हलसंज्ञके सदा पुरुषाः ॥ ३१ ॥

आद्यन्तवयः सुखिनः शूराः सुभगा निरीहाश्च।
भाग्यविहीना वज्रे मध्ये जाता खला विरुद्धाश्च ॥ ३२ ॥

---

१. ये श्लोक २१ अध्याय में तथा बृ० पा० में ३५ अ० १८-५० श्लो०।

व्रतनियममङ्गलपरा वयसो मध्ये सुखार्थपुत्रयुताः।
दातारः स्थिरचित्ता यवयोगभवाः सदा पुरुषाः ॥ ३३ ॥
स्फीतविभवाः पुण्याढ्याः स्थिरायुषो विपुलकीर्तयः शुद्धाः।
शुभशतकाः पृथ्वीशाः कमलभवा मानवा नित्यम् ॥ ३४ ॥
निधिकरणे निपुणधियः स्थिरार्थसुखसंयुताः सुतप्राश्च।
नयनसुखसंप्रहृष्टा वापी योगे नरा जाताः ॥ ३५ ॥
आत्मविदिज्यानिरतस्त्रयायुतः सत्त्वसंपन्नः।
व्रतनियममन्त्रनिरतो यूपे जातो विशिष्टश्च ॥ ३६ ॥
इषुकरणदस्युबन्धनमृगयाधनसेवितोऽपि मांसादाः।
हिंस्राः कुशिल्पकराः शरयोगे संप्रसूयन्ते ॥ ३७ ॥
धनरहितविकलदुःखितनीचालसाश्चिरायुषः पुरुषाः।
संग्रामबुद्धिनिपुणाः शक्त्यां जाताः स्थिराः सुभगाः ॥ ३८ ॥
हतपुत्रदारनिस्वाः सर्वत्र निर्घृणाः स्वजनबाह्याः।
दुःखितनीचाः प्रेष्या दण्डप्रभवा भवन्ति नराः ॥ ३९ ॥
सलिलोपजीविविभवा बह्वाशा ख्यातकीर्तयो दुष्टाः।
कृपणा मलिनो लुब्धाः नौसंजाता खलाः पुरुषाः ॥ ४० ॥
आनृतिककितवबंधनपापा निष्किञ्चनाः शठाः क्रूराः।
कूटसमुत्था नित्यं भवन्ति गिरिदुर्गवासिनो मनुजाः ॥ ४१ ॥
स्वजनाश्रयो दयावान् नानानृपवल्लभः प्रकृष्टगतिः।
प्रथमेऽन्त्ये वयसि नरः सुखवान् दीर्घायुरातपत्रे स्यात् ॥ ४२ ॥
आनृतिकगुप्तपालाश्चौराः कितवाश्च कानने निरताः।
कार्मुकयोगे जाता भाग्यविहीना वयो मध्ये ॥ ४३ ॥
सुभगाः सेनापतयः कान्तशरीरा नृपप्रिया बलिनः।
मणिकनकभूषणयुता भवन्ति योगे चार्धचन्द्राख्ये ॥ ४४ ॥
प्रणताशेषनराधिपः किरीटरत्नप्रभास्फुरितपादः।
भवति नरेन्द्रो मनुजश्चक्रे यो जायते योगे ॥ ४५ ॥
बहुरत्नधनसमृद्धा भोगैर्युक्ता जनप्रियाः सुसुताः।
उदधिसमुत्थाः पुरुषाः स्थिरविभवाः साधुशीलाश्च ॥ ४६ ॥
प्रियगीतनृत्यवाद्यनिपुणाः सुखिनश्च धनवन्तः।
नेतारो बहुभृत्या वीणायां कीर्त्तिताः पुरुषाः ॥ ४७ ॥
दामिन्यामुपकारी न पशुधनयुक्तो महेश्वरः ख्यातः।
बहुसुतरत्नसमृद्धो धीरो जायेत विद्वांश्च ॥ ४८ ॥

पाशे बन्धनभाजः कार्ये दक्षाः प्रपञ्चकाराश्च ।
बहुभाषिणो विशीला बहुभृत्याः संप्रसूताश्च ॥ ४९ ॥
सुबहूनामुपयोज्याः कृषीवलाः सत्यवादिनः सुखिनः ।
केदारे संभूताश्चलस्वभावा धनैर्युक्ताः ॥ ५० ॥
तीक्ष्णालसधनहीना हिंस्राः सुबहिष्कृता महाशूराः ।
संग्रामे लब्धशब्दाः शूले योगे भवन्ति नराः ॥ ५१ ॥
पाखण्डभागिनो वा धनरहिता वा बहिष्कृता लोके ।
सुतमातृधर्मरहिता युगयोगे मानवा जाताः ॥ ५२ ॥
बलसंयुक्ता विधना विद्याविज्ञानवर्जिता मलिनाः ।
नित्यं दुःखितदीना गोले योगे भवन्ति नराः ॥ ५३ ॥
एते च योगाः सर्वास्वपि दशासु फलदायिनः ।
सकलग्रहारब्धः स्यादित्याह गुणाकरः ॥ ५४ ॥
[1]सर्वास्वपि दशास्वेते भवेयुः फलदायिनः ।
प्राणिनामिति सत्याद्याः प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ ५५ ॥

अब नाभस योगों में उत्पन्न होने वाले जातक के फल को या यों समझिये ३२ योगों के फल को अलग-अलग बताते हैं।

### रज्जु योग का फल

यदि कुण्डली में रज्जु योग हो तो जातक घूमने का प्रेमी, स्वरूपवान्, परदेश में स्वास्थ्य लाभ करने वाला; क्रूर और दुष्ट प्रकृति का होता है ॥ २२ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में—'परदेशेष्वर्थभागिनो' यह पाठान्तर है ॥ २२ ॥

### मुशल योग का फल

यदि कुण्डली में मुशल योग हो तो जातक सम्मानित, ज्ञानी, दूषित स्त्री से युक्त, राजा का प्रेमी, प्रसिद्ध; अधिक पुत्र वाला और स्थिर चित्त होता है ॥ २३ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में—'मानधनज्ञानयुता कर्मोद्युक्ता' 'स्थिरचित्ता मुसलोत्था भवन्ति शूराः सदा पुरुषाः' तथा बृहत्पाराशर में—'मानज्ञाधनाद्यैर्युक्ता' यह पाठान्तर उपलब्ध है ॥ २३ ॥

### नल योग का फल

यदि कुण्डली में नलयोग हो तो जातक न्यून व अधिक देहधारी, धन का संग्रही, अत्यन्त चतुर, बान्धवों का शुभी और स्वरूपवान् होता है ॥ २४ ॥

### माला योग का फल

यदि कुण्डली में माला योग हो तो जातक प्रतिदिन प्रधान सुखी, वाहन (सवारी) वस्त्र, अन्न व भोग से समृद्ध, प्रिय और अधिक स्त्री वाला होता है ॥ २५ ॥

---

१. होरामकरन्द १५ अ० २५ श्लो०। 'फलदायका' यह पाठान्तर है।

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'वाहनवस्त्रार्थं भोग' यह पाठान्तर प्राप्त है। २१ अ० ४१ श्लो० ॥ २५ ॥

### सर्प योग का फल

यदि कुण्डली में सर्प योग हो तो जातक विपरीत, क्रूर, निर्धन, नित्य दुःख से पीड़ित, दीन और दूसरे के भोजन व पानी में आसक्त होता है ॥ २६ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'परभुक्ताः पानरताः सर्पे जाता भवन्ति नराः' 'यह पाठान्तर प्राप्त है। २१ अ० ४२ श्लो० ॥ २६ ॥

### गदा योग का फल

यदि कुण्डली में गदा योग हो तो जातक निरन्तर उद्योगी, धन के वशीभूत, यज्ञ-कर्ता, शास्त्रीय गान में चतुर और धन, सुवर्ण, रत्नरूपी संपत्ति से युक्त होता है ॥२७॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'सततं मानार्थपरा' यह पाठान्तर है २१ अ० ३२ श्लो० ॥ २७ ॥

### शकट योग का फल

यदि कुण्डली शकट योग हो तो जातक रोग से दुःखी, कुत्सित नाखूनधारी, मूर्ख, गाड़ी से जीविका करने वाला, निर्धन और मित्र व अपने मनुष्यों से हीन होता है ॥२८॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'रोगार्त्ताः कुकलत्राः' यह पाठान्तर प्राप्त है २१ अ० ३० श्लो० ॥ २८ ॥

### विहग योग का फल

यदि जन्म के समय में, विहग योग हो तो जातक घूमने की इच्छा करने वाला, अच्छा दूत, सुरति ( व्यभिचार ) से जीविका करने वाला, ढीठ और प्रतिदिन कलह का प्रेमी होता है ॥ २९ ॥

### शृङ्गाटक योग का फल

यदि कुण्डली में शृङ्गाटक योग हो तो जातक कलह का प्रेमी, युद्ध को सहन करने वाला, सुखी, राजा का प्रिय, शुभ स्त्री वाला, धनी और स्त्रियों का शत्रु होता है॥३०॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'प्रियकलहसमरसाहससुखिनो' 'सुभगकान्ताः' यह पाठान्तर प्राप्त है। २१ अ० ३३ श्लो० ॥ ३० ॥

### हल योग का फल

यदि कुण्डली में हल योग हो तो जातक अधिक खाने वाला, दरिद्री, खेती करने वाला, दुःखी, उद्वेगी, बान्धव व मित्रों से त्यक्त और सेवक होता है ॥ ३१ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में बह्वाशिनो' 'बन्धुसुहृत्संत्यक्ताः' यह पाठान्तर है ॥ ३१ ॥

### वज्र योग का फल

यदि कुण्डली में वज्र योग हो तो जातक आदि व अन्त अवस्था में सुखी, वीर, सुभग, निरीह, भाग्यहीन, दुष्ट और विपरीत होता है ॥ ३२ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'वज्रे जाताः स्वजनैर्विरुद्धाश्च' यह पाठान्तर है। ( २१ अ० २६ श्लो० ) ॥ ३२ ॥

**यव योग का फल**

यदि कुण्डली में यव योग हो तो जातक व्रती, नियमी, उत्सव प्रेमी, अवस्था के बीच में सुख, धन और पुत्र से युक्त, दानी और सदा स्थिर चित्त होता है ॥ ३३ ॥

**कमल योग का फल**

यदि कुण्डली में कमल योग हो तो जातक विशाल वैभववाला, पुण्यात्मा, दीर्घायु, बड़ा कीर्तिमान्, पवित्र और शुभी राजा होता है ॥ ३४ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'स्फीतयशसोगुणाढ्या' 'शुभयशसः' यह पाठान्तर प्राप्त है। ( २१ अ० २८ श्लो० ) ॥ ३४ ॥

**वापी योग का फल**

यदि कुण्डली में वापीयोग हो तो जातक सम्पत्ति एकत्रित करने में चतुर बुद्धिवाला, स्थिर धन व सुख से युक्त, पीडित और नेत्रसुख से प्रसन्न होता है ॥ ३५ ॥

**यूप योग का फल**

यदि कुण्डली में यूपयोग हो तो जातक आत्मज्ञानी, पूँजा में आसक्त, स्त्री से अयुक्त, बल से युक्त, व्रती, नियमी, मन्त्र में अनुरक्त और विशिष्ट होता है ॥ ३६ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'आत्मनि रक्षानिरतस्त्यागयुते वित्तसौख्यसंपन्नः व्रतनियमसत्यनिरतो' यह पाठान्तर प्राप्त है। ( २१ अ० २७ श्लो० ) ॥ ३६ ॥

**शरयोग का फल**

यदि कुण्डली में शरयोग हो तो जातक धनुष बनाने वाला, चोर, बन्धन भोगी, शिकारी, धन से युक्त होने पर भी मांस खाने वाला, हिंसक और दूषित शिल्पी होता है ॥ ३७ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'मृगयावनसेवनेति सोन्मादः' यह पाठान्तर प्राप्त है ॥ ३७ ॥

**शक्ति योग का फल**

यदि कुण्डली में शक्तियोग हो तो जातक निर्धन, अशान्त, दुःखी, नीच, आलसी, दीर्घायु और लड़ाई की बुद्धि में चतुर होता है ॥ ३८ ॥

**दण्डयोग का फल**

यदि कुण्डली में दण्डयोग हो तो जातक नष्ट पुत्र स्त्री वाला, निर्धन, सर्वत्र घृणा से हीन, अपने मनुष्यों से बहिर्भूत, दुःखी, नीच और सेवक होता है ॥ ३९ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'सर्वजनैर्न्यक्कृताः' यह पाठान्तर प्राप्त है ॥ ३९ ॥

**नौका योग का फल**

यदि कुण्डली में नौका योग हो तो जातक जल से जीविका पैदा करके ऐश्वर्यवान्, अधिक खाने वाला, प्रसिद्ध कीर्तिमान्, दुष्ट, लोभी, दूषित, लालची और नीच होता है ॥ ४० ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'बह्वायाख्यातकीर्तयो हृष्टाः। कृपणा बलिनो' 'संभूताश्चलाः पुरुषाः' यह पाठान्तर प्राप्त है। ( २१ अ० २१ श्लो० ) ॥ ४० ॥

**कूट योग का फल**

यदि कुण्डली में कूट योग हो तो जातक असत्यभाषी, कपटी, बन्धनभागी, पापी, निष्किञ्चन, धूर्त, क्रूर, पर्वत व किले का निवासी होता है ॥ ४१

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'बन्धनपाला' यह पाठान्तर प्राप्त है ॥ ४१ ॥

**छत्र योग का फल**

यदि कुण्डली में छत्रयोग हो तो जातक अपने जनों का आश्रयी, दयालु, अनेक राजाओं का प्रेमी, अच्छा बुद्धिमान्, प्रथम तथा अन्त अवस्था में सुखी और दीर्घायु होता है ॥ ४२ ॥

**कार्मुक योग का फल**

यदि कुण्डली में कार्मुक योग हो तो जातक असत्यभाषी, गोपनीयता का रक्षक, चोर, कपटी, वन में आसक्त और मध्य अवस्था में भाग्यहीन होता है ॥ ४३ ॥

**अर्धचन्द्र योग का फल**

यदि कुण्डली में अर्धचन्द्र योग हो तो जातक अच्छा भाग्यवान्, सेनाध्यक्ष, सुन्दर शरीरधारी, राजा का प्रिय, बली, मणि-सुवर्ण और अलङ्कारों से युक्त होता है ॥४४॥

**चक्र योग का फल**

यदि कुण्डली में चक्र योग हो तो जातक नम्र समस्त राजाओं के मुकुट की प्रभा के समान शोभित पैर वाला राजा होता है ॥४५॥

**समुद्र योग का गल**

यदि कुण्डली में समुद्र योग हो तो जातक अधिक रत्न व धन से संपन्न भोगी, जनप्रिय, सुन्दर पुत्र वाला, स्थिर ऐश्वर्यवान् और सज्जन स्वभावी होता है ॥४६॥

**वीणा योग का फल**

यदि कुण्डली में वीणा योग हो तो जातक गाने व नाचने का प्रेमी, वादन (बजाने) में चतुर, सुखी, धनी, नेता और अधिक नौकर वाला होता है ॥४७॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'मित्रान्विता सुवचसः शास्त्रपराः' 'सुखभाजो' यह पाठान्तर ( २१ अ० ५२ श्लो० ) प्राप्त है ॥४७॥

**दामिनी योग का फल**

यदि कुण्डलो में दामिनो योग हो तो जातक उपकारी, पशु व धन से अयुक्त, बड़ा समर्थवान्, प्रसिद्ध, अधिक पुत्र धन से संपन्न, धैर्यवान् और पंडित होता है ॥४८॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'पशुगणयुक्तो धनेश्वरो मूढः' यह पाठान्तर है ( २१ अ० ५१ श्लो० ) ॥४८॥

### पाश योग का फल

यदि कुण्डली में पाश योग हो तो जातक जेल भोगी, कार्य में चतुर, प्रपञ्ची अधिक बोलने वाला, शीलता से हीन और अधिक नौकरों से युक्त होता है ॥४९॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'भाजः कार्योद्युक्ता' यह पाठान्तर (२१ अ० ५० श्लो०) प्राप्त है ॥४९॥

### केदार योग का फल

यदि कुण्डली में केदार योग हो तो जातक अधिक जनों का उपयोगी, किसान, सत्यभाषी, सुखी, अस्थिर प्रकृति और धन से युक्त होता है ॥५०॥

### शूल योग का फल

यदि कुण्डली में शूल योग हो तो जातक तीखा, आलसी, धनहीन, हिंसक, बहिष्कृत बड़ा वीर और युद्ध में शब्द प्राप्त करने वाला होता है ॥५१॥

### युग योग का फल

यदि कुण्डली में युग योग हो तो जातक पाखंडी वा निर्धन वा संसार में बहिष्कृत, पुत्र-माता और धर्म से रहित होता है ॥५२॥

### गोल योग का फल

यदि कुण्डली में गोल योग हो तो जातक बली, निर्धन, विद्या व विज्ञान से रहित, दूषित, नित्य दुःखी और दीन होता है ॥५३॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'दारिद्र्यालस्ययुता विद्याज्ञामानवर्जिता' यह पाठान्तर है ( २१ अ० ४६ श्लो० ) ॥५३॥

इन योगों का फल समस्त दशाओं में होता है, ऐसा गुणाकरने होरामकरन्द में कहा है ॥५४॥

ये समस्त नाभस योग समस्त दशाओं में प्राणियों को फल देते हैं, ऐसा सत्याचार्य आदि पंडितों का कथन है ॥५५॥

टिप्पणी - यहाँ पर जो नाभस योगों के फल को बताने वाले पद्यों को दिया गया है वे सारावली के हैं ऐसा भी कहा है किन्तु सारावली में इनके अनुरूप व क्रम से पद्य प्राप्त नहीं होते हैं। बृहत्पाराशर की ३५वीं अध्याय में १०-४९ श्लोक इसी क्रम से प्राप्त हैं ॥५५॥

## अथ यवनजातकोक्ता विशेषयोगाः।

अब आगे यवन जातकोक्त विशेष योगों को कहते हैं।

### सर्प, किङ्कर, कृश्य, श्रुत, विवृद्धि, कर्ण कूर्मादि योग ज्ञान—

पापैः कोणगतैश्च केन्द्रगशुभैः सर्पोऽधकोद्व्यायगैः
सर्वैः किङ्करकोऽष्टसप्त ८।७ निखिलैः कृश्यं सुताब्धेः श्रुतः।
सर्वैः स्वायगतैर्विवृद्धिरनुजा ३।४ बुस्थैः श्रुतिधर्म खे ९।१०
कर्णो रिष्फतनौ च कूर्म इति सोपि द्यूनषष्ठे महान् ॥५६॥

यदि कुण्डली में समस्त पापग्रह त्रिकोण में और केन्द्र में सब शुभग्रह हों तो सर्प, ४।२।११ में किंकर, ७।८ में कृश्य, ४।५ में श्रुत, २।११ में सब ग्रह हों तो विवृद्धि, ३।४ में श्रुति, ९।१० में कर्ण, १२।१ में कूर्म और समस्त ग्रह ६।७ में हों तो महाकूर्म योग होता है ।।५६।।

**उक्त योगों के फल**

सर्पे हिंस्रस्त्वधूर्तः स्याद्बंधनार्तोऽध्वगः सदा ।
किङ्करो परसेवार्थः किङ्करोद्विग्नको भवेत् ।।५७।।
काश्यमृणयुतो नित्यं ग्लानियुक् परसेवकः ।
श्रुते शास्त्रमतिर्दीक्षायुतोऽवश्यं च मित्रयुक् ।।५८।।
विवृद्धौ धनवृद्धिः स्यात्क्षीणार्थश्च क्षणे क्षणे ।
कर्णे कीर्तियुतो भूयो बहुस्त्रीसुतबन्धुयुक् ।।५९।।
कूर्मे कार्येष्वधीरः स्याद् द्वयोर्मध्ये च मध्यमः ।
महाकूर्मे लब्धसिद्धिर्नानास्त्रीभोगवान् सुधीः ।।६०।।

यदि कुण्डली में सर्प योग हो तो जातक हिंसक, अधूर्त अर्थात् धूर्तता से रहित, बन्धन ( जेल ) से पीडित और सदा घूमने वाला होता है ।

यदि किङ्कर योग हो तो जातक दूसरे की सेवा करने वाला और उद्विग्न होता है ।।५६।।

यदि कुण्डली में कृश्य योग हो तो जातक ऋणी, ग्लानि करने वाला और दूसरे का नौकर तथा श्रुत योग में जन्म लेने वाला शास्त्रीय बुद्धि का, दीक्षा और मित्र से युक्त होता है ।।५८।।

यदि कुण्डली में विवृद्धि योग हो तो धन की वृद्धि और क्षण-क्षण में धनव्यय, कर्ण योग में कीतिमान्, अधिक स्त्री-पुत्र बान्धवों से युक्त, कूर्म में कार्य में अधैर्य, यदि दो योग हों तो मध्यम और महाकूर्म योग हो तो जातक सिद्धि प्राप्त करने वाला अधिक स्त्रियों का भोगी और पंडित होता है ।।५९-६०।।

**सफल मुसल योग**

लग्नात्त्रयोऽनन्तरितस्त्रिभेस्युः सर्वे ग्रहास्तन्मुशलं वदन्ति ।
अस्मिन् प्रहारोपहते प्रसूते प्राज्ञैर्विरुद्धं सहजैरधन्यम् ।।६१।।

यदि कुण्डली में लग्न व तृतीय भाव में समस्त ग्रह हों तो मुशल योग होता है । इसमें जिसका जन्म होता है वह प्रहार से भग्न, भाईयों के विरुद्ध और अप्रशंसनीय होता है ।।६१।।

**मुद्गर पाश व अंकुश योग का ज्ञान**

तं मुद्गरं विद्धि जलात्प्रसूते वाग्दुःखशोकश्रमपीडितानाम् ।
पाशाख्यसम्प्रात्तदुपद्रुतानां मेपूरणादंकुशमीश्वराणाम् ।।६२।।

यदि कुण्डली में चतुर्थ व षष्ठ में सब ग्रह हों तो मुद्गर योग होता है। इसमें जातक वाणी से दुःखी, शोक से युक्त और श्रम से पीडित होता है।

यदि कुण्डली में सप्तम व नवम में सब ग्रह हों तो पाश योग और दशम व द्वादश में सब ग्रह हों तो अंकुश योग होता है। इसमें जातक समर्थ होता है ॥६२॥

अथ शयनी।

**सफल शयनी योग ज्ञान**

निरन्तरं पञ्चगृहोपगेषु सर्वेषु योगः शयनी विलग्नात्।
स्ववंशकीर्तिप्रतिलब्धमानो जातो भवेदत्र सुखी च नित्यम् ॥६३॥

यदि कुण्डली में लग्न से लगातार पाँच भावों में सब ग्रह हों तो शयनी योग होता है इसमें जन्म लेने वाला अपने वंश की कीर्ति से सम्मान प्राप्त करने वाला और सदा सुखी होता है ॥६३॥

अथ जाङ्गलनिश्रयणीयोगौ।

**जाङ्गलनिश्रयणी योग ज्ञान**

तद्वच्चतुर्थादपि जाङ्गलाख्यो जन्मप्रदःस्यात्परकिङ्कराणाम्।
अस्ताश्रयान्निश्रयणीतिधूर्तदूतव्यथाऽध्वन्यजनं प्रसूते ॥६४॥

यदि कुण्डली में चतुर्थ भाव से क्रमवार पाँच भावों में सब ग्रह हों तो जांगल योग होता है इसमें जातक दूसरे का नौकर होता है।

यदि सप्तम भाव से लगातार पाँच भावों में समस्त ग्रह हों तो निश्रयणी योग, इसमें जातक धूर्त, दूत व निर्जन मार्ग में व्यथित होता है ॥६४॥

**कुन्त योग ज्ञान**

नभस्थलात्कुन्तमिति प्रचण्डप्रसूतिकृत्सूर्यकृते च पुंसाम्।
चण्डात्प्रवृत्तास्तु रणोत्कटानामन्य प्रवृत्तोऽनलभूतसंज्ञम् ॥६५॥

यदि कुण्डली में दशम से पांच भावों में सब ग्रह हों तथा दशम सूर्य हो तो कुन्त योग होता है। सूर्य से योग प्रारम्भ होने पर जातक युद्ध में उत्कट और अन्य ग्रह से योगारम्भ हो तो जातक अग्नि के समान होता है ॥६५॥

अथ पंक्तियोगः।

**सफल पंक्तियोग ज्ञान**

अनन्तरं षट्सु गृहेष्वधिष्ठिताः सर्वे यदा तं प्रवदन्ति पंक्तिम्।
लग्नात्प्रवृत्तोऽत्र नृपं प्रसूते केन्द्रात्प्रवृत्तो नृपमन्त्रिमुख्यम् ॥ ६६ ॥

यदि कुण्डली में क्रम से ६ स्थानों में सब ग्रह हों तो पंक्ति योग होता है। यदि लग्न से ६ स्थानों में सब ग्रह हों तो जातक राजा और चतुर्थ या सप्तम या दशम भाव से योगारम्भ हो तो जातक राजा का मुख्य सचिव होता है ॥ ६६ ॥

### अथ नगर योगः।

#### नगर योग का ज्ञान

सर्वे चतुर्लग्नगता यदि स्युरन्योन्यसंपर्कगता ग्रहेन्द्राः।
योगं तमाहुर्नगरं नृपाणां जन्मप्रदं दम्भकलिप्रियाणाम् ॥ ६७ ॥

यदि कुण्डली में क्रम बार चार स्थानों में परस्पर सम्बन्धित समस्त ग्रह हों तो नगर नाम का योग होता है। इसमें दम्भी या पाखण्डी और कलह का स्नेही जातक राजा होता है ॥ ६७ ॥

### अथ पंक्तिपर्वतौ।

अब आगे पंक्ति योग के फल व सफल पर्वत योग को बताते हैं।

#### सफल पंक्ति योग

विहाय केन्द्रानितरः प्रवृत्तैः स्यात् पंक्तियोगैर्नृचतुष्पदाढ्यः।
यथाभिलाषं फलमुक्तमस्मिन् विद्यात्फलोपायमलक्ष्यरूपम् ॥ ६८ ॥

यदि कुण्डली में केन्द्र स्थानों को छोड़कर पंक्तियोग का प्रारम्भ हुआ हो तो जातक पशुओं से युत, इच्छित फल पाने वाला, विद्या को उपाय से फलवती करने वाला और लक्षित रूप से रहित होता है ॥६८॥

#### सफल पर्वत योग ज्ञान

लग्नास्तमेपूरणगाः प्रशस्ताः सर्वे ग्रहेन्द्रा इह चेदपापाः।
तं पर्वतं विद्धि बलाधिकानां महीपतीनां प्रसवाय योगे ॥६९॥

यदि कुण्डली में लग्न, सप्तम व दशम में समस्त शुभ ग्रह हों और पाप ग्रहों का अभाव हो तो पर्वत योग होता है। इसमें जातक बड़ा बली और राजा होता है ॥६९॥

**विशेष**—बृहत्पाराशर में इस योग का वर्णन निम्न रीति से है। यथा 'सप्तमे चाष्टमे शुद्धे शुभग्रहयुतेऽथवा। केन्द्रेषु शुभयुक्तेषु योगः पर्वतसंज्ञकः। भाग्यवान् पर्वतोत्पन्नः वाग्मी दाता च शास्त्रवित्। हास्यप्रियो यशस्वी च तेजस्वी पुरनायकः (३६ अ० ७८ श्लो०) ॥६९॥

### अथ कलश योगः।

#### कलश योग का ज्ञान

तत्राम्बरस्थेषु विपर्ययेण योगो यदा तं कलशं वदन्ति।
प्रभूतधान्याकरसंचयानां तमाहुरुद्भूतिकरं सताञ्च ॥७०॥

यदि जन्म के समय में लग्न, सप्तम, दशम में शुभग्रहों से हीन पापग्रह हो तो कलश योग होता है। इसमें अधिक धान्य के खजाने का संग्रही और सज्जनों को उद्भूति करने वाला जातक होता है ॥७०॥

अथ दोलायोगः ।

**सफल दोला योग का ज्ञान**

चतुर्थषट्पंचतृतीयसंस्थैश्चतुर्भिरन्यैस्त्रिचतुष्टस्थैः ।
योगः स दोलेति सुखान्वितानामुत्पत्तिकृत् स्यादटनोत्सुकानाम् ॥७१॥

यदि कुण्डली में तीसरे, चौथे, पाँचवें, छटे स्थान में चार ग्रह व अन्य ग्रह अवशिष्ट तीन केन्द्रों में हों तो दोला योग होता है। इस में जातक घूमने की उत्कण्ठा करने वाला और सुखी होता है ॥ ७१ ॥

अथ वेदीयोगः ।

**सफल वेदी योग का ज्ञान**

सव्यापसव्ये भवने विलग्नादस्ताच्च वर्गामधिकृत्य सर्वे ।
कुर्वन्ति वेदीं परिकिङ्कराणां जन्मातुरप्रव्रजितादिकानाम् ॥७२॥

यदि कुण्डली में लग्न व सप्तम भाव से वाम दक्षिण भावों में समस्त शुभग्रह हों तो वेदी योग होता है। इसमें जातक दूसरों का नौकर और आतुर संन्यासी होता है ॥७२॥

अथ श्रेष्ठयोगः ।

**सफल श्रेष्ठ योग का ज्ञान**

यामित्रषष्ठाष्टमगा यदि स्युः सौम्या विलग्नादितरेष्वनिष्टाः ।
श्रेष्ठाधियोगो भवतीह राजा विमुक्तशस्त्रश्रमरोगदुःखः ॥७३॥

यदि कुण्डली में छटे, सातवें व आठवें भाव में लग्न से शुभग्रह हों और अन्य भावों में पापग्रह हों तो श्रेष्ठ योग होता है। इसमें जातक शस्त्र, श्रम, रोग व दुःख से रहित होता है ॥७३॥

**आश्रय योग फल कथन में विशेष**

योगा इमे आश्रयजा निरुक्ता लग्नेन्दुभाभ्यां यवनैः पुराणैः ।
तेषु प्रसूताः सुखिनः स्वभाग्यैः समृद्धिभाजः पुरुषा भवन्ति ॥७४॥

प्राचीन यवनाचार्य जी ने इन आश्रय योगों का लग्न से व चन्द्रमा से वर्णन किया है। इन योगों में जन्म लेने वाला जातक सुखी और अपने भाग्य से संपन्न होता है ॥७४॥

वृद्धयवनः—

अब आगे वृद्ध यवनोक्त नाभस योगों को कहते हैं।

**सफल वज्रयोग ज्ञान**

कलत्रलग्नोपगतैश्च सौम्यैः पापैर्नभः सौख्यगतैश्च सर्वैः ।
वज्राख्ययोगोऽत्र भवेन्मनुष्यो महीपतिः शत्रुकुलान्तकारी ॥७५॥

यदि कुण्डली में सप्तम व लग्न में समस्त शुभग्रह और दशम व चतुर्थ में सब पापग्रह हों तो वज्र योग होता है। इसमें जातक शत्रु कुल का नाशक राजा होता है ॥७५॥

**फल के साथ पिपीलिका योग का ज्ञान**

व्ययारिगैः सर्वखगैश्च सौम्यैः पापैस्तथा धर्मतृतीयसंस्थैः।
पिपीलिकाख्यः प्रभवेच्च योगो जातः श्रिया सौख्यविहीनितश्च ॥७६॥

यदि कुण्डली में बारहवें व छटे भाव में सब शुभग्रह और नवें व तीसरे में सब पापग्रह हों तो पिपीलिका योग होता है। इसमें जातक लक्ष्मी व धन से हीन होता है ॥७६॥

**फल के साथ गर्त योग ज्ञान**

व्ययारिगैः पापखगैश्च सर्वैर्दुश्चिक्यधर्मानुगतैश्च सौम्यैः।
गर्ताभिधानः प्रभवेच्च योगो जातोऽत्र निःस्वो परतर्ककश्च ॥७७॥

यदि कुण्डली में बारहवें व छटे भाव में सब पापग्रह और नवम व तृतीय में समस्त शुभग्रह हों तो गर्त योग होता है। इसमें जातक निर्धन तथा दूसरे की चिन्ता करने वाला होता है ॥७७॥

**फल के साथ नदी योग का ज्ञान**

लाभात्मजस्थैः सकलैश्च सौम्यैः पापैस्तथा मृत्युधनाश्रयस्थैः।
नदीति योगः प्रवरः प्रदिष्टो जातोऽत्र मर्त्यः सुभगः क्षितीशः ॥७८॥

यदि कुण्डली में ग्यारहवें व पाँचवें भाव में समस्त शुभग्रह और दूसरे व अष्टम-भाव में सकल पापग्रह हों तो नदी योग होता है। इसमें जातक सुन्दर नक्षत्र में गमन करने वाला राजा होता है ॥७८॥

**फल के साथ नद योग का ज्ञान**

सुतायगैः पापखगैः समस्तैः षष्ठाष्टमस्थैः शुभसंज्ञितैश्च।
योगो नदाख्यः प्रभवेन्मनुष्यो जातोऽत्र धीमान् सुतसौख्ययुक्तः ॥७९॥

यदि कुण्डली में पञ्चम व लाभ में समस्त पापग्रह और छटे आठवें भाव में समस्त शुभग्रह हों तो नद योग होता है। इसमें जातक बुद्धिमान् और पुत्र सुख से युक्त होता है ॥७९॥

इति नाभसयोगाः।

अथापरेऽपि योगाः सोमजातके —

अब आगे सोमजातकोक्त अन्य योगों को बताते हैं।

**सिंहासन योग का ज्ञान**

एषः सिंहासनो योगः कन्यालौ वृषके झषे।
चापे नरे हरौ कुम्भे ग्रहैश्चैव परो गतः ॥८०॥

यदि कुण्डली में कन्या, वृश्चिक, वृष, मीन, धनु, सिंह और कुम्भ राशि में समस्त ग्रह हों तो सिंहासन योग होता है ॥८०॥

**सिंहासन योग का फल**

दन्तीतुरङ्गयुक्तो नौकावेष्टी गुणी कान्तः ।
नृपसचिवो भवति नृपो योगे सिंहासने जातः ॥८१॥

यदि कुण्डली में सिंहासन योग हो तो जातक हाथी घोड़ाओं से युक्त, नाव में बैठने वाला, गुणी, प्रिय, राजा का मन्त्री या राजा होता है ॥८१॥

इति सिंहासनयोग ।

**चतुश्चक्रयोग ज्ञान**

हरौ स्त्रियामलौ वापि घटे मीने वृषे नरे ।
ग्रहैर्लग्ने च योगोऽयं चतुश्चक्रो विधीयते ॥८२॥

यदि कुण्डली में सिंह, कन्या, वृश्चिक में अथवा कुम्भ मीन वृष राशि में समस्त ग्रह हों तो चतुश्चक्र योग होता है ॥८२॥

**चतुश्चक्र योग का फल**

चक्रवर्ती महावीर्यः सर्वज्ञः सर्वजीवनः ।
आज्ञामयो महातेजो पराक्रमी नृपो भवेत् ॥ ८३ ॥

यदि कुण्डली में चतुश्चक्र योग हो तो जातक बड़ा बली, सर्वज्ञ, सबों का जीवन, आज्ञा का रूप, बड़ा तेजस्वी, पराक्रमी और चक्रवर्ती राजा होता है ॥ ८३ ॥

इति चतुश्चक्रयोगः ।

**कनकदण्डयोग का ज्ञान**

मीने मेपे वृषे चैव तुलायाञ्च स्थिते ग्रहे ।
योगः कनकदण्डाख्यो देवासुरसुदुर्लभः ॥ ८४ ॥

यदि कुण्डली में मीन, मेष, वृष और तुला राशि में सब ग्रह हों तो कनक दण्डयोग होता है । यह योग देवता व राक्षसों को दुर्लभ होता है ॥ ८४ ॥

इति कनकदण्डयोगः ।

**डमरुक योग का ज्ञान**

वृषे च मिथुने चापे कीटे डमरुको मतः ।
अपरो युवतीसिंहे घटे मीने उदाहृतः ॥ ८५ ॥

यदि कुण्डली में वृष मिथुन, धनु, वृश्चिक राशि में या कन्या सिंह कुम्भ मीन राशि में समस्त ग्रह हों तो डमरुक योग होता है ॥ ८५ ॥

**डमरुक योग का फल**

जाते डमरुके योगे विद्याविख्यातकीर्तिमान् ।
परोपकारी दाता च नारीहृदयवल्लभः ॥ ८६ ॥

यदि कुण्डली में डमरुक योग हो तो जातक विद्वान्, प्रसिद्ध, कीर्तिमान्, परोपकारी, दानी और स्त्री के हृदय का प्रेमी होता है ॥ ८६ ॥

इति डमरुकयोगः ।

**ध्वजोत्तम योग का ज्ञान**

मेषे वृषे झषे वापि स्थितः स्थाने ग्रहो यदि ।
दोलाछत्रप्रदो योगो राजयोगध्वजोत्तमः ॥ ८७ ॥

यदि कुण्डली में मेष, वृष, मीन में या अपनी राशि में ग्रह हों तो दोला व छत्रप्रद ध्वजोत्तम नाम का राजयोग होता है ॥ ८७ ॥

**ध्वज योग का फल**

यो जातो ध्वजयोगे स भवति नीचोऽपि दोलया युक्तः ।
अन्यो भवति हि सचिवो नृपजो भवति नृपो न संदेहः ॥८८॥

यदि कुण्डली में ध्वज योग हो तो जातक नीच भी पालकी से युक्त, मन्त्री और राजवंश में जन्म होने पर निःसंदेह राजा होता है ॥ ८८ ॥

इति ध्वजयोगः ।

**एकावली योग का ज्ञान**

एकैकग्रहयोगेन भवेदेकावली शुभा ।
लग्नं विना शुभैर्वापि समता कस्यचिन्मते ॥ ८९ ॥

यदि कुण्डली में एक-एक ग्रह क्रमवार लग्न व शुभग्रह को छोड़कर अन्य भाव से प्रारम्भ हों तो एकावली योग होता है। किसी के मत में लग्न से व शुभ से भी योग का प्रारम्भ होता है ॥ ८९ ॥

**एकावली योग का फल**

दाता भोक्ता प्रचुरयुवतीनां निधीनां निधान-
मेकावल्यां भवति सचिवः सर्वराज्यं पृथिव्याम् ।

यदि कुण्डली में एकावली योग हो तो जातक दानी, भोगी, अधिक स्त्रियों का व कोष (खजाने) का स्वामी और भूमि में मन्त्री होकर शासक होता है।

इत्येकावलीयोगः ।

**राजहंस योग ज्ञान**

घटे मेषे नरे चापे तुलायां सिंहगे ग्रहे ।
राजहंसो भवेद्योगो राज्यस्य ससुखप्रदः ॥ ९० ॥

यदि कुण्डली में कुम्भ, मेष, धनु, तुला, सिंह में ग्रह हों तो राजहंस योग होता है। यह योग सुखप्रद राज्य को देता है ॥ ९० ॥

इति राजहंसयोगः ।

**सफल चतुः सागर योग का ज्ञान**

तुलामकरमेषेषु कर्कटे वा स्थिते ग्रहे ।
चतुः सागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो मतः ॥ ९१ ॥

नैकवाणिज्यकुशलः शास्त्रज्ञः स्नानतत्परः।
भूपतिर्नृपतुल्यो वा चतुः सागरयोगजः॥ ९२॥

यदि कुण्डली में तुला, मकर, मेष में या कर्क में ग्रह हों तो धन व राज्य को देने वाला चतुः सागर योग होता है॥ ९१॥

यदि कुण्डली में चतुः सागर योग हो तो जातक एक व्यापार में अचतुर, शास्त्र का ज्ञाता, स्नान में आसक्त, राजा या राजा के समान होता है॥ ९२॥

### अथ गृद्ध्रपुच्छ योग ज्ञान

मृगे कीटे भवेत्पुच्छः कन्यालौ वृषभे झषे।
गृद्ध्रपुच्छो भवेद्योगः चतुःसागरतः शुभः॥ ९३॥
इति गृद्ध्रपुच्छयोगः।

यदि कुण्डली में मकर या कीट, कन्या या वृश्चिक या वृष या मीन में केतु हो तो गृद्ध्रपुच्छ योग होता है। यह चारो ओर समुद्र से वेष्टित भूमि में शुभफल देने वाला होता है॥ ९३॥

### चिन्हपुच्छ योग का ज्ञान

मृगे कर्किणि सिंहे च चापे वा मिथुने घटे।
योगानामुत्तमो योगो चिह्नपुच्छो महाबलः॥ ९४॥
इति चिह्नपुच्छयोगः।

यदि कुण्डली में मकर, कर्क, सिंह, धनु या मिथुन या कुम्भ राशि में केतु हो तो योगों में उत्तम चिह्नपुच्छ नामक योग होता है इसमें जातक अधिक बली होता है॥ ९४॥

अथ विशेषयोगाः। तत्रादौ धनिकयोगाः।

आगे अब विशेष योगों को कहने के तारतम्य में प्रथम धनिक योगों को कहते हैं।

### धनिक योग ज्ञान

धनस्थाने सुरगुरुरुच्चवर्ती विशेषतः।
स्वकीयभवने वा हि धनाढयो मनुजोत्तमः॥ १॥
धनसौख्यगतः सौम्यौ धनस्वामी च लाभगः।
धनाढयो विपुलो लोके द्रव्यगर्वितमानवः॥ २॥
धननाथे गते लाभे लाभस्वामी धनस्थितः।
तत्रैव शुभखेटाश्च गतास्ते धनधान्यदाः॥ ३॥
धनस्वामी धने भावे लग्ननाथो हि लाभगः।
लाभस्वामी धनगतो द्रव्याढ्यः कुलदीपकः॥ ४॥
यदि स्वोच्चगतः सौम्यः द्रव्यभावगतं तमः।
लग्नाधीशो हि लग्नस्थो धनवान् मानगर्वितः॥ ५॥

शुक्रजीवबुधाश्चैव सवीर्या दृश्यमूर्तयः।
लग्ननाथो हि बलवान् जायते धनवान् पुमान् ॥ ६ ॥
बुधशुक्रौ हि लग्नस्थौ धनस्थाने गुरुस्थितः।
धनवान् मानवो लोके विविधस्वर्णराशिभाक् ॥ ७ ॥
सौम्यभार्गवजीवानां यद्येकोऽपि च द्रव्यगः।
लग्नाधीशो हि सबलो द्रव्यनाथो भवेन्नरः ॥ ८ ॥
व्ययलग्नधनस्थाने जीवशुक्रबुधा ग्रहाः।
स्थिताश्च सबलाश्चैव विविधस्वर्णराशिभाक् ॥ ९ ॥
धनस्थानगताः सौम्याः सवीर्या दृश्यमूर्तयः।
लग्नलाभधनानां हि स्वामिनो यदि हेमभाक् ॥ १० ॥
द्रव्यभावं धनस्वामी द्रव्यभावं च लाभपः।
तनुस्वामी तनुं चैव पश्यन्ति धनभाग्भवेत् ॥ ११ ॥
धननाथो यदा धर्मे दशमे लग्नगे सुखे।
विक्रूरे सबले सौम्यैर्धनवान् धनभाग्भवेत् ॥ १२ ॥
सिंहे धनुषि च नीचे च मेषवृश्चिककर्कटे।
रविणा सहितो भौमो नरं कुर्याद्धनेश्वरम् ॥ १३ ॥
लग्नस्य दक्षिणे चन्द्रो वामे स्यादुष्णदीधितिः।
शुभदृष्टौ धनी जातस्तद्धनैर्धनिनो जनाः ॥ १४ ॥
यत्र कुत्र स्थितो भौमो गुरुयुक्तो भवेद्यदि।
तदा स्याद्विपुला लक्ष्मीः शुभदृष्टौ विशेषतः ॥ १५ ॥
चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मी नैव विमुञ्चति ॥ १६ ॥
कन्यकायां यदा राहुः शुक्रभौमशनैश्चराः।
तस्य जातस्य जायन्ते कुबेरादधिकं धनम् ॥ १७ ॥
स्वक्षेत्रोच्चस्थिते राहौ केन्द्रछिद्रत्रिकोणगैः।
दाता शूरो धनाढ्यश्च क्षपितारिर्धनान्वितः ॥ १८ ॥

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में विशेषकर उच्च राशि में वा अपनी राशि में गुरू हो तो जातक उत्तम धनी होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में दूसरे या चौथे बुध या दूसरे व चौथे भाव में शुभग्रह हो तथा धनेश ग्यारहवें भाव में हो तो जातक संसार में बड़ा धनी और धन से गर्वीला अर्थात् अहङ्कार करने वाला होता है ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में धनेश लाभ में और लाभेश धन स्थान में हो और दोनों शुभग्रहों से युक्त हों तो जातक को धनधान्य देने वाले होते हैं ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में धनेश धन स्थान में, लग्नेश लाभ में और लाभेश धन स्थान में हो तो जातक धन से युक्त कुलदीपक होता है ।। ४ ।।

जन्मपत्री में उच्च राशि में बुध, दूसरे भाव में राहु और लग्नाधीश लग्न में हो तो जातक धनी और सम्मान से गर्वीला होता है ।। ५ ।।

यदि जन्मपत्री में बली शुक्र गुरू व बुध हों एवं अस्त न हों और लग्नेश बलवान् हो तो जातक धनवान् होता है ।। ६ ।।

यदि जन्मपत्री में बुध शुक्र लग्न में और दूसरे भाव में गुरू हो तो जातक संसार में धनी और अनेक सुवर्ण समूह का भागी होता है ।। ७ ।।

यदि जन्मपत्री में बुध शुक्र गुरू में से एक भी धन स्थान में हो और लग्नेश बली हो तो जातक धन स्वामी होता है ।। ८ ।।

यदि जन्मपत्री में बारहवें, लग्न और धन स्थान में गुरू, शुक्र व बुध बलवान् स्थित हों तो जातक अनेक सुवर्ण समूह का भागी होता है ।। ९ ।।

यदि जन्मपत्री में बली शुभग्रह दूसरे भाव में हो और लग्नेश लाभेश व धनेश अस्त न हों तो जातक धनवान् होता है ।। १० ।।

यदि जन्मपत्री में धनभाव, धनेश व लाभेश से और लग्न लग्नेश से दृष्ट हो तो जातक धनिक होता है ।। ११ ।।

यदि जन्मपत्री में धनेश नवम वा दशम वा लग्न वा चौथे भाव में क्रूर ग्रह से रहित हो और शुभग्रह बली हों तो जातक धनी व धनभागी होता है ।। १२ ।।

यदि जन्मपत्री में सिंह या धनु या नीच राशि या मेष या वृश्चिक या कर्क में सूर्य से युक्त भौम हो तो जातक धनिक होता है ।। १३ ।।

यदि जन्मपत्री में लग्न के दक्षिण भाग में चन्द्रमा और वाम भाग में सूर्य हो और ये दोनों शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो जातक धनी व इसके धन से अन्य भी धनी होते हैं ।। १४ ।।

यदि जन्मपत्री में जिस किसी भाव में भौम, गुरू से युक्त तथा शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक बड़ा धनिक होता है ।। १५ ।।

यदि जन्मपत्री में चन्द्रमा से युक्त भौम हो तो उस जातक के घर का लक्ष्मी त्याग नहीं करती हैं अर्थात् धनिक सदा रहता है ।। १६ ।।

यदि जन्मपत्री में कन्या राशि में राहु, शुक्र, भौम व शनि हों तो जातक कुबेर से भी अधिक धनी होता है ।। १७ ।।

यदि जन्मपत्री में अपनी राशि में वा उच्च राशि में राहु केन्द्र वा अष्टम वा त्रिकोण में हो तो जातक दानी, वीर, धनाढ्य, नष्ट शत्रु वाला और धनिक होता है ।। १८ ।।

इति धनिकयोगाः ।

इस प्रकार सुख योगों का वर्णन समाप्त हुआ ।। १-१८ ।।

## अथ सुखयोगाः ।

अब आगे धनिक योगों को बताया जाता है ।

### सुख योग का ज्ञान

चतुर्थे दशमे चैव पश्यतौ हि परस्परम् ।
सौम्यौ हि सबलौ खेटौ मनुजः सुखसंयुतः ॥ १९ ॥
पाताले हि गतः सौम्यः सबलः सौम्यदृग्युतः ।
लग्नभावगते सौम्ये मनुजः सुखभाग्भवेत् ॥ २० ॥
सौख्यस्वामी सौख्यभावे लग्नपेन विलोकिते ।
सुखी भवति लोकेषु पुमान् पण्डितपूजितः ॥ २१ ॥
लग्नसौख्याधिपावुच्चे कर्मगेन विलोकितौ ।
लाभगौ यदि धर्मस्थौ प्राप्नोति मनुजः सुखम् ॥ २२ ॥
बुधशुक्रयुतं सौख्यं लग्नं गुरुयुतं तथा ।
अतुलं मनुजो लोके सौख्यं च लभते सदा ॥ २३ ॥
चन्द्रसौम्यगुरुभार्गवैर्युतं सौख्यभं हि मनुजो दिवानिशम् ।
अव्ययं गुणविवर्जितं परं प्राप्तं वै सुखसमूहमध्यगः ॥ २४ ॥
द्रव्यापत्यकलत्राणां न सुखं नित्यतां गतम् ।
सुखमेव परं ब्रह्म अक्षरं गुणवर्जितम् ॥ २५ ॥
पातालगौ चन्द्रबुधौ धर्मगौ जीवभार्गवौ ।
सुखमेव लभन्ते च योगे वै मनुजोत्तमाः ॥ २६ ॥
सुखभावं धर्मनाथः कर्मनाथो हि धर्मभम् ।
लग्ननाथो यदा सौख्यं पश्यते ते शुभं गताः ॥ २७ ॥
बुधभार्गवजीवानामेकोऽपि सुखगो ग्रहः ।
लग्ने वा सुखगो वापि यदि सौम्यः सुखी नरः ॥ २८ ॥
लग्ननाथो यदा सौख्यं कार्यनाथो विशेषतः ।
पश्यतौ तौ युतौ वापि सुखी भवति मानवः ॥ २९ ॥
चन्द्राध्यासितराशेर्नाथो लग्नाधिपोऽपि वा यस्य ।
केन्द्रे सुरपतिमन्त्री वयमो मध्ये सुखं तस्य ॥ ३० ॥
सौख्यधर्मसुतकर्मगाः शुभाः सौख्यभावमपि लग्नपो यदा ।
ईक्षते सकलसौख्यभागिनो जायते त्रिगुणवर्जितो नरः ॥ ३१ ॥

इति सुखयोगाः ।

यदि जन्मपत्री में बली शुभग्रह चतुर्थ व दशम में पारस्परिक दृष्ट हों तो जातक सुख से युक्त होता है ॥ १९ ॥

यदि जन्मपत्री में चतुर्थ में बली शुभग्रह, शुभग्रह से दृष्ट हो और लग्न में शुभग्रह हो तो जातक सुख भोगी होता है ।। २० ।।

यदि जन्मपत्री में चतुर्थेश चतुर्थ में लग्नेश से दृष्ट हो तो जातक संसार में विद्वानों से पूजित और सुखी होता है ।। २१ ।।

यदि जन्मपत्री में लग्नेश व चतुर्थेश उच्च राशि में लाभ में या नवम भाव में दशमेश से दृष्ट हों तो जातक सुखी होता है ।। २२ ।।

यदि जन्मपत्री में बुध शुक्र चतुर्थ में और गुरू लग्न में हो तो जातक अपार सुख प्राप्त करता है ।। २३ ।।

यदि जन्मपात्रो में चन्द्रमा, बुध, गुरू और शुक्र एकत्रित होकर सुख भाव में हों तो जातक दिन रात व्यय से हीन, अधिक सुख प्राप्त करके गुणों से रहित, धन-पुत्र व स्त्री के सुख से वर्जित और नहीं नष्ट होने वाला सुख ही परम ईश्वर है ऐसा मानने वाला होता है ।। २४-२५ ।।

यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में चन्द्रमा व बुध तथा नवम भाव में गुरू व शुक्र हों तो जातक उत्तम सुखी होता है ।। २६ ।।

यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में नवमेश हो व दशमेश नवम में हो और चौथा भाव लग्नेश से दृष्ट हो तो जातक सुखी होता है ।। २७ ।।

यदि जन्मपत्री में बुध, शुक्र गुरु में से एक भी चौथे भाव में वा लग्न में हों तो जातक सुखी होता है ।। २८ ।।

यदि जन्मपत्री में लग्नेश और विशेष कर दशमेश चतुर्थ भाव को देखते हों वा दोनों युक्त हों तो जातक सुखी होता है ।। २९ ।।

यदि जन्मपत्री में चन्द्रराशीश वा लग्नेश केन्द्र में हो और गुरू भी केन्द्र में हो तो जातक मध्य अवस्था में सुखी होता है ।। ३० ।।

यदि जन्मपत्री में चतुर्थ, नवम, पञ्चम और दशम में शुभ ग्रह हों और लग्नेश भी चतुर्थ को देखता हो तो जातक तीन गुणों से हीन समस्त सुख भागी होता है ।।३१।।

इस प्रकार सुख योगों का वर्णन समाप्त हुआ ।। १९-३१ ।।

## अथ दारिद्र्ययोगाः ।

लग्नाधीशो व्ययस्थो वै सक्रूरो वा विशेषतः ।<br>
निर्बलाऽस्तङ्गताः सौम्या निर्द्रव्यो जायते नरः ।। ३२ ।।<br>
सकलकेन्द्रगताः खलखेचरा रिपुपराक्रमलाभगताः शुभाः ।<br>
सकलवीर्यपराक्रमवर्जिताः सखलयोर्मनुजो खलु निर्धनः ।। ३३ ।।

लग्नाधिनाथोऽथ सुखाधिनाथः कर्माधिनाथोऽथ धनाधिपश्च ।<br>
व्यये रिपौ कालमदे गृहे च गता विवीर्याः खलु निर्धनो जनः ।। ३४ ।।

मदपतिर्यदि शत्रुगतो नरः सकलसौख्यविनाशनसंयुतः ।
तनुपतिर्यदि सूर्यसमायुतस्तनयगोऽथ खलग्रहसंयुतः ॥ ३५ ॥

लग्नाधिपे मृत्युगते विशेषमस्तंगतो कर्मपतिश्च षष्ठः ।
धनाधिपो द्वादशभावसंस्थः स एव जातो धनवर्जितश्च ॥ ३६ ॥

तनुपतिर्मदपश्च रिपुस्थितः सुतगताश्च खला सबलाः खलु ।
गुरुभृगू यदि चास्तमुपागतौ जगति सौख्यविवर्जितमानवः ॥ ३७ ॥

धनाधिपो मृत्युगतोऽत्र संस्थः क्रूरग्रहेणाथ विलोकितश्च ।
लग्नाधिपः षष्ठगतोऽविवीर्यः जातः पृथिव्यां खलु निर्धनश्च ॥ ३८ ॥

लग्नस्वामी हीनवीर्यो द्रव्यनाथोऽस्तगो यदा ।
केन्द्रगाः सबलाः क्रूराः दरिद्रो मानवो भवेत् ॥ ३९ ॥

सक्रूरं धनभं चैव क्रूरेणैव निरीक्षितम् ।
धनपो रविसंयुक्तो दरिद्रोपहतो नरः ॥ ४० ॥

सक्रूरो धनपश्चैव धनभं सौम्यसंयुतम् ।
धनस्वामी चास्तगतो मानवो द्रव्यवर्जितः ॥ ४१ ॥

धनाधिपो यदा षष्ठे मृत्यभेऽप्यथवा व्यये ।
सक्रूरं धनभं चैव निर्धनो खलु मानवः ॥ ४२ ॥

चतुष्टयं शुभरहितं सक्रूरं कुजवर्जितम् ।
दशमं भवति तदा नरो दरिद्रेणैव पीडितः ॥ ४३ ॥

लाभषष्ठविगताः खलु सौम्याः द्रव्यनाथखचरोऽस्तगतश्चेत् ।
अस्तगौ गुरुसितौ तु लग्नपो द्वादशे यदि नरो हि निर्धनः ॥ ४४ ॥

लग्नाधीशो द्रव्यनाथश्च षष्ठे कर्माधीशः संयुतः पापखेटैः ।
सक्रूरं वै द्रव्यभं क्रूरदृष्टं दारिद्रो वै मानवो योगदृष्टे ॥ ४५ ॥

धनभं क्रूरसंयुक्तं क्रूरदृष्टं तथा पुनः ।
धनस्वामी तृतीये वै दरिद्रो नाम जायते ॥ ४६ ॥

पापश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा पापो धने स्थितः ।
दारिद्र्ययोगं जानीयात्स्ववंशस्य क्षयङ्करः ॥ ४७ ॥

रविणा सहितो मन्दः शुक्रेण च युतो भवेत् ।
तदा दारिद्र्ययोगोऽयं सद्रव्यमपि शोषयेत् ॥ ४८ ॥

सिंहे मेषे यदा भानुः सितमन्दयुतो भवेत् ।
गुरुसौम्यशुभालोकी स धनी भवति ध्रुवम् ॥ ४९ ॥

यदि जन्मपत्री में लग्नेश बारहवें स्थान में विशेष कर क्रूर ग्रह से युक्त व निर्बल हो और शुभग्रह अस्त हों तो जातक धन हीन अर्थात् निर्धन होता है ॥ ३२ ॥

## तस्य भङ्गोऽयम्।

यदि जन्मपत्री में समस्त केन्द्रों में पापग्रह और समस्त बल से हीन शुभग्रह छटे, तीसरे ग्यारहवें भाव में पाप युक्त हों तो जातक धन हीन अर्थात् निर्धन होता है ॥ ३३ ॥

यदि जन्मपत्री में लग्नेश, चतुर्थेश, दशमेश व धनेश, बारहवें, छटे, आठवें और सातवें भाव में निर्बली हों तो जातक निर्धन होता है ॥ ३४ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमेश छटे भाव में तथा लग्नेश सूर्य से युक्त हो और पाप ग्रह लग्न में हो तो जातक समस्त सुख से हीन अर्थात् निर्धन होता है ॥ ३५ ॥

यदि जन्मपत्री में लग्नेश अष्टम में वह दशमेश विशेष कर अस्त होकर छटे भाव में और धनेश बारहवें भाव में हो तो जातक निर्धन होता है ॥३६॥

यदि जन्मपत्री में लग्नेश व सप्तमेश छटे भाव में एवं पाँचवें भाव में बली पापग्रह हो और गुरू व शुक्र अस्त हों तो जातक सुख से हीन अर्थात् निर्धन होता है ॥३७॥

यदि जन्मपत्री में धनेश आठवें भाव में क्रूरग्रह से दृष्ट हो तथा निर्बल लग्नेश हो तो जातक निर्धन होता है ॥३८॥

यदि जन्मपत्री में निर्बल लग्नेश हो और धनेश सप्तम में तथा केन्द्र में बली पापग्रह हों तो जातक दरिद्री होता है ॥३९॥

यदि जन्मपत्री में धनभाव में पापग्रह, पापग्रह से ही दृष्ट हो और धनेश सूर्य से युक्त हो तो जातक दरिद्री ( निर्धन ) होता है ॥४०॥

यदि जन्मपत्री में धनेश क्रूरग्रह से युक्त हो और द्वितीय भाव शुभ ग्रह से युक्त तथा धनेश सप्तम में हो तो जातक धन से हीन होता है ॥४१॥

यदि जन्मपत्री में धनेश छटे भाव में वा आठवें वा बारहवें भाव में हो तथा द्वितीय भाव में क्रूरग्रह हों तो जातक निर्धन होता है ॥४२॥

यदि जन्मपत्री में केन्द्र में शुभग्रहों का अभाव हो तथा दशम भाव में भौमवर्जित पापग्रह हो तो जातक दरिद्रता से पीडित अर्थात् निर्धन होता है ॥४३॥

यदि जन्मपत्री में ग्यारहवें, छटे भाव में शुभग्रह हों और धनेश सप्तम में हो तथा गुरु शुक्र भी अस्त हों व लग्नेश बारहवें भाव में हो तो जातक निर्धन होता है ॥४४॥

यदि जन्मपत्री में लग्नेश व धनेश छटे भाव में व दशमेश पापग्रह से युक्त हो और दूसरे भाव में पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता है ॥४५॥

यदि जन्मपत्री में द्वितीय भाव, क्रूरग्रह से युक्त व दृष्ट हो और धनेश तीसरे भाव में हो तो जातक दरिद्री होता है ॥४६॥

यदि जन्मपत्री में पापग्रह चारों केन्द्रों में व धन स्थान में हों तो जात वंश को नष्ट करने वाला निर्धन होता है ॥४७॥

यदि जन्मपत्री में सूर्य शुक्र शनि एक राशि में हों तो जातक दरिद्री होता है तथा पूर्व धन का भी शोषण करता है ॥४८॥

अब इस अन्तिम वाले योग का परिहार बताते हैं। यदि जन्मपत्री में सिंह या मेष राशि में सूर्य, शुक्र, शनि की युति गुरु व बुध से दृष्ट हो तो जातक निश्चय ही धनी होता है ॥४९॥

इस प्रकार दरिद्रयोगों का वर्णन समाप्त हुआ ॥३२-४९॥

## अथ रोगोत्पत्तियोगाः ।

अब आगे रोग कारक विविध योगों को बतलाते हैं।

### रोग कारक योग का ज्ञान

तनुभं चन्द्रसंयुक्तं चन्द्रोऽपि क्षीणतां गतः ।
रोगातुरो नरश्चैव कथितो गणकोत्तमैः ॥ ५० ॥
लग्नाधिपो मृत्युभावे मृत्युपो यदि लग्नगः ।
लग्नभं क्रूरसंयुक्तं क्रूरदृष्टं स रोगिणः ॥ ५१ ॥
लग्ननाथो रिपुगतो लग्नभं चन्द्रसंयुतम् ।
क्रूरग्रहेण संदृष्टं नरो रोगी विशेषतः ॥ ५२ ॥
लग्नाधीशे ह्यष्टमस्थे क्रूराश्चैव तु पञ्चमे ।
लग्ननाथः क्रूरयुतो रोगवान् पुरुषः किल ॥ ५३ ॥
अस्तङ्गतौ गुरुसितौ लग्ननाथो विशेषतः ।
षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो रोगाढ्यः पुरुषः सदा ॥ ५४ ॥
दिनपतिर्यदि लग्नमुपागतः शशधरः किल षष्ठगतस्तदा ।
तनुपतिर्यदि पञ्चमभावगः खलयुतो बहुरोगनिपीडितः ॥ ५५ ॥
अरिपतिस्तनुपोऽथ परस्परं सकलदृष्टिभिरेव विलोकितः ।
बहुविधां लभते रिपुजां व्यथां विविधरोगनिपीडितसर्वदा ॥ ५६ ॥
तनुगताः शशिभास्करपंगवो विविधरोगकराश्च भवन्ति हि ।
प्रबलवातविशोषशिरोव्यथां खलु तदा लभते भुवि मानवः ॥५७ ॥
वातरोगी विलग्नस्थे गुरौ द्यूनगते शनौ ।
सोन्मादो लग्नगे जीवे द्यूनस्थे भूसुते भवेत् ॥ ५८ ॥
अन्योन्यक्षेत्रगौ स्यातामथवा तत्र चन्द्रगौ ।
चन्द्रार्कौ चेत्तदा जातः क्षयरोगी भवेन्नरः ॥ ५९ ॥
पापयोर्मध्यगे चन्द्रे रवौ मकरराशिगे ।
श्वासगुल्मक्षयप्लीहैराधिव्याधिप्रपीडितः ॥ ६० ॥
वित्ते चन्द्रः स्निग्धदृशा शनिभे लाभकृद्भवेत् ।
भूमिभावे यदि शनिस्तदा दद्रूः प्रजायते ॥ ६१ ॥

षष्ठाधिपो गुरुः शुक्रः क्रूरग्रहनिरीक्षितः।
लग्नसंस्थो मुखे शोफं प्रकरोति न संशयः॥ ६२॥
क्रूरयुक्ते क्रूरदृष्टे चन्द्रे खर्जूः प्रजायते।
द्वादशस्थो यदा जीवो गुप्तरोगी तदा भवेत्॥ ६३॥
शनिभौमौ रिष्फसंस्थौ षष्ठस्थौ वा तदा व्रणी।
जन्मकाले यदा यस्य स्मरे भवति भास्करः॥ ६४॥
राहुदृष्टः प्रकुरुते मूत्रकृच्छ्रादिकं रुजम्।
व्ययविलग्नधनेषु गताः खला गुरुनिशाकरभार्गवनन्दनाः।
रिपुमदाष्टग्रहेषु गतास्तदा विविधरोगयुतो मनुजो भवेत्॥ ६५॥
तनुपतिर्यदि नीचपदानुगो रिपुसुताष्टमगोऽथ निशाकरः।
विकलतां तनुतां लभते जनो यदि कुजेन विलोकितवाक्पतिः॥ ६६॥
जननलग्नपतिः शशिसंयुतो रिपुपतिर्यदि लाभगतो बली।
तनुगतोऽष्टमभावपतिर्नरो विकलतां लभते तु विकारजाम्॥ ६७॥
अष्टमे च यदा सौरिर्जन्मस्थाने च चन्द्रमाः।
मन्दाग्न्युदररोगी च गात्रहीनश्च जायते॥ ६८॥
भार्गवेण युतश्चन्द्रो यदि षष्ठाष्टमे भवेत्।
क्रूरदृष्टस्तदा बालो मन्दाग्निर्हीनगात्रकः॥ ६९॥

यदि कुण्डली में लग्न चन्द्रमा से युक्त हो और चन्द्रमा भी क्षीणकाय हो तो जातक रोग से पीडित होता है, ऐसा उत्तमज्योतिषी कहते हैं॥ ५०॥

यदि कुण्डली में लग्नेश अष्टम में और अष्टमेश लग्न में हो व लग्न में पापग्रह, पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक रोगी होता है॥ ५१॥

यदि कुण्डली में लग्नेश छटे भाव में और लग्नस्थ चन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक विशेष रोगी होता है॥ ५२॥

यदि कुण्डली में लग्नेश अष्टमभाव में और क्रूरग्रह पञ्चम भाव में एवं लग्नेश क्रूर-ग्रह के साथ हो तो जातक रोगी होता है॥ ५३॥

यदि कुण्डली में गुरू व शुक्र अस्त हों और विशेष कर लग्नेश अस्त हो एवं छटे या आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक रोगी है॥ ५४॥

यदि कुण्डली में सूर्य लग्न में व चन्द्रमा छटे भाव में, लग्नेश पञ्चम में पापग्रह से युक्त हो तो जातक अधिक रोग से पीडित होता है॥ ५५॥

यदि कुण्डली में षष्ठेश व लग्नेश आपस में पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध रखते हों तो जातक शत्रु जनित व्यथा से युक्त और अनेक रोगों का रोगी होता है॥ ५६॥

यदि कुण्डली में लग्न में चन्द्रमा, सूर्य व राहु हों तो जातक अनेक प्रकार वायु, सूखा, मस्तक पीड़ा आदि का रोगी होता है॥ ५७॥

यदि कुण्डली में लग्न में गुरू और सप्तम में शनि हो तो जातक वायु का रोगी होता है।

यदि लग्न में गुरु और सप्तम में भौम हों तो जातक पागल होता है ॥ ५८ ॥

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा की राशि में व चन्द्रमा, सूर्य की राशि में अथवा चन्द्रमा की राशि में सूर्य चन्द्रमा हों तो जातक टो० बी० का रोगी होता है ॥ ५९ ॥

यदि कुण्डली में दो पापग्रहों के बीच में चन्द्रमा हो और मकर राशि में सूर्य हो तो जातक श्वास, कब्ज व हृदय के बायीं ओर मांस पिण्ड विशेष का रोगी होता है ॥ ६० ॥

यदि कुण्डली में शनि की राशि में द्वितीय भाव में शुद्ध चन्द्रमा हो और चतुर्थ भाव में शनि हो तो जातक दाद का रोगी होता है ॥ ६१ ॥

यदि कुण्डली में षष्ठेश गुरु हो और लग्नस्थ शुक्र पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक मुख में सूजन का रोगी होता है, इस में संदेह नहीं है ॥ ६२ ॥

यदि कुण्डली में चन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट व युक्त हो तो जातक खुजली का रोगी होता है। यदि गुरू बारहवें भाव में हो तो जातक गुप्त रोगी होता है ॥ ६३ ॥

यदि कुण्डली में शनि व भौम बारहवें भाव में या छटे भाव में हो तो फोड़ा फुन्सी का रोगी होता है। यदि कुण्डली में सप्तम भाव में शनि, राहु से दृष्ट हो तो जातक मूत्र कृच्छ्र का रोगी होता है ॥६४॥

यदि कुण्डली में बारहवें, लग्न धन में पापग्रह और गुरू, चन्द्रमा, शुक्र छटे, सातवें, आठवें भाव में हों तो जातक अनेक प्रकार का रोगी होता है ॥६५॥

यदि कुण्डली में लग्नेश नीच राशि में हो व पाँचवें या छटे या आठवें भाव में चन्द्रमा हो और गुरू भौम से दृष्ट हो तो जातक रोगों से विकल होता है ॥६६॥

यदि कुण्डली में लग्नेश चन्द्रमा से युक्त हो व बली षष्ठेश ग्यारहवें भाव में और अष्टमेश लग्न में हो तो जातक का शरोर रोग से विकृत होता है ॥६७॥

यदि कुण्डली में लग्न में चन्द्रमा व अष्टम में शनि हो तो जातक मन्दाग्नि व पेट जन्य रोग से हीन शरीरधारी होता है ॥६८॥

यदि कुण्डली में शुक्र से युक्त व पापग्रह से दृष्ट चन्द्रमा छटे या आठवें भाव में हो तो जातक मन्दाग्नि व हीन देहधारी होता है ॥६९॥

अथाण्डवृद्धि योगाः —

अष्टगः खलखगस्तु सवीर्यो लग्नगश्च पुरुषस्य विशेषम्।
अण्डवृद्धिबहुला बहुमूत्राज्जायते बहुविधा खलु पीडा ॥ ७० ॥

सारे　सितेऽष्टमगतेऽनिलजातमण्डः
कौप्यं कुजान्वितसिते क्षितिभागमण्डः।
भौमर्क्षगौ　बुधसितौ　शनिजीवदृष्टि-
हीनौ यदा　रुधिरकोपजमण्डमुक्तम् ॥ ७१ ॥

लग्नगः खलखगस्तु लग्नपः क्रूरखेटसहितो निरीक्षितः ।
मृत्युगौ गुरुसितौ तथास्तगाविन्दुपापसहितो व्ययेऽश्मरी ॥ ७२ ॥
मदनपस्तनुपश्च यदाष्टमे मदगताश्च कुजाहिशनैश्चराः ।
उदयगोऽष्टमभावपतिस्तदा शशधरो खलखेटनिरीक्षितः ।७३ ॥
योगादि दुष्टे लभते हि रोगानर्शो प्रमेहं च भगन्दरञ्च ।
वाल्मीकिशोफं किल दद्रूरोगं पाण्डोश्च भावं खलु गुह्यपीडाम् ॥ ७४ ॥
पञ्चमेशः स्थितः षष्ठे निर्बलो वीर्यवर्जितः ।
क्रूराश्च पञ्चमाश्चेव गुल्मदाश्च प्रपीडनम् ॥ ७५ ॥
सुतगतो यदि दुष्टगतिर्ग्रहः सुखपतिः खलखेटयुतो रिपौ ।
तनुपतिर्भवने किल वैरिणो ह्युदररोगविशेषनिपीडितः ॥ ७६ ॥
वक्रगो निजगृहे तनुनाथो लग्नगो रिपुपतिस्तनुराशौ ।
उच्चगोऽर्कतनयो यदि पश्येत्तौ खगावुदररुक् त्विह साध्यः ॥ ७७ ॥
षष्ठराशौ यदा क्रूरः षष्ठपः क्रूरसंयुतः ।
सप्तमे चोदरव्याधिं भवेद्भावानुसारतः ॥ ७८ ॥
मेदिनीपुत्रमन्देज्याश्चतुर्थे यदि संस्थिताः ।
हृद्रोगस्य विकारेण व्रणो भवति देहिनाम् ॥ ७९ ॥
दृष्टे क्रूरखगैः शुभैर्न च विधो षष्ठेश्वरे प्लीहकृत्
षष्ठे सप्तममालये खलखगे स्यात् प्लीहरोगी पुमान् ।
चेज्जन्मान्हिविनष्टदग्धगशनैः सूर्यो प्लीहकृत्-
लग्नस्वामिनि चोग्रपीडितशनौ प्लीहांशसाङ्क स्थिते ॥ ८० ॥
सुखगताश्च कुजाहिशनैश्चरारथ गताः सुतभावगतास्तथा ।
हृदि विदग्धमलं किल लोहजमुदरदाहमथोदरशोफकम् ॥ ८१ ॥
पुत्रस्थाः शनिराहुभौमरवयो लग्नाधिनाथो रिपौ
चन्द्रः क्षीणतनुः किलाष्टमगतः शत्रोगृहेऽवा स्थितः ।
जीवो दुष्टयुतो भवेच्च बहुलं शोफं तदाडम्बरं
श्वासः पाण्डुमिवार्पशूलकवलं हिक्काहि जालन्धरम् ॥ ८२ ॥
द्वादशभावगता रविराहुशनैश्चराश्च वल्मीकम् ।
पादकृष्णं सप्तपुटं पादे घातं सशस्त्रजम् ॥ ८३ ॥
यो भावः स्मरगाः खलास्तु त्रिगता नाथाश्च तेषां स्थिताः
मूर्तौ वा रिपुभावगो भृगुसुतो नीचोऽथवास्तङ्गतः ।
चन्द्रः क्षीणतनुस्तथा खलयुतो दृष्टस्तदा नीचगो
ते भावाः प्रभवन्ति यान्ति बहुलं नाशे व्ययं रोगताम् ॥ ८४ ॥

इति रोगोत्पत्तियोगाः ।

अथाङ्गविकारयोगाः ।

शनिभौमौ बुधश्चैव गुरुणा सह जायते ।
शुक्रो यदि चतुर्थस्थो हस्ते पादेस्त्विहापदः ॥ ८५ ॥
जीवतस्य च पुण्याख्यं सद्मनश्च पतिर्यदा ।
पापाच्चतुष्टयस्थौ च जङ्घावैकल्यगौ मतौ ॥ ८६ ॥
पूर्णिमाचन्द्रभं दृष्टं चन्द्रो मेलनमेति चेत् ।
जङ्घार्तिः षष्ठगे भौमे स्वदृग्दास्थे तथैव च ॥ ८७ ॥
वक्रखेटगृहे चैवं विधौ लग्नेऽङ्घ्रिहीनतः ।
वक्रभे लग्नपे रिष्फे जङ्घाविघ्नं खलेक्षिते ॥ ८८ ॥
रात्रि जन्मनि षष्ठे च मन्दे रुक्षत्व चापदः ।
मन्दः कुजस्त्वगुयुतो रिपुभावगोऽर्को
जङ्घाविकल्पमथ षष्ठशनौ व्ययेऽथ ।
उग्रेक्षितेंगमितजङ्घ इहार्कचन्द्र-
मन्दाः षडष्टसु करे चरणे त्विहापत् ॥ ८९ ।

अथाङ्गच्छेदयोगः—

चन्द्रभौमौ यदा लग्ने वाङ्गछेदः प्रकीर्तितः ।
लग्नगेन्दौ कलत्रस्थे भौमेऽङ्गच्छेद ईरितः ॥ ९० ॥

यदि कुण्डली में बली पापग्रह अष्टम में हो और लग्न में भी पापग्रह हो तो जातक के अधिक पेशाब करने से अण्डकोश की अधिक वृद्धि व नाना प्रकार की पीड़ा होती है ॥७०॥

यदि कुण्डली में अष्टम भाव में भौम व शनि हों तो वायु जन्य विकार से, भौम शुक्र अष्टम भाव में हों तो भूमि जन्य से और भौम की राशि में बुध शुक्र हों व शनि गुरु से अदृष्ट हों तो रक्त जनित विकार से जातक के अण्डकोश की वृद्धि होती है ॥७१॥

यदि कुण्डली में लग्न में पाप ग्रह व लग्नेश पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो एवं अष्टम भाव में गुरु व शुक्र हों तथा अस्त हों और बारहवें भाव में चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो तो जातक मिर्गी रोग का रोगी होता है ॥७२॥

यदि कुण्डली में सप्तमेश व लग्नेश अष्टम भाव और सप्तम में भौम, राहु, शनि हों एवं लग्न में अष्टमेश व चन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट हो तो दुष्ट योग होता है। इसमें जातक बवासीर, प्रमेह, भगन्दर, सूजन, सूखा, दाद, पाण्डु ( पीलिया ) रोग और गुप्ताङ्ग में पीड़ा प्राप्त करता है ॥७३–७४॥

यदि कुण्डली में पञ्चमेश छटे में निर्बल स्थित हो व पञ्चम में पापग्रह हों तो जातक गुल्म ( हृदय ) रोग का रोगी होता है ॥७५॥

सप्तमं शनिचन्द्राभ्यां दृष्टं युक्तं विशेषतः ।
कामातुरो नरो ज्ञेयः परस्त्रीनिरतः सदा ॥ २ ॥
सप्तमेशः स्थितो लाभे सप्तमे बुधसंयुते ।
कामातुरो नरो नित्यं परस्त्रीनिरतः सदा ॥ ३ ॥
चन्द्रचन्द्रजशुक्रार्कियुतं दृष्टं तु सप्तमम् ।
नरः कामाधिकश्चैव परस्त्रीरुचिलम्पटः ॥ ४ ॥
रविजीवकुजैर्युक्तं दृष्टे तु मदनं यदा ।
नरः कामाधिकश्चैव परस्त्रीविमुखः सदा ॥ ५ ॥
जीवदृष्टन्तु मदनं कुजदृष्टन्तु लग्नभम् ।
कामाधिको नरश्चैव परस्त्रीषु पराङ्मुखः ॥ ६ ॥
सप्तमेशो यदा तुङ्गे स्वांशे वा सबलो यदा ।
क्रूरदृग्रहितं द्यूनं मानुषो नहि लम्पटः ॥ ७ ॥
गुरुर्लग्ने तथा शुक्रः समसप्तमगो बुधः ।
चन्द्रश्चैकादशे चैव समर्थः पुरुषो भवेत् ॥ ८ ॥
मदनाधिपतिर्नीचे युतो नीचग्रहेण च ।
सप्तमं क्रूरसंयुक्तं क्रूरदृष्टं च लम्पटः ॥ ९ ॥
सप्तमे चरभं चैव चरांशे चन्द्रमा भवेत् ।
चरराशौ सप्तमेशे मानवोऽत्यन्तचञ्चलः ॥ १० ॥
सप्तमे चरभं चैव मानवश्चञ्चलः स्मृतः ।
स्थिरभे साधुतां याति द्विस्वभावे च मिश्रकम् ॥ ११ ॥
मदनपस्तनुगोऽथ विलग्नपो मदनगः शशिना च विलोकितः ।
भवति चात्र जनः खलु चञ्चलो बहुविधासुरतो वनितासु च ॥१२॥
बहुक्रूरस्थिताश्चैव सप्तमे सौख्यवर्जिताः ।
सप्ताधीशो निर्बलो हि निर्वीर्यो जायते नरः ॥ १३ ॥
लग्नाधीशो हीनबलः सप्तमेशस्तथैव च ।
द्यूने क्रूरग्रहश्चैव निर्वीर्यो मनुजः स्मृतः ॥ १४ ॥
सप्तमे तु यदा चन्द्रो नष्टतेजश्च निर्बलः ।
क्रूराक्रान्तो विशेषेण स्वक्षेत्रे वा हि निर्बलः ॥ १५ ॥

जन्मपत्री में सप्तम भावस्थ ग्रह से बल का ज्ञान करना चाहिए। यदि सप्तम भाव में शुभग्रह हों या शुभ दृष्ट या शुभ राशि से युक्त सप्तम भाव हो तो जातक बलवान् होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तम भाव शनि व चन्द्रमा से दृष्ट या युक्त हो तो जातक बड़ा कामी और दूसरे की स्त्री में आसक्त होता है ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमेश ग्यारहवें भाव में और सप्तम में बुध हो तो जातक काम से पीडित और दूसरे की स्त्री में अनुरक्त होता है ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि सप्तम भाव में हों या इनकी दृष्टि सप्तम भाव पर हो तो जातक बड़ा कामी और दूसरे की स्त्री में प्रीति करने वाला होता है ॥ ४ ॥

यदि जन्मपत्री में सूर्य, गुरु, भौम सप्तम में हों या इनकी दृष्टि हो तो जातक बड़ा कामी किन्तु दूसरे की स्त्री से विमुख होता है ॥ ५ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तम भाव गुरू से दृष्ट हो और लग्न भौम से दृष्ट हो तो जातक बड़ा कामी और दूसरे की स्त्री से पृथक् रहता है ॥ ६ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमेश उच्च राशि में वा अपने नवांश में बली हो और सप्तम में क्रूर ग्रह दृष्टि का अभाव हो तो जातक लम्पट नहीं होता है ॥ ७ ॥

यदि जन्मपत्री में लग्न में गुरू और समराशि में सप्तम भाव में बुध शुक्र हों तथा ग्याहरवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक शक्तिशाली होता है ॥ ८ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमेश नीच राशि में पापग्रह से युक्त हो और सप्तमभाव क्रूर-युक्त वा दृष्ट हो तो जातक लम्पट होता है ॥ ९ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमभाव में चर राशि व चर राशि के नवांश में चन्द्रमा हो और सप्तमेश चर राशि में हो तो जातक अत्यन्त चञ्चल होता है ॥ १० ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमभाव में चर राशि हो तो जातक चञ्चल, यदि स्थिर राशि हो तो सज्जन और द्विस्वभाव राशि सप्तमभाव में हो तो मध्यम होता है ॥ ११ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमेश लग्न में, लग्नेश सप्तम में चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक चञ्चल और स्त्रियों में अनेक प्रकार काम क्रीडा करने वाला होता ॥ १२ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमभाव में अधिक क्रूरग्रह हों तो जातक सुख से हीन और सप्तमेश निर्बल हो तो जातक बलहीन होता है ॥ १३ ॥

यदि जन्मपत्री में लग्नेश व सप्तमेश निर्बल हों और सप्तमभाव में पापग्रह हों तो जातक बल से रहित होता है ॥ १४ ॥

यदि जन्मपत्री में सप्तमभाव में निर्बल व हत तेज वा अपनी राशि में क्रूर ग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो जातक बल हीन होता है ॥ १५ ॥

### अथ षण्ढयोगाः ।

अब आगे कैसी ग्रह परिस्थिति में जातक नपुंसक होता है, इसे कहते हैं ।

#### नपुंसक योग ज्ञान—

शुक्रे शनिना[1] युक्ते दशमे रन्ध्रेऽथ शुभदृशा विहीने ।
मन्दे षष्ठान्त्यगते जलराशौ षण्ढता भवति ॥ १ ॥
सिताढ्यमन्दे[2] दशमे नपुंसकः षष्ठे व्यये वार्कसुतेऽम्बुराशौ ।
नपुंसकं वै खलु शुक्रतः स्यात् प्रकीर्तितं ताजिकरोमकाद्यैः ॥ २ ॥

---

१. मनु० जा० १२ अ० ३५ श्लो० ।     २. जा० सा० दी० १४ अ० ५० श्लो० ।

सप्ताधिनाथः खलखेटयुक्तो नीचे स्थितो चास्तमुपागतश्च ।
षष्ठाष्टमे वा विकलग्रहेण वा युक्तं च द्यूनं भवतीह षण्ढः ॥ ३ ॥
क्रूरो वाप्यथवा सौम्यो निर्वीर्यः सप्तमे स्थितः ।
नष्टं गते हि मदपे परांशे वा तु षण्ढकः ॥ ४ ॥
लग्नाधिनाथः परिहीनवीर्यो नीचं गतो नीचविलोकितश्च ।
अस्तङ्गतः सप्तमपो हि षष्ठे तदा नरः संभवतीह षण्ढः ॥ ५ ॥
सप्ताधीशो विनष्टो वा षष्ठे वाष्टमगोऽपि वा ।
विनष्टक्षेत्रसंस्थो वै विनष्टपुरुषार्थकः ॥ ६ ॥
एकद्वित्रिचतुर्थाश्च क्रूराः सौम्याश्च खेचराः ।
द्यूने द्यूनाधिनाथे वै विनष्टे षण्ढमानवः ॥ ७ ॥

यदि कुण्डली में शुभग्रह की दृष्टि से हीन शनि के साथ शुक्र दशम या अष्टमभाव में हो वा जलचर राशिस्थ शनि छटे या बारहवें भाव में शुभग्रह से अदृष्ट हो तो जातक नपुंसक होता है ॥ १ ॥

यदि कुण्डली में शुक्र से युक्त शनि दशम में या शुक्र से षष्ठ या व्यय भाव में जलचर राशिस्थ शनि हो तो ताजिक वेत्ता व रोमकाचार्य का कहना है कि जातक नपुंसक होता है ॥ २ ॥

यदि कुण्डली में सप्तमेश पापग्रहों के साथ नीच राशि में हो या अस्त हो या छटे या आठवें भाव में हो वा पापग्रह से युक्त सप्तमभाव हो तो जातक नपुंसक होता है ॥ ३ ॥

यदि कुण्डली में सप्तम भाव में निर्बल क्रूरग्रह या शुभग्रह हो तथा सप्तमेश अष्टम में या दूसरे ग्रह के नवांश में हो तो जातक नपुंसक होता है ॥ ४ ॥

यदि कुण्डली में निर्बल लग्नेश नीच राशि में नीच राशिस्थ ग्रह से दृष्ट हो व सप्तमेश छटे भाव में अस्त हो तो जातक नपुंसक होता है ॥ ५ ॥

यदि कुण्डली में सप्तमेश पाप से युक्त हो वा छटे वा आठवें भाव में पापग्रहों की राशि में हो तो जातक पुरुषार्थ से हीन होता है ॥ ६ ॥

यदि कुण्डली में १।२।३।४ भावों में शुभग्रह व पापग्रह हों और सप्तमेश सप्तम में पापग्रह के साथ हो तो जातक नपुंसक होता है ॥ ७ ॥

## अथ बुद्धिभ्रमयोगाः ।

अब आगे जिन योगों में मनुष्य भ्रमित बुद्धि वाला होता है, उनको बताते हैं ।

### बुद्धिभ्रम योग ज्ञान —

तनुपतिर्विकलो विकलांशगो विकलखेटविलोकनसंयुतः ।
विकलपञ्चमपस्य गृहं गतः खलु तदा मनुजो विकलो भवेत् ॥ १ ॥

**बुद्धिहीन व अधिक बुद्धिमान् योग ज्ञान—**

बुद्धिभावगताः क्रूराः शत्रुग्रहसमाश्रिताः ।
नीचराशिगताश्चैव मूर्खो वै मनुजो भवेत् ॥ १ ॥
क्रूरो वाप्यथवा सौम्यो नीचे वा सुतभावगः ।
विनष्टबलतेजो वै महामूर्खो नरो भवेत् ॥ २ ॥
बुद्धिभावं परित्यज्य रिपुक्षेत्रेऽस्तगो यदा ।
पञ्चमेशो नष्टबली बुद्धिहीनो नरो भवेत् ॥ ३ ॥
रविचन्द्राहिमन्दानां स्थितोऽप्येको हि पञ्चमे ।
पञ्चमेशो विनष्टो वै महामूर्खो भवेन्नरः ॥ ४ ॥
बुद्धिस्वामी विनष्टो वै रविराहुशनैश्चरैः ।
दृष्टो युक्तो विशेषेण महामूर्खो भवेन्नरः ॥ ५ ॥
बुद्धिनाथो यदा षष्ठे अष्टमे चास्तगो यदा ।
क्रूरदृष्टं क्रूरयुक्तं पञ्चमं बुद्धिवर्जितः ॥ ६ ॥
तनयपस्तनुपोऽथ षडष्टगो खलखगैर्वियुतो ह्यथवास्तगः ।
तनयगो यदि नीचखगो भवेद् विकलतां तनुते जनितस्य तु ॥ ७ ॥
[१]लग्नगौ शनिबुधौ शुभदृष्टयास्त्रक् प्रपश्यति यदा मतिहीनः ।
चन्द्रभानुविवरे यदि भौमो मिलतीह खलु बुद्धिविहीनः ॥ ८ ॥
[२]लग्नेश्वरे शशिनि भौमनिपीडिते च बुद्ध्या विहीन उदये सबुधेऽपि तद्वत् ।
एकांशगैकलवगौ रिपुगौ शनीनौ दृष्टौ खलैर्गतमतिः शुभदृष्टिहीनौ ॥९॥
[३]लग्नगे हिमरुचौ दशमस्थे साधिकाररविजे शुभदृष्ट्या ।
ईक्षिते मतिवियुक्बुधपूर्णे वीक्षिते विमतिरङ्ककुजेन्दू ॥१०॥
पूर्णेन्दौ रविनन्दनान्मुसरिफे भौमाच्च सूर्येऽस्तगे
क्रूरे लग्नतदीशदर्शनशुभा दृष्ट्या च यः स्यात्तनौ ।
अन्त्यार्को निशि चन्द्रमास्तदधिपस्यांशेशदृष्ट्या द्वयोः
शुक्रे चापझषस्थमिन्दुमवनीपुत्रं च पश्यत्यधीः ॥११॥
बुधभार्गवजीवानां स्थितोऽप्येको निरीक्ष्यते ।
पञ्चमेशस्तु सबलो बुद्धिमान् शास्त्रचिन्तकः ॥१२॥
बुद्धिभावगताः सौम्याः स्वोच्चगाः सबलास्तथा ।
पञ्चमेशस्तथा यातो बुद्धिमान् पुरुषोत्तमः ॥१३॥
लग्ने सौम्यो धने सौम्यो बुद्धिभावे तथैव च ।
बुद्धिमान् काव्यकर्ता च पुरुषो दीप्तकान्तिकः ॥१४॥

---

१. जा० सा० दी० ७४ अ० १३ श्लो० ।
२. जा० सा० दी० ७४ अ० १५ श्लो० ।
३. जा० सा० दी० ७४ अ० १४ श्लो० ।

[1]क्रूरिते रिपुपतौ दिननाथे द्व्यथोरुपतितेषु शुभेषु।
मन्दभौमगुरुभिर्भुवि पापैः कृष्णपित्तविकृतेर्व्रणमह्नि ॥ २ ॥
[2]कुजसकलदृशार्दिते सुरेज्ये दिनजनने च धरात्मजे विनष्टे।
अशुभयुजि रिपौ प्रभौ शुभार्तावलिगरवौ हृदि चोदरे च शूलम् ॥ ३ ॥
[3]षष्ठेश्वरे शशिनि पापहते विभौमे
लग्नेश्वरे द्युनगतेऽप्यथवार्कपुत्रे।
दग्धेऽवनौ च पतिते इति लग्नपे वा
प्लीहोष्णशीतजरुजो बहुले निशायाम् ॥ ४ ॥
[4]सपापभूभागगतेऽथ भूस्थिते
यमार्दितेऽर्के कफरुक्कफाद्विधौ ।
सितेऽरिपेऽग्नौ सशनौ च पित्ततः
समस्ततुर्येक्षणतोऽस्य वा भवेत् ॥ ५ ॥
[5]लग्नेऽरीशे वक्रभस्थे च लग्नाधीशे वक्रर्क्षे द्वयोर्मन्ददृष्ट्या।
रन्ध्रे शुक्रक्रोडयोः क्रूरितेऽरौ तन्नाथे च द्यूनगे तुन्दरोगः ॥ ६ ॥

यदि जन्मपत्री में षष्ठेश सूर्य पापग्रह व शुभग्रह से युक्त हो तो हृदय रोग या चौथे भाव में शनि और गुरू पापग्रहों से पीड़ित हों तो पित्त रोग या छाती में कम्पन होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में षष्ठेश सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो तथा शुभ ग्रह दूषित ( ६।८।१२ ) स्थान में हो या दिन में जन्म व शनि, भौम, गुरू चौथे भाव में नीच या शत्रु राशि में हों तो जातक कृमि ( कीड़ा ) या पित्त के विकार से घाव युक्त होता है ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में गुरू ४।७।१० में भौम से दृष्ट हो या दिन में जन्म व पीड़ित गुरू नष्ट भौम से दृष्ट हो अथवा षष्ठेश पाप ग्रहों से युक्त हो और शुभ ग्रह पीड़ित हो या वृश्चिक राशि में सूर्य हो तो जातक हृदय व पेट का रोगी होता है ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में षष्ठेश चन्द्रमा भौम को छोड़कर पाप ग्रह से पीड़ित व शुभ ग्रह से अदृष्ट हो या लग्नेश सप्तम में पाप ग्रह से दृष्ट व शुभ ग्रह से अदृष्ट हो या दिन में जन्म तथा दग्ध शनि चौथे भाव में हो या कृष्ण पक्ष की रात्रि में जन्म हो और दग्ध लग्नेश दूषित स्थान में हो तो जातक प्लीहा, शीत गर्म का रोगी होता है ॥ ४ ॥

**विशेष** – पुस्तक में 'षष्ठेश्वरेण शनिपापहतैर्विसौम्यैर्लं' 'वनौ च पतितेन्दुविलग्नपे वा' यह पाठान्तर है ॥ ४ ॥

---

१. मनु. जा. १२ अ. ३० श्लो० । २. मनु. जा. १२ अ. ३१ श्लो० ।
३. मनु० जा० १२ अ० ३२ श्लो० । ४. मनु० जा० १२ अ० ३३ श्लो० ।
५. मनु० जा० १२ अ० ३४ श्लो० ।

यदि जन्मपत्री में पाप ग्रह के साथ सूर्य चतुर्थ भाव के नवांश में हो तो प्लीहा रोग, यदि शनि से पीड़ित सूर्य चौथे भाव में हो तो कफ जन्य रोग या पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा चौथे भाव के नवांश में हो या चतुर्थस्थ चन्द्रमा शनि से पीड़ित हो या षष्ठेश शुक्र मेष या सिंह या धनु राशि में शनि से युक्त हो या षष्ठेश शुक्र मेष या सिंह या धनु राशि में शनि की सप्तम या चतुर्थ दृष्टि से दृष्ट हो तो जातक कफ जन्य व्याधि से पीड़ित होता है ॥ ५ ॥

यदि जन्मपत्री में विषम राशि लग्न में षष्ठेश हो व लग्नेश विषम राशि में हो और दोनों शनि से दृष्ट हों या शनि शुक्र अष्टम भाव में हों या छटे भाव में पाप ग्रह और षष्ठेश सप्तम भाव में हो तो सूजन की बीमारी से युक्त जातक होता है ॥ ६ ॥

### अथ लिङ्गपदे च दोषः।

#### गुह्यस्थल में रोग का ज्ञान—

[1]बुधसितदृशा भूमौ सूर्ये रवेर्ग्रहणे शनेर्भृगुज-
शशिनोरूर्ध्वारोहे कुजेऽब्जसितेक्षिते ।
रविशनिसितज्ञैकस्थितया हरिभे रवौ दिवा
वपुषि च सिते शिश्नच्छेदोऽथवाल्परतिर्भवेत् ॥ १ ॥
[2]स्त्रीपुंग्रहौ स्त्रियौ भागे सूर्याग्रेऽस्तांशगः पुमान् ।
तयोरूर्ध्वं निजांशश्चेत्क्षिपेत्तच्छिन्नमेढ्रकः ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में सूर्य ग्रहण में जन्म हो व शनि से चौथे भाव में सूर्य, बुध शुक्र से दृष्ट हो तो जातक के लिङ्ग में आघात होता है वा जातक अल्प रतिमान् होता है।

यदि चन्द्रमा व शुक्र एकादश द्वादश भाव में हों और भौम, शुक्र व चन्द्रमा से दृष्ट हों तो जातक के अण्डकोश में लोहे से आघात या सूर्य, बुध, शनि, शुक्र एक राशि में गुरू से अदृष्ट हों तो भी या सिंह राशि में सूर्य व लग्न में शुक्र और दिन में जन्म हो तो गुह्य स्थान में आघात होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में सूर्य से दूसरे भाव में स्त्री ग्रह के नवांश में स्त्री व पुरुष ग्रह हों और अस्त पुरुष ग्रह से दृष्ट हों तो लिङ्ग में आघात होता है। यदि शुभ पुरुष ग्रह बली हो तो आघात नहीं होता है ॥ २ ॥

### अथ वृषणनाशयोगः।

#### अण्डकोश नाशक योग ज्ञान—

[3]शुक्राच्चन्द्रात्परे मन्दश्चरति क्षितिजं यदा ।
पश्यतश्चन्द्रशुक्रौ तु वृषणं छेति लोहतः ॥ १ ॥

---

१. मनु० जा० १२ अ० ३६ श्लो० । २. मनु० जा० १२ अ० ३७ श्लो० ।
३. जा० सा० दी० २६-२७ श्लो० ।

शनौ सार्के भूमिजकेन्द्रे सूर्यस्य ग्रहणं यदि ।
पश्यतो बुधशुक्रौ तु वृषणच्छेद ईरितः ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में शुक्र वा चन्द्रमा से आगे अर्थात् द्वितीय भाव में शनि भौम हों और चन्द्र वा शुक्र से दृष्ट हों तो जातक के अण्डकोशों का आपरेशन होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में भौम से केन्द्र में सूर्य शनि हों या ग्रस्त सूर्य, बुध शुक्र से दृष्ट हो तो जातक के अण्डकोशों का आपरेशन होता है ॥ २ ॥

अथ कामातुर अल्पमैथुनयोगः ।

अब आगे किस योग में कामातुर और किन-किन योगों में जातक अल्परति वाला होता है, इसे कहते हैं ।

[1]शुक्रे प्रसूतिगमनान्मिथुनापरार्धे स्वांशे हरिप्रथमकार्धगते कुगेहे ।
कामातुरं जनयते झषगे तथास्मिन् षष्ठेश्वरे कुजहते च मृताल्पसूतिम् ॥१॥
[2]वक्रग्रहर्क्षगसिते पुरुषोऽङ्गनानां नो मैथुनस्य समये खलु तोषदाता ।
द्यूने सिते तनुगलग्नप ईक्षते चेत्स्त्रीणां तथा नृभवनेऽस्य नरस्य तोषः ॥२॥
चन्द्रमाश्च शनिना सह वक्रात्खे चतुर्थ इनजो न च तोषः ।
भार्गवो यदि शनैश्चरहद्दा मैथुनान्न युवतिप्रिय एषः ॥ ३ ॥
द्वन्द्वे वृषांशगसिते बहुकाल उक्तः सिंहादिभार्द्धगसिते च विरूपकारी ।
भौमेन संयुतसितो यदि षष्ठपोऽयं कामाधिकं युवतिलम्पटमाहुरार्याः ॥ ४ ॥
[3]वक्रर्क्षगे भृगुसुतेऽथ मदस्थितेऽत्र लग्नस्थलग्नपदृशा च शनीन्दुयोगे ।
भुव्यार्किहद्दगभृगौ च रतेषु नार्या द्वेष्याः सितर्क्षगविधौ दयितोऽपरेषाम् ॥ ५ ॥

यदि जन्मपत्री में मिथुन राशि के उत्तरार्ध में वृष या तुला राशि के नवांश में शुक्र हो अथवा सिंह राशि के पूर्वार्ध में छठे या आठवें या बारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक विषय में आसक्त या षष्ठेश शुक्र मीन राशि में भौम से दृष्ट हो तो जातक कामी, मृत सन्तान और अल्प सन्तान वाला होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में वक्री ग्रह की राशि में शुक्र हो या पुरुष राशि में सप्तम भाव में शुक्र लग्नस्थ लग्नेश से दृष्ट हो अथवा भौम से दशम राशि में शनि से युक्त चन्द्रमा हो या चौथे भाव में शनि हो या शुक्र शनि की हद्दा में हो या शनि, शुक्र की हद्दा में हो तो जातक मैथुन से स्त्री को प्रसन्न नहीं करने वाला होता है ॥ २-३ ॥

यदि जन्मपत्री में द्विस्वभाव राशि में वृष के नवांश में शुक्र हो तो जातक अधिक काल तक मैथुन करने वाला या सिंह राशि के पूर्वार्ध में शुक्र हो तो पशु की तरह विकृत मैथुन करने वाला या भौम से युक्त शुक्र षष्ठेश हो तो जातक स्त्री में आसक्त होता है ॥ ४ ॥

---

१. मनु० जा० १२ अ० ३९ श्लो० । २. बा० सा० दी० ७४ अ० ३१-३३ श्लो० ।
३. मनु० जा० १२ अ० ३८ श्लो० ।

[1]स्निग्धभे धनगते रजनीशे भूमिभागगतभास्करियुक्ते ।
दद्रुणो भवति भौमसिजाऽऽजेरण्डवृद्धिरलिगे मृतिभागे ॥ १ ॥
[2]जीवारफुजिद्भ्यामलिगो न दृष्टः कुजस्तनुस्थोऽन्हि निजे सितश्च ।
शिश्ने व्रणश्चाथ कुजे सकेतौ मुखे हि जातो वृषणे व्रणादिः ॥ २ ॥
मन्दः कुजो रिपुगतो व्ययगोऽथ रक्ताद्
विस्फोटका वृषणगाः प्रभवन्ति घर्मात् ।
केत्वन्वितो रविसुतो द्युनसंस्थितश्चेत्
वातादिनाङ्गविकृतिर्वृषणप्रदेशे ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में स्निग्ध राशियों में अर्थात् कर्क-वृश्चिक मीन राशि में दूसरे भाव में पृथ्वी तत्व के नवांश में चन्द्रमा, शनि से युक्त हो तो जातक पोतों में दाद से दुःखी या चन्द्रमा-शुक्र व भौम वृश्चिक राशि में या वृश्चिक राशि के नवांश में हों तो जातक के अण्डकोश बड़े होते हैं ॥ १ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'दक्षिणे भवति भौम…' यह पाठान्तर है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में दिन में जन्म हो और वृश्चिक लग्नस्थ भौम, गुरू व शुक्र से अदृष्ट हो या वृष या तुला लग्न में शुक्र हो तो जातक के लिङ्ग में घाव या केतु से युक्त भौम दूसरे भाव में हो तो पसीना से अण्डकोश में व्रणादि होते हैं ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में शनि या भौम छटे बारहवें भाव में हो तो रक्तदोष से या पित्त दोष से अथवा केतु से युक्त शनि सप्तम भाव में हो तो वायुजन्य व्याधि से पोतों में विकार होता है ॥ ३ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'प्रभवन्ति धर्मात्' 'किंत्वन्वितो' यह पाठान्तर है ॥ २ ॥

अथ खल्वाटयोगः ।

[3]हरिधनुरलिकन्यकासु लग्ने सपलितशिराः कुजदृग्विधौ कुलीरे ।
सुकृतसहमपे च कर्कसिंहालिमृगगते शुभदृष्टिमन्तरेण ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में सिंह या धनु या वृश्चिक या कन्या लग्न हो अथवा कर्क राशिस्थ चन्द्रमा, भौम से दृष्ट हो यद्वा पुण्य सहमेश कर्क, सिंह, वृश्चिक या मकर राशि में शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक खल्वाट होता है ॥ १ ॥

अथ खर्वयोगः ।

[4]मन्दतुर्यदृशि राश्यपरान्ते पूर्वभागधुरि वामृतधाम्नि ।
खर्वता शुभदृशा रहिते स्याल्लग्नपेऽल्पतरराशिगते च ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में अल्प राशि के अन्त भाग में या पूर्व भाग में चन्द्रमा, शनि की चतुर्थ दृष्टि से दृष्ट हो या अल्पतर राशि में लग्नेश शुभ ग्रह से अदृष्ट हो तो जातक नाटे कद का होता है ॥ १ ॥

---

१. मनु० जा० १२ अ० ४३ श्लो० । २. जा० सा० दी० ७४ अ, ३४-३५ श्लो० ।
३. मनु० जा० १२ अ० ४५ श्लो० । ४. मनु० जा० १२ अ० ४४ श्लो० ।

[ अथ वाक्पटुसुभगकृपालुयोगाः ]

अब आगे किस योग में जातक बोलने में चतुर, प्रसिद्ध, सज्जन, हसमुख और दयालु होता है, इसे बताते हैं।

[1]खस्थे विधौ शनितुरीयदृशाऽथ मन्दे
वित्तस्थिते शनिगृहे तरणौ च वाग्मी।
ज्ञे सूर्यचन्द्रगृहगे प्रथितः सुहृच्च
चन्द्रार्कयोर्झषगयोः सुभगः कृपालुः॥ १॥

यदि जन्मपत्री में दशम में चन्द्रमा, शनि की चतुर्थ दृष्टि से दृष्ट हो या दूसरे भाव में शनि व सूर्य मकर या कुम्भ में हो तो बोलने में चतुर, यदि दिन में जन्म और बुध सिंह राशि में हो या रात्रि में जन्म और कर्क राशि में बुध हो तो प्रसिद्ध एवं सज्जन, यदि सूर्य चन्द्रमा मीन राशि में हों तो जातक सदा हसमुख और दयालु होता है॥ १॥

अथ कपटलेखवितथयोगौ।

अब आगे किस योग में जातक कपट लेखक या यों जानिये कपटी और झूठ बोलने वाला होता है, इसे बतलाते हैं।

[2]सज्ञे कुजे कपटकृच्च बुधे बलाढ्ये
क्रूरान्वितेऽध्वयुजि भूमिसुते तृतीये।
भूकेन्द्रऽपेथ नवमाधिपतौ च षष्ठे
मेषे बुधे कपटलेखकरो नरः स्यात्॥ १॥
अपररात्रकृताभ्युदये विधाववनिजाद्व्रजति ज्ञमसत्यवाक।
ज्ञकुजयोर्दरजैकगकेन्द्रयोर्वितथवागपरं जयते जनम्॥ २॥

यदि जन्मपत्री में बुध के साथ भौम हो या बली बुध पाप ग्रह से युक्त नवम में हो या तीसरे भाव में भौम शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो या चौथे भाव का स्वामी छठे भाव में हो या नवमेश छठे भाव में हो या मेष राशि में बुध हो तो जातक कपटी होता है॥ १॥

यदि जन्मपत्री में कृष्ण पक्ष की अष्टमी से चौदश तक का जन्म हो और चन्द्रमा भौम से युक्त होकर आगे बुध से योग करता हो या भौम बुध एक ही अंश में केन्द्र में हों तो जातक झूठ बोलने वाला होता है॥ २॥

अथ लोकविस्मययोगः।

अब आगे जिन योगों में जातक संसार को हँसाने वाला या हास्य या द्रोह से धनोपार्जन करने वाला तथा चोरी करने वाला होता है, उन्हें कहते हैं।

[3]सज्ञे हास्यपरः कुजेऽथ सबलेनार्केक्षितौ वित्कुजौ
ज्ञातीनां खलु हासयेत्परजनान् तद्वच्छनेर्भेऽपि तौ।

---

१. मनु० जा० १३ अ० १५ श्लो०। २. मनु० जा० १३ अ० १६-७ श्लो०।
३. जा० सा० दी० ७४ अ० २२ श्लो०।

षष्ठाष्टान्त्यविधुश्च पश्यति सितं चेल्लोकविस्मापिता
वाक्स्फूर्तिर्मिथ आरसौम्यशशिनश्चावीर्यवाग्दृग्युतः ॥ १ ॥
[1]युत्यार्किभे ज्ञकुजयोर्जनहास्यकारी
वैहासिकोऽमरपतौ नृपभेऽर्कदृष्टया ।
विस्मापयत्यरिदृशा पतितेन्दुभृग्वो-
र्भौमज्ञयोर्मुथशिले खलु मण्डिताभिः ॥ २ ॥
[2]खस्थे बुधे तुर्यगते च चन्द्रे हास्यात्परद्रव्यमुपाददीत ।
कुजे तृतीयेऽथ बुधे सचन्द्रे रिपौ विलग्नाधिपतौ बुधे वा ॥ ३ ॥
[3]चन्द्रज्ञारैः शुभदृशमृते केन्द्रगैस्तस्करः स्याद्
द्यूने मन्दे शशिकुजबुधैर्वीक्षिते तु प्रसिद्धः ।
भौमे केन्द्रे गुरुसितदृशा वर्जितेऽस्ते ज्ञभौम-
क्रोडैरिन्दोरपि रिपुदृशा ज्ञारचन्द्रार्कियुक्त्या ॥ ४ ॥

यदि जन्मपत्री में बुध से युक्त भौम हो या बली सूर्य शनि से दृष्ट, बुध युक्त भौम हो तो अधिक हँसाने वाला या शुक्र, षष्ठस्थ या अष्टमस्थ या बारहवें भाव में स्थित चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक संसार को हँसाने वाला और शीघ्र स्पष्ट शब्द बोलने वाला, यदि बुध, भौम चन्द्रमा परस्पर में दृष्टि सम्बन्ध रखते हों तो जातक निर्बल वाणी का या मन्द वाणी का होता है ॥ १ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'सबले भेर्केक्षितौ' 'जातीनां' यह पाठान्तर है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में शनि की राशि में (१०।११) भौम व बुध की युति हो या मेष, सिंह या धनु राशि में गुरु, सूर्य से दृष्ट हो या चन्द्रमा और शुक्र परस्पर में शत्रु दृष्टि सम्बन्ध रखते हों या बुध भौम में इत्थशाल योग हो तो जातक मनुष्यों को हँसाने वाला होता है ॥ २ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'युक्त्यार्किभे' 'वौहारिको नरपतेर्नृपभेऽर्कदृष्ट्या' 'पतितेन्दुभृग्वौ' यह पाठान्तर है ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में दशम भाव में बुध, चौथे में चन्द्रमा हो तो जातक द्रोह (विरोधी) की भावना करके दूसरे के धन का हरण करने वाला या चन्द्रमा से युक्त भौम तीसरे भाव में हो अथवा चन्द्रमा के साथ बुध छठे भाव में हो या लग्नेश बुध छठे भाव में हो तो भी जातक पूर्व फल से युक्त होता है ॥ ३ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'हास्यात्परं द्रव्य' यह पाठान्तर है ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में चन्द्रमा, बुध और भौम एक राशि में केन्द्र में शुभ ग्रहों से अदृष्ट हों या सप्तम भाव में शनि, चन्द्रमा बुध भौम से दृष्ट हो या केन्द्रस्थ भौम, गुरु व शुक्र से अदृष्ट हो या सप्तमस्थ शनि, बुध, भौम से लग्नस्थ चन्द्रमा दृष्ट हो या शनि, बुध, चन्द्रमा और भौम एक राशि में हों तो जातक चोर होता है ॥ ४ ॥

---

१. मनु० जा० १३ अ० १८ श्लो० ।
२. मनु० जा० १३ अ० १९ श्लो० ।
३. मनु० जा० १३ अ० २० श्लो० ।

## अथ पररतिविमुखत्वयोगाः ॥

अब आगे किन-किन योगों में जातक पराई स्त्री में आसक्त होकर उसका भोग करने वाला व सदाचारी होता है, उन्हें बताते हैं।

[1]शुक्रज्ञौ द्युनगौ तथा दशमगौ स्यात्पुंश्चलोऽसृग्सितौ
खेऽस्ते वा परदारगः कुजसितौ तुर्ये च खे पुंश्चलः।
मन्देनेन्दुत आस्फुजित्सुखगतः खस्थेऽपि वा पुंश्चलः
खे चाद्ये ज्ञसितार्कजारथ दिने स्वर्क्षे सितः पुंश्चलः ॥ १ ॥

[2]द्यूनेऽथ खे सितबुधार्किषु चारभृग्वो—
स्तुर्येऽथ खे भृगुसुते शशिसौरिदृष्टे।
क्रोडारयोररिगयोर्निजवर्गभौमे
दृष्ट्या कवेः सकलया परदारगामी ॥ २ ॥

गुरोर्गृहे दैत्यगुरावथानयोः खलग्नभाजोरथ वेत्थशालयोः।
विनारदृष्ट्याऽन्यवधूपराङ्मुखस्तनौ च जीवे दशमे त्रिगे भृगौ ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में बुध व शुक्र एक राशि में सप्तम भाव में या दशम भाव में हों या बुध शुक्र में से एक ग्रह सप्तम या चतुर्थ में हो और दूसरा दशम भाव में हों या चन्द्रमा से चौथे भाव में या दशम भाव में शनि से युक्त शुक्र हो या बुध, शुक्र, शनि, लग्न या दशम में हों या दिन का जन्म समय हो और शुक्र अपनी राशि में हो तो जातक व्यभिचारी होता है ।। १ ॥

**विशेष**--पुस्तक में 'श्चलासृक्सितौ खस्थे वा' 'तुर्ये रवौ' 'मंदेंद्वीक्षितः' 'खेचास्तैः ज्ञसि' यह पाठान्तर प्राप्त है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में शनि, बुध, शुक्र सप्तम भाव में या दशम भाव में हों अथवा भौम शुक्र चौथे भाव में हों या दशमभाव में शुक्र, शनि व चन्द्रमा से दृष्ट हो या शनि भौम छठे भाव में हों या अपने-अपने षड्वर्ग में स्थित भौम व शुक्र आपस में सप्तम दृष्टि से दृष्ट हों तो जातक परस्त्री गामी होता है ।। २ ॥

यदि जन्मपत्री में धनु या मीन राशि में शुक्र, भौम से अदृष्ट हो या गुरु व शुक्र लग्न में या दशम भाव में भौम से अदृष्ट हों या गुरु शुक्र परस्पर में इत्थशाल योग करते हों या लग्न में गुरू और तीसरे या दशवें भाव में शुक्र हो तो जातक दूसरों की स्त्रियों में अनासक्त होता है ॥ ३ ॥

## अथ वृथाव्ययी, ईर्ष्यालुयोगाः।

अब आगे किस योग में जातक फिजूल खर्च करने वाला तथा ईर्ष्यालु होता है, इसे बताते हैं।

---

१. जा. सा. दी. ७४ अ० श्लो.।    २. मनु. जा. १३ अ० २१ श्लो.।
३. मनु. जा. १३ अ. २४ श्लो०।

बुध से दृष्ट हो या बुध शुक्र वायु राशि में लग्न वा दशम में हो तो वस्त्रों या वस्त्र के टुकड़ों या यों जानिये रँगने का व्यवसायी, यदि कुम्भ या मकर राशि में शनि कन्या तुला राशिस्थ बुध से दृष्ट हो तो श्रेष्ठ कोमल या यों समझिये रेशमी वस्त्रों का, यदि कन्या राशिस्थ शुक्र, बुध से दृष्ट हो तो जातक मोटे वस्त्रों का व्यापारी होता है ॥१॥

यदि जन्मपत्री में बुध गुरू से युक्त शनि मकर राशि में हो तो जातक थोड़े फटे अर्थात् कटपीस का व्यापारी, यदि मकरस्थ शनि वृष राशिस्थ गुरू से दृष्ट हो तो पट्टांशुक का, यदि दशमेश शनि बुध की राशि में भौम से दृष्ट हो तो लाल वस्त्रों को बेचने वाला जातक होता है ॥२॥

**विशेष**—पुस्तक में 'मृगगतेप्यंडजोर्णनाको' 'गौस्थेस्त्रियो गुरुदृशातिपटच्चरं च' यह पाठान्तर है ॥१॥

यदि जन्मपत्री में चतुष्पद राशि में गुरु चतुष्पद राशिस्थ अष्टमेश से दृष्ट हो तो जातक कम्बल का व्यापारी होता है। यहाँ देखने वाले ग्रह के स्वरूप तुल्य पशु भेड, ऊँटादि के ऊन का ज्ञान करके उत्तम मध्यमादि कम्बलों का व्यवायी कहना चाहिये ॥३॥

**विशेष**—पुस्तक में 'नरोप्यतिकम्बलानि' 'गुरून्यगूनि' यह पाठान्तर है ॥३॥

### अथान्नविक्रययोगाः ।

अब आगे किस योग में जातक जौ, गेहूं, मसूर आदि अन्नों का व्यापारी होता है, इसे कहते हैं।

[1]बुधे कर्मस्वामिन्यनिलयुजि तत्स्थार्कजदृशा<br>
मृगे चैवं मन्दे वृषगशशिदृश्यर्थति यवान्।<br>
सगोधूमान् स्त्रीस्थे शशिनि तु मसूरादिवृषगे<br>
शनौ खेटादृष्टे धिषणसहिते मिश्रितकणान् ॥ १ ॥<br>
तिलान् कन्यायुक्तामरगुरुदृशारार्क सहिते<br>
कनिष्ठान्नं तिक्तं शशियुजि रसस्निग्धविषयम्।<br>
विधौ चैवं कन्यायुजि शनिदृशा तन्दुलतिलान्<br>
मृगस्थार्कार्किभ्यां यवयवजधान्येऽर्थति नरः ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश बुध अग्नि राशि ( १।५।९ ) में अग्नि राशिस्थ शनि से दृष्ट हो या मकरस्थ शनि वृष राशिस्थ चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक जौ का, यदि मकरस्थ शनि कन्या राशि स्थित चन्द्रमा से दृष्ट हो तो गेहूँ मसूड़ आदि का, यदि वृष राशि में गुरू के साथ शनि हो और ग्रहों से अदृष्ट हो तो मिश्रित अन्नों का अर्थात् विविध अन्नों का व्यवसायी होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में वृष में शनि कन्या राशिस्थ गुरू से दृष्ट हो तो तिल का, यदि वृष राशि में भौम के साथ शनि हो तो अल्प व तीते अन्न का, यदि

१. मनु० ज० १५ म० १९-२० श्लो०।

सूर्य के साथ शनि हो या वृषस्थ शनि कन्या राशिस्थ सूर्य से दृष्ट हो तो गेहूं का, यदि चन्द्रमा के साथ शनि वृष राशि में हो तो स्निग्ध पदार्थों का, यदि कन्या राशिस्थ चन्द्रमा, शनि से दृष्ट हो तो चावल व तिल का, यदि मकर राशिस्थ सूर्य व शनि, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक जौ तथा जौ से उत्पन्न वस्तुओं का व्यापारी होता है ॥ २ ॥

## अथ चतुष्पदविक्रययोगः ।

अब आगे जिस योग में जातक पशु का व्यवसायी होता है, उसे बताते हैं ।

[1]जीवे कर्मबले चतुष्पदगतेऽरीशेक्षिते तत्पदा-
न्युष्ट्रान्पात्यरिपे सितेक्षितपदे ज्ञे गर्दभान् शीतगौ ।
ज्ञस्थाने सुरभी रवौ शशिपदे चाश्वान् शनौ तत्पदे
छागान् षष्ठगतेऽस्तपे च नवमस्त्रीशे स्ववित्ते च गाः ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश गुरू चतुष्पद राशि में चतुष्पद राशिस्थ षष्ठेश से दृष्ट हो तो राशि समान पशुओं का, यदि दशमेश गुरु चतुष्पद राशिस्थ षष्ठेश से दृष्ट हो तो ऊँटों का, बुध से दृष्ट हो तो गधाओं का, यदि दशमेश गुरु चतुष्पद राशिस्थ बुध के षड्वर्ग में स्थित चन्द्रमा से दृष्ट हो तो गायों का, यदि गुरु चतुष्पद राशिस्थ सूर्य की शत्रु दृष्टि से दृष्ट हो तो घोड़ों का, यदि सूर्य राशिस्थ गुरु चतुष्पद राशिस्थ शनि की शत्रु दृष्टि से दृष्ट हो तो बकरियों का, यदि सप्तमेश चतुष्पद राशि में छठे भाव में हो और सप्तमेश से दशमेश गुरू दृष्ट हो तो बकरों का, यदि दशमेश गुरू द्वितीय भावस्थ चतुष्पद राशिस्थ नवमेश से दृष्ट हो तो दूध का और उक्त स्थिति में तृतीयेश से दृष्ट हो तो गायों का व्यवसायी होता है ॥१॥

**विशेष**—पुस्तक में 'छागान् षष्ठगते तथैव च वसन्नीचे स्ववित्तेशगाः' यह पाठान्तर है ॥१॥

## अथ मणिविक्रययोगाः ।

अब आगे जिन योगों में जातक मणियों का विक्रेता होता है, उन्हें बतलाते हैं ।

[2]शुक्रे कर्मदलीळदे सतरणौ क्रीणाति जात्यान्मणी
नारस्थेऽनलसंस्थभूसुतदृशा मुक्ताः सयुग्मेऽत्र च ।
सार्को मध्यमिका शनाविति जले शुक्रेक्षिते साधमा
शिप्राश्चन्द्रदृशा विना परदृशं चामूः कपर्दीनि च ॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश शुक्र, सूर्य से युक्त हो तो उत्तम मणियों का, यदि दशमेश शुक्र जल राशि में अग्नि राशिस्थ भौम से दृष्ट हो तो मोतियों का, यदि दशमेश शुक्र मिथुन राशि में शनि से युक्त हो तो मध्यम रत्नों का, यदि जल राशिस्थ शनि, शुक्र से

---

१. मनु० जा० १५ अ० २२ श्लो० ।    २ मनु० जा० १५ अ० २३ श्लो० ।

दृष्ट हो तो अधम मणियों का, यदि जल राशिस्थ शनि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो सीपों का और जलराशिस्थ शनि यदि समस्त ग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक कौड़ियों का व्यवसायी होता है ॥१॥

**विशेष**—पुस्तक में 'सार्कमध्यविनासनावति जले शुक्रेक्षिते चाधमाः ग्रह्याथन्प्र' 'चाम्कपर्दादि च' यह पाठान्तर है ॥१॥

### अथ सुवर्णादिव्यापारयोगः ।

अब आगे जिन योगों में जातक सुवर्णादि का व्यापारी होता है, उन्हें बताते हैं ।

[1]सूर्येऽधिकारिणि शिखिस्थधनेशदृष्टे
सौवर्णिकोऽर्कतनये च शशाङ्कदृष्टे ।
चापस्थभास्करदृशाऽजगवित्तपार्क्यो-
स्तारक्रयी हरिधनुःस्थदृशास्य शोद्धा ॥१॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश सूर्य अग्नि राशिस्थ धनेश से दृष्ट हो तो सुवर्ण का, यदि दशमेश शनि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो सोने चांदी का, यदि मेषस्थ शनि धनेश से युक्त हो और धनु राशिस्थ सूर्य से दृष्ट हो तो निर्मल मोतियों का, यदि धनु राशिस्थ शनि सिंहस्थ सूर्य से दृष्ट हो तो जातक धातुओं का शोधन करने वाला होता है ॥१॥

### अथ कारुकयोगः ।

अब आगे जिन योगों में जातक शिल्पी ( कारीगर ) होता है, उन्हें बताते हैं ।

[2]नीचे वक्रे बुधे कर्मदलीले दृष्टिमानतः ।
कुविन्दस्येश्वरो मन्दे मिथुनस्थेऽप्यहर्निशम् ॥२॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश बुध नीचस्थ हो या वक्री हो तथा पूर्णापूर्ण दृष्ट हो तो दृष्टि के समान पूर्णापूर्ण जुलाहों का स्वामी होता है । यदि दशमेश शनि मिथुन राशि में हो तो जातक सदा जुलाहों का स्वामी होता है ॥१॥

### अथोर्णादिकर्मयोगः ।

अब आगे जिस योग में जातक ऊनादि का व्यवसायी होता है उसे कहते हैं ।

[3]ज्ञे चतुर्थे च पूर्वोक्ते सूचिको दृष्टिमानतः ।
अन्यैरदृष्टे चौर्णाकृद्बहुदृष्टे विचित्रकृत् ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश बुध चौथे भाव में नीचस्थ या वक्री हो तो जातक द्रष्टा ग्रह के आधार पर दर्जी, यदि अन्य ग्रहों से अदृष्ट हो तो ऊन बनाने वाला, यदि अधिक ग्रहों से दृष्ट हो तो विचित्र कार्य करने वाला होता है ॥ १ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'अनन्यदृष्टे चौर्णाकृद्गुरुयुक्ते' यह पाठान्तर है ॥ १ ॥

---

१, मनु० जा० १५ अ० २४ श्लो० ।     २, मनु० जा० १५ अ० २५ श्लो० ।
३, मनु० जा० १५ अ० २६ श्लो० ।

## अथ शस्त्रवीणाकाष्ठादिकर्मयोगाः ।

आगे अब जिस योग में जातक शस्त्र बनाने वाला व वीणादि का ज्ञाता एवं काठ आदि का कार्य करने वाला होता है उसे कहते हैं ।

[1]कर्मस्थाने कुजदृशि बुधे स्यान्नृराशावयस्कृ-
त्पूष्णा दृष्टे नृपसमुचितास्त्रादिकृद्भार्गवेण ।
वीणादिज्ञो भवननिपुणः सौरिणेज्येन देव-
स्थानाभिज्ञो हरिधनुरजेष्वेककः काष्ठकर्मा ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में दशमस्थ बुध, पुरुषराशिस्थ भौम से दृष्ट हो तो जातक शस्त्र बनाने वाला, यदि पूर्वोक्त बुध, सूर्य से दृष्ट हो तो राजा के उपयोगी अस्त्र शस्त्रादि का निर्माता, यदि बुध, शुक्र से दृष्ट हो तो वीणा का ज्ञाता, यदि शनि से दृष्ट हो तो मकान बनाने में चतुर, यदि पूर्वोक्त बुध, गुरू से दृष्ट हो तो देव मन्दिरों का बनाने वाला और सिंह या धनु या मेष में बुध दशम में हो तो जातक काठ का काम करने वाला होता है ॥ १ ॥

## अथ चर्म-वालकर्मयोगौ ।

अब आगे जिस योग में जातक चमड़ा व केश का काम करने वाला होता है, उसे कहते हैं ।

[2]केन्द्रे कुजे गुरुदृशीज्यमहीजयोर्वा
मेषे हरावथ नरः खलु चर्मकारः ।
इन्दौ ज्ञहद्दयुजि तद्दृशि चाग्निराशौ
वालस्य कृद्भवति वीक्षकखेटमानात् ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में केन्द्रस्थ ( दशमस्थ ) भौम, गुरू से दृष्ट हो या भौम व गुरू मेष सिंह राशि में हों तो जातक चमड़े का काम करने वाला, यदि बुध की हद्दा में चन्द्रमा अग्नि राशिस्थ बुध से दृष्ट हो तो जातक दृष्टि के आधार पर बालों का उत्तमादि कार्य करने वाला होता है ॥ १ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'गुरुशशीज्यमहीज्ययोर्वा' खलुकर्मकारः' यह पाठ है ॥ १ ॥

## अथ वस्त्ररञ्जनयोगः ।

अब आगे जिस योग में जातक वस्त्रों को रंगने वाला होता है, उसे कहते हैं ।

शुक्रार्योः कर्मकृतोरथैत्संपश्यतो वैरिदृशोत्थशालान् ।
वस्त्रस्य रक्ता मरुदम्बुसंस्थदृष्ट्या च तद्वर्णसवर्णकस्य ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश शुक्र, भौम शत्रु ग्रह से दृष्ट हों या इत्थशाल योग करते हों या दशम में चतुर्थस्थ से दृष्ट हो तो द्रष्टा ग्रह के वर्ण तुल्य रङ्ग से वस्त्रों को रँगने वाला होता है ॥ १ ॥

---

१. मनु० जा० १५ अ० २७ श्लो० । २. मनु० जा० १५ अ० २८ श्लो० ।

अब जिस योग में जातक गर्त्तादि को खोदने वाला और नौकादि कार्य करने वाला होता है, उसे कहते हैं।

[1]भौमे कर्मदलीलदेऽस्थिखनको भूस्थेऽर्कदृष्टे मणि-
स्वर्णादेः परिखाकरो गुरुदृशा चार्कैः सुरङ्गादिकृत्।
नौकर्मप्रवणश्च खे ज्ञयमयोस्तत्स्वामिदृग्युक्तयोः
सूर्यादीक्षकधातुरुन्निभबलाच्छ्रेष्ठोऽथ मध्योऽधमः॥ १॥

यदि जन्मपत्री में दशमेश भौम भूमि राशियों (२।६।१०) में हो तो लोहे के गर्त को खोदने वाला, यदि दशमेश भौम, सूर्य से दृष्ट हो तो सुवर्ण व चाँदी की खानों में कार्य करने वाला, यदि गुरु से दृष्ट हो तो खाई खोदने वाला, यदि शनि से दृष्ट भौम हो तो सुरङ्ग कार्य-कर्त्ता होता है।

यदि जन्मपत्री में दशमेश बुध शनि से युक्त हो और दशमस्थ दशमेश से दृष्ट या युक्त हो तो जातक नौका के कार्य में निपुण होता है। यदि बुध शनि, सूर्य से दृष्ट हों तो राजा के उपयोग में आने वाली नौका का, यदि गुरु से दृष्ट हो तो जहाज आदि का निर्माता, यदि शनि से दृष्ट हो तो चोरों के उपयोग में आने वाली नौका का निर्माण करने वाला जातक होता है। यहाँ द्रष्टा ग्रह के आधार पर उत्तम मध्यम नौकादि का ज्ञान समझना चाहिये॥१॥

**विशेष** पुस्तक में 'खे ज्ञपदयोः' 'सन्निभबलः' यह पाठान्तर है॥१॥

## अथ घटकर्मचित्रादिकयोगाः।

अब आगे जिस योग में जातक विचित्र लोहकार होता है, उसे कहते हैं।

[2]खेऽग्नावथार्किकुजयोर्घटयत्ययो हि दृष्ट्या रवेः प्रहरणं धिषणस्य चित्रम्।
इन्दौ जले किल खनित्रिकमिन्दुराशौ पेटीं सितेन्दुसितभे ज्ञदृशा कुवस्तु॥१॥

यदि जन्मपत्री में दशमभाव में अग्नि राशि में शनि भौम हों तो जातक लोहे का कार्य करने वाला अर्थात् लोहकार, यदि शनि भौम दशम में अग्नि राशिस्थ सूर्य से दृष्ट हों तो शस्त्र बनाने वाला, यदि शनि भौम दशम में अग्नि राशिस्थ गुरु से दृष्ट हों या शनि भौम, जल राशिस्थ चन्द्रमा से दृष्ट हों तो विचित्र शस्त्र बनाने वाला, यदि शनि भौम, शुक्रराशिस्थ चन्द्रमा से दृष्ट हों या शनि भौम, चन्द्रराशिस्थ शुक्र से दृष्ट हों या शनि भौम, बुधराशिस्थ शुक्र से दृष्ट हों तो पेटी बनाने वाला और शनि भौम यदि शुक्र-राशिस्थ बुध से दृष्ट हों तो जातक विचित्र लोहे की दूषित वस्तु का निर्माण करने वाला होता है॥१॥

**विशेष**—पुस्तक में 'कुजयोर्घटकर्मकोहि' 'इन्दोर्जले' 'खेटाश्रितेस्य सितभज्ञदशा सुवस्तु' यह पाठान्तर है॥१॥

---

१. मनु० जा० १५ अ० ३० श्लो०। २. मनु० जा० १५ अ० ३१ श्लो०।

अथ वाद्यवादनयोगः ।

अब आगे जिस योग में जातक बाजे बजाने वाला व नाचने वाला होता है, उसे बतलाते हैं ।

[1]केन्द्रे ज्ञेन्दुकुजेषु भार्गवदृशा वीणादि केन्द्रं विना
जानीते पणवादि सौम्यसितयोर्हद्दे स्वके वा मिथः ।
नृत्यज्ञोऽस्ति मृगस्थभौमधरणींसंस्थज्ञयोश्च स्वभे
शुक्रे ज्ञारयुगीक्षितेन मधुरो वर्गस्थितौ वा मिथः ॥१॥

यदि जन्मपत्री में चन्द्र, भौम, बुध केन्द्र में शुक्र से दृष्ट हों तो बीणा बजाने वाला, यदि चन्द्र भौम बुध केन्द्र से भिन्न स्थान में शुक्र से दृष्ट हों तो जातक ढोल बजाने वाला, यदि बुध व शुक्र अपनी हद्दा में हों तो जातक नाचने वाला, यदि मकर राशि में चौथे भाव में बुध भौम हों तो नाचने वाला, यदि स्वराशिस्थ शुक्र, बुध भौम से दृष्ट हों तो मीठे स्वर से गान करने वाला और बुध भौम अपने वर्ग में या बुध, भौम के वर्ग में तथा भौम बुध के षड्वर्ग में हो तो नाचने वाला जातक होता है ॥१॥

विशेष—पुस्तक में 'शुक्रे चास्य युतीक्षणेन' यह पाठान्तर है ॥१॥

अथ भैषज्यसूतिकादिकर्मयोगः ।

अब आगे जिस योग में जातक वैद्य व सूतिकादि कार्य करने वाला होता है, उसे कहते हैं ।

[2]केन्द्रच्युतारसितयोर्भिषगिन्दुदृष्ट्या
जीवार्कभेऽवनिसुते च शशीत्थशाले ।
भौमज्ञयोस्तु सितभे किल सूतिकाज्ञो
दृष्टयन्तरेण कुरुते शिखिशास्त्रकर्म ॥ १ ॥
दृष्ट्या सितार्कसुतयोर्वृषणार्शजार्तिहर्ता
रवेर्नयनरोगहरो विधुश्च ।
तद्धातुरोगहरणो गगनस्थकर्म
खेटैः परस्परदृशा मृदितास्थिसन्धिः ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में केन्द्र में भौम व शुक्र, चन्द्रमा से दृष्ट हों या पाठान्तर से द्विस्वभाव राशि में छठे भाव में पापग्रह चन्द्रमा से दृष्ट हो या दशमेश भौम, गुरु या सूर्य की राशि में चन्द्रमा से इत्थशाल योग करता हो तो जातक वैद्य होता है। यदि भौम या बुध दशमेश होकर शुक्र की राशि में चन्द्रमा से दृष्ट हो तो सूतिका कार्य का ज्ञाता वैद्य, या उक्त योग अन्य ग्रह से दृष्ट हो तो जातक रसायन बनाने वाला होता है ॥ १ ॥

विशेष—पुस्तक में 'पापः षष्ठे द्वितनुभे भिषगि' ।

यदि जन्मपत्री में शनि, शुक्र से पूर्ण दृष्ट हो या शुक्र, शनि की सप्तम दृष्टि से दृष्ट हो तो जातक अण्डकोश व अर्श की बिमारी को नष्ट करने वाला वैद्य, या शुक्र, सूर्य से

---

१. मनु० जा० १५ अ० ३२ श्लो० ।  २. मनु० जा० १५ अ० ३३–३४ श्लो० ।

दृष्ट हो या चन्द्रमा से दृष्ट हो तो आँखों के रोग को दूर करने वाला या दशमस्थ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक मृदुल अस्थि ( हड्डी ) सन्धियों से युक्त होता है ॥ २ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'वृषणा शिशोस्तु हन्तारिभेनयनरोगहरो विधेश्च । तद्वाहृरोगहृरणो' मृदितास्थिसंघः' यह पाठान्तर है ॥ २ ॥

## अथ भिक्षुकयोगाः ।

अब आगे जिन योगों में जातक भीख माँगने वाला होता है, उन्हें कहते हैं ।

[1]क्रूरैः केन्द्रे केन्द्रहीनैश्च सौम्यैरस्तासन्नैर्दुर्गतः स्याच्च भिक्षुः ।
पुण्येन्दुभ्यां क्रूरिताभ्यां कुजार्क्योरिन्दोर्युक्त्या खे विना सौम्यदृष्टेः ॥१॥

भौमे रिष्फगते विधौ च शनिना युक्ते कुजावेक्षिते
हीने सौम्यदृशा व्यये तु सहमेनाब्जेक्षिते क्रूरिते ।
राकादर्शपयोर्व्ययारिगतयोः पापैश्च केन्द्रस्थितै-
रिन्दोः क्रूरखगान्तरे रिपुदृशा क्रूरस्य भिक्षाटनम् ॥ २ ॥

अत्रोपयुक्तमित्थशालसहमादिकं मत्कृतहायनरत्नतो ज्ञेयम् ।

इति विशेषयोगाध्यायः ॥ ६ ॥

यदि जन्मपत्री में केन्द्र में पापग्रह हों या केन्द्र में ग्रहों का अभाव हो तो जातक दरिद्री, यदि शुभग्रह अस्तासन्न हों तो दुष्ट गति वाला भिखारी या पुण्य सहम व चन्द्रमा पापग्रह से पीडित हों या चन्द्रमा से दशम में भौम, शनि से दृष्ट हो या चन्द्रमा से दशम में शनि, भौम से दृष्ट और शुभग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक भिखारी होता है ॥ १ ॥

यदि जन्मपत्री में बारहवें भाव में भौम पापग्रह से दृष्ट हो या चन्द्रमा शनि से युक्त तथा भौम से दृष्ट हो या बारहवें भाव में पुण्य सहमेश चन्द्रमा से व शुभग्रह से अदृष्ट हो या पूर्णिमा, अमावस्या का स्वामी छठे या बारहवें हो और केन्द्र में पापग्रह हों या चन्द्रमा पापग्रहों के मध्य में क्रूर ग्रह की शत्रु दृष्टि से दृष्ट हो तो जातक भीख माँगने वाला होता है ॥ २ ॥

**विशेष**—पुस्तक में 'विधौ च शशिना' 'एकादृदयपयो' यह पाठान्तर है ॥ २ ॥

पूर्वोक्त योगों में इत्थशाल व सहमादि का ज्ञान मेरे द्वारा रचित हायनरत्न नामक ग्रन्थ से करना चाहिये ।

इस प्रकार विशेष योगों का वर्णन समाप्त हुआ ।

इति श्रीमद्दैवज्ञवर्यपण्डितदामोदरात्मजबलभद्रविरचिते होरारत्ने
नाभसयोग-विशेषयोगाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

इस प्रकार श्रीमान् दैवज्ञश्रेष्ठ पं० दामोदर जी के पुत्र पं० बलभद्र द्वारा रचित होरारत्न ग्रन्थ का नाभस व विशेष योग संज्ञक छटा अध्याय समाप्त हुआ ।

इति श्रीमथुरावास्तव्यश्रीमद्भागवताभिनवशुक पं० केशवदेवचतुर्वेदात्मजमुरलीधरचतुर्वेदकृता षष्ठाध्यायस्येन्दुमती हिन्दी व्याख्या पूर्णतां समधिगता ॥ ६ ॥

---

१. मनु० जा० १६ अ० ३–४ श्लो० ।

श्रीसत्याचार्य जी ने बारहवें, छठे, आठवें भाव में ग्रह का विपरीत फल होता है, ऐसा कहा है अब उसे बतलाते हैं।

श्रीसत्याचार्य जी का कथन है कि भावस्थ शुभग्रह भाव फल की वृद्धि और पापग्रह भाव फल का विनाश करते हैं किन्तु आठवें, बारहवें और छठे भाव में स्थित ग्रह उत्क्रम से फल देते हैं अर्थात् त्रिकस्थ शुभग्रह भाव जन्य फल की अ्ःद्धि और त्रिकस्थ पापग्रह भाव जन्य फल की वृद्धि करते हैं ॥ ३ ॥

अत्रादौ तनुभावविचारः। तत्र भावे किं विचारणीयमित्युक्तं जातकाभरणे—

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम्।
सुखानि दुःखान्यपि साहसञ्च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ॥ ४ ॥

सारावल्याम्—

[1]पश्यन् ग्रहः स्वलग्नं सर्वं विदधाति सौख्यमर्थञ्च।
प्रायो नृपप्रियत्वं पापः पापं शुभोऽपि शुभम् ॥ ५ ॥
एकेनापि शुभेन न च पापैरिष्यते बहुभिः।
[2]स्त्रीणां वश्यः सुभगो दाक्षिण्यमहोदधिः प्रचुरमित्रश्च ॥ ६ ॥
चन्द्रेक्षिते विलग्ने मार्दवजलपण्यभाग्भवेज्जातः।
गुरुबुधशुक्रैर्लग्ने निरीक्षिते भवति सज्जनः पुरुषः ॥ ७ ॥
आर्यो विज्ञस्त्यागी नृपप्रसादेन लब्धसुखनिचयः।
[3]साहससङ्ग्रामरुचिश्चण्डः स्फुटवाक् न चातिधर्मरतः ॥ ८ ॥
उदये कुजसंदृष्टे भवति नरः स्थूललिङ्गश्च।
[4]भाराध्वरोगतप्ताः कुत्सितरमणीयुता विशुभाः ॥ ९ ॥
मन्देक्षिते विलग्ने मलिना मूर्खाश्च जायन्ते।
स्वर्भानुना च दृष्टे लग्ने पुरुषो भवेत्क्रूरः ॥ १० ॥
वातव्याधिसमेतो नेत्रगदैः पीडितश्चैव।
[5]सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टे लग्ने भवेन्महीपालः ॥ १० ॥
बलिभिः समस्तसौख्यो विगतभयो दीर्घजीवी च।
[6]लग्ने त्रयोऽपि गदशोकविवर्जितानां
कुर्वन्ति जन्मशुभदाः पृथिवीपतीनाम्।
पापास्तु रोगभयशोकपरिप्लुतानां
जन्मप्रदाः सकललोकतिरस्कृतानाम् ॥ १२ ॥

---

१. सारा० ३४ अ० ८ श्लो०। २. सार० ३४ अ० २ श्लो०।
३. सारा० ३४ अ० ३ श्लो०। ४. सारा० ३४ अ० ७ श्लो०।
५. सारा० ३४ अ० ११ श्लो०। ६. सारा० ३४ अ० १२ श्लो०।

[1]लग्नात्षष्ठमथाष्टमं यदि शुभाः पापैश्च युक्तेक्षिता
मन्त्री दण्डपतिश्च भूपतिरपि स्त्रीणां बहूनां पतिः।
दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयो लग्नाधिपो वा भवेत्
सच्छीलो यवनाधिराज कथितो जातः पुमान् सौख्यभाक् ॥१३॥
स्वगृहोच्चसौम्यवर्गे ग्रहः फलं पुष्टमेव विदधाति।
नीचार्करिपुगृहस्थो विगतफलः कीर्तितो मुनिभिः ॥१४॥

अथ शरीराकारादि ज्ञानम्। तत्र वराहः[2]—

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद् वीर्ययुतग्रहतुल्यतनुर्वा।
चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः कादि विलग्नविभक्तभगात्रः ॥१५॥

अस्यार्थः। जन्मकाले यद्राशिनवांशो भवति तस्य यो ग्रहः स्वामी तस्य ग्रहयोनिभेदेध्याये यादृशं स्वरूपं निरूपितं तत्स्वरूपो जातो भवति।

अथवा सर्वापेक्षया यो ग्रहः सबलस्तदाकारो भवति। अयञ्च पक्षो नवांशराशेर्निर्बलत्वे। चन्द्रसमेति। चन्द्रो यद्राशिनवांशे भवति तत्स्वामिनो यो वर्णस्तादृशो वर्णः जातस्य भवति। अयञ्च जातिकुलदेशान् बुध्वा वक्तव्यम्। यथा काश्मीरे बहुधा गौराः हबसदेशे श्यामा एव भवन्ति तदुक्तं सूक्ष्मजातके—

'बलिनः सदृशी मूर्तिर्बुध्वा वा जातिकुलदेशान्'

कादीति। कादिषु शीर्षमुखाद्यङ्गेषु विलग्नाद्विभक्तानि भानि यस्मिन् तादृशं गात्रं यस्येति। तद्यथा। लग्नं शिरः लग्नाद् द्वितीयो राशिर्वक्त्रं, तृतीयो बाहुरित्यादिकालपुरुषाङ्गक्रमेणैव लग्नादीनां पुरुषाङ्गे विभागो बोध्यः। प्रयोजनञ्च यत्राङ्गे अल्पप्रमाणराशावल्पराश्यधिपो ग्रहो भवति स तदाङ्गान्यल्पत्वकृद्भवति। दीर्घराशौ दीर्घराश्यधिपो ग्रहो भवति तदङ्गस्य दीर्घत्वं भवति। दीर्घराश्यधिपोऽल्पराशिव्यवस्थितो यदि तदा तदङ्गस्य मध्यत्वकृत्। अल्पराश्यधिपो यदि दीर्घराशौ व्यवस्थितस्तदापि तदङ्गमध्यत्वकृत्। यदि च तत्र बहवो ग्रहास्तदा बलवद्ग्रहवशान्निर्णयः। यदि च न कोऽपि ग्रहस्तदा राशिप्रमाणमेवाङ्गं वाच्यमिति।

अब आगे प्रथम भाव के विचार को कहते हैं। पूर्व में जातकाभरण के आधार पर लग्न भाव से किन किन वस्तुओं का विचार होता है इसे बताते हैं।

जातकाभरण नामक ग्रन्थ में कहा है कि लग्न से मनुष्य के रूप, वर्ण ( रङ्ग ) चिन्ह, जाति, अवस्था, सुख, दुःख और साहस का विचार करना चाहिये ॥ ४ ॥

सारावली में कहा है कि यदि जन्म के समय में कोई भी ग्रहलग्नस्थ अपनी राशि को देखता हो तो जातक समस्त सुखों को प्राप्त करने वाला, धनी और प्रायः राजा

---

१. सारा० ३४ अ० १३ श्लो०। २. बृ० जा० ५ अ० २३ श्लो०।

का प्रिय होता है। यदि लग्न शुभग्रह से दृष्ट हो तो शुभ फल और पापग्रह से दृष्ट हो तो अशुभ फल होता है ॥ ५ ॥

यदि एक भी शुभ ग्रह से दृष्ट लग्न हो तो शुभ फल अर्थात् अभीष्ट की सिद्धि होती है और अधिक पाप ग्रहों से दृष्ट लग्न अशुभ फलदायी या यों समझिये इष्ट फल-दायक नहीं होता है।

यदि जन्म लग्न, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक स्त्रियों के वशीभूत सुन्दर भाग्यवान्, चतुरता का समुद्र अर्थात् परम चतुर, अधिक मित्रों से युक्त, सरल स्वभाव का और जल का व्यवसायी होता है ॥६–६½ ॥

विशेष—प्रकाशित सारावली में 'प्रचुरकोशः' 'पण्यवान्' यह पठान्तर है ॥६–६½॥

यदि जन्म के समय में लग्न, गुरू शुक्र, बुध से दृष्ट हो तो जातक सज्जन, श्रेष्ठ, विद्वान्, त्यागी, राजा की कृपा से सुखों को प्राप्त करने वाला होता है ॥ ६½–७½ ॥

यदि जन्म के समय में लग्न, भौम से दृष्ट हो तो जातक साहसी, युद्ध में इच्छा रखने वाला, उग्र, स्पष्ट वक्ता, अधिक धर्म में अनासक्त और स्थूल लिङ्गधारी होता है ॥७½-८½॥

विशेष—प्रकाशित सारावली में 'स्फुटबान्धवोऽतिधर्मरतः' 'स्थूलशोफश्च' यह पाठान्तर प्राप्त है। तथा बुध, गुरू, शुक्र की दृष्टि के फल भी पृथक् पृथक् उपलब्ध होते हैं ॥७½–८½॥

यदि जन्म के समय लग्न, शनि से दृष्ट हो तो जातक वजन व मिर्गी रोग से पीडित, दूषित स्त्री से युक्त, अशुभी, मलिन व मूर्ख होता है ॥८½-९½॥

विशेष—प्रकाशित सारावली में 'क्रुद्धवृद्धस्त्रिया युता विसुखाः' यह पठान्तर प्राप्त है ॥८½–९½॥

यदि जन्म के समय में लग्न, राहु से दृष्ट हो तो जातक क्रूर, वायुरोग से युक्त और आँख की बीमारी से पीडित होता है।

यदि जन्म के समय में बली समस्त ग्रहों से लग्न दृष्ट हो तो जातक समस्त सुखों से युक्त, निर्भीक, दीर्घायु राजा होता है ॥९½–११॥

अब आगे लग्नस्थ तीन शुभ व पापग्रह के फल को बताते हैं।

यदि जन्म के समय में तीन शुभ ग्रह लग्न में हों तो जातक रोग व शोक से हीन राजा होता है। यदि तीन पापग्रह लग्न में हों तो जातक रोग, शोक, भय से व्याप्त और समस्त जनों से तिरस्कृत होता है ॥१२॥

विशेष—प्रकाशित सारावली में 'त्रयो विगतशोकविवर्द्धितानां' 'बह्वाशिनां सकल' यह पठान्तर प्राप्त है ॥१२॥

अब आगे लग्न से ६,८ में स्थित शुभग्रह, पापग्रह से दृष्ट व युक्त होने पर जो फल होता है, उसे कहते हैं।

यदि जन्म के समय में छठे, सातवें, आठवें भाव में शुभ ग्रह या लग्नेश पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो जातक सचिव, न्यायाधीश, राजा, अधिक स्त्रियों का पति, दीर्घायु,

रोग से रहित, निर्भीक, सुशील और सुखी होता है। ऐसा यवनाधिराज का कथन है ॥१३॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'लग्नात्षष्ठमदाष्टमे' 'पापैर्न युक्तेक्षिता:' 'क्षितेरधिपति:' 'लग्नाधियोगे भवेत्' यह पठान्तर प्राप्त है ॥१३॥

अब आगे लग्नस्थ ग्रह के फल कथन में विशेष ध्यान देने योग्य बात को बताते हैं।

यदि जन्म के समय में लग्नस्थ ग्रह अपनी राशि में या उच्च राशि में या शुभ ग्रह के वर्ग में हो तो पूर्ण फल प्रदान करता है।

यदि लग्नस्थ ग्रह नीच राशि में या अस्त या शत्रु की राशि में हो तो फल देने में असमर्थ होता है ॥ १४ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में—'नीचर्क्षरिपुगृह' यह पाठान्तर प्राप्त है ॥ १४ ॥

अब आगे जातक के शरीर का आकारादि कैसा होना चाहिये, इसे वराहमिहिरोक्त बृहज्जातक के वाक्य से कहते हैं।

जन्मकाल के समय जिस राशि का नवांश लग्न में हो उस राशि के स्वामी ग्रह के समान ग्रह योनि भेदाध्याय में कथित उसके स्वरूप के समान जातक का स्वरूप होता है।

अथवा जन्माऽङ्ग में जो सबसे बली ग्रह हो उसके समान जातक का स्वरूप होता है। यह पक्ष उसी समय ग्रहण करना चाहिये जब कि नवांश राशि निर्बल हो।

**वर्ण**—जन्म के समय में चन्द्रमा जिस राशि के नवांश में हो उस राशि का जो स्वामी ग्रह हो उसके वर्ण के समान जातक का रङ्ग होता है। वर्ण का ज्ञान जाति व कुल देश को जानकर करना चाहिये। जैसे काश्मीर देश में अक्सर गौर ( सफेद ) रङ्ग के और हबस देश में प्राय: काले रङ्ग के मनुष्य ही होते हैं।

आचार्य वराह ने लघु जातक में कहा है कि जन्म के समय में जाति, कुल व देश को जानकर बलवान् ग्रह के तुल्य जातक का वर्ण कहना चाहिये।

आगे वर्णित श्लोक के अनुसार मस्तकादि अङ्गों में लग्नादि राशियों द्वारा विभाजित जातक के अवयवों को जानकर उन अङ्गों का फल कहना चाहिये। इस अङ्ग विभाग का यह मतलब है कि शीर्षादि स्थान में जिस स्थान में अल्प प्रमाण राशि हों या अल्प प्रमाण राशि का स्वामी ग्रह हो वह जातक का अवयव छोटा होता है। यदि दीर्घ राशि में दीर्घ राशि का स्वामी ग्रह जिस अवयव में स्थित हो वह अवयव जातक का बड़ा होता है।

यदि दीर्घ राशि का स्वामी ग्रह अल्प राशि में स्थित हो या अल्प राशि का स्वामी ग्रह दीर्घ राशि में हो तो वह मध्यम होता है अर्थात् न छोटा न बड़ा होता है। यदि एक राशि में अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली हो उसके आधार पर अङ्ग का ज्ञान करके कहना चाहिये। यदि किसी राशि में कोई ग्रह न हो तो राशि के प्रमाणवश ही उस अवयव को जानना चाहिये ॥ १५ ॥

अथ व्रणचिह्नज्ञानम्।

तत्र वराहः—

कं दृक्छ्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रञ्च होरादय-
स्ते कण्ठांसकबाहुपार्श्वहृदयक्रोडानि नाभिस्ततः।
वस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जङ्घाङ्घ्रीत्युभयत्र वाममुदितं द्रेष्काणभागैस्त्रिधा॥ १६॥
तस्मिन् पापयुते व्रणः शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्
स्वर्क्षांशस्थिरसंयुते तु सहजः स्यादन्यथागन्तुकः।
मन्देऽश्मानिलजोऽग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे भूभुवः
[1]सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन हिमगौ शृङ्ग्यब्जजोऽन्यैः शुभम्॥ १७॥

अत्रेदं तात्पर्यं त्रिंशदंशात्मकस्य लग्नस्य हि त्रयो द्रेष्काणाः। तत्र प्रथम-द्रेष्काणे उदयति लग्नादिद्वादशभावक्रमेण मस्तकाद्यङ्गविभागः।

तद्यथा—लग्नराशिः कं शिरः, लग्नाद्द्वितीयद्वादशे दृशौ नेत्रे, तृतीयैकादशे श्रोत्रे, चतुर्थदशमे नासिके, पञ्चमनवमे कपोलौ, षष्ठाष्टमौ हनू, सप्तमो वक्त्रम्। एवं द्वितीये द्रेष्काणे उदयति कण्ठाद्यङ्गविभागः। तद्यथा—

लग्नं कण्ठं, द्वितीयद्वादशौ स्कन्धौ, तृतीयैकादशे बाहू, चतुर्थदशमौ पार्श्वे, पञ्चमनवमौ हृदयं, षष्ठाष्टमौ उदरभागौ, सप्तमो नाभिरिति।

अथ तृतीयद्रेष्काणे उदयति वस्त्याद्यङ्गविभागः। तद्यथा—

लग्नं वस्तिर्नाभ्यधोभागः, द्वितीयद्वादशौ शिश्नगुदौ शिश्नगुदयोर्दक्षिणभागो द्वितीयः, द्वादशो वाम इति, तृतीयैकादशौ वृषणौ, चतुर्थदशमावूरू, पञ्चमनवमौ जानुनी, षष्ठाष्टमौ जङ्घे, सप्तमः पादद्वयम्।

वामदक्षिणाङ्गज्ञानार्थमाह—वाममुदितैरिति। सप्तमभावस्यानुदितांशमारभ्य लग्नोदितभोग्यं यावद्वामाङ्गविभागः, अर्थादेवापरार्धे दक्षिणोऽङ्गविभागः। तद्यथा—पूर्वं द्वितीयद्वादशभावौ दृशौ तत्र द्वितीयदक्षिणाङ्गविभागे सत्त्वात्। द्वितीयो दक्षिणा दृक् द्वादशस्य वामाङ्गविभागे सत्त्वाद् द्वादशो वामदृगेवमग्रे श्रोत्रादीनां वामदक्षिणाङ्गविभागो ज्ञेयः।

एतस्याङ्गविभागस्य प्रयोजनमाह—तस्मिन् पापयुत इत्यादि। आगन्तुको व्रणस्तु यद्ग्रहकृतो भवति तादृशो व्रणस्तद्ग्रहदशायां वाच्य इति ज्ञेयम्।

---

१. बृ० जा० ५ अ० २४–२५ श्लो०।

द्रेष्काण विभाग वश जिस अङ्ग में पापग्रह हों उसमें चोट या घाव होता है। यदि पापग्रह शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो तिल मसादि होता है। यदि वह तिल मसादि करने वाला ग्रह अपनी राशि अपने अंश में हो अथवा स्थिर राशि में या स्थिर राशि के नवांश में हो तो उस अङ्ग में तिल मसा आदि चिह्न जन्म से ही होता है। यदि ऐसा न होकर इसके विपरीत हो तो भविष्य में अर्थात् पीछे चिह्न होगा। ऐसा समझना चाहिये। यदि व्रण करने वाला शनि ग्रह हो तो पत्थर से या वायु जन्य रोग से, यदि भौम व्रण करने वाला हो तो अग्नि से या शस्त्र से या विष से चिह्न होगा। यदि बुध हो तो भूमि में गिरने से या मिट्टी मारने से, सूर्य हो तो काष्ठ से या पशु से, चन्द्रमा हो तो सींग वाले या जल जन्तु से व्रणादि होते हैं। गुरू शुक्र शुभ होते हैं व्रण कारक नहीं होते हैं ॥ १७ ॥

अब आगे घाव के ज्ञान को बतलाते हैं।

यदि कुण्डली में वाम वा दक्षिण जिस विभाग में बुध के साथ तीन ग्रह हों उस अङ्ग में अवश्य चिह्न होता है। उन ग्रहों में भी जो विशेष बली अर्थात् सबसे बलवान् हो उसकी दशा में व्रणादि चिन्ह कहना चाहिये।

यदि छठें भाव में कोई पाप ग्रह हो तो पूर्वोक्त काल पुरुष के शरीर विभाग के आधार पर उस भाव में जो अवयव हो उस शरीरावयव में चिह्न समझना चाहिए। यहाँ भी षष्ठस्थ पापग्रह यदि स्थिर राशि व स्थिर राशि नवांश में या अपनी राशि या अपने नवांश में हो तो जन्म से अन्यथा पीछे व्रणादि का चिह्न होता है। यदि पापग्रह शुभग्रह से दृष्ट हो तो तिल या मसा और पापग्रह शुभग्रह से युक्त हो तो लहसन होता है ॥ १८ ॥

अब आगे व्रण चिह्नों का ज्ञान जातक मुक्तावली नामक ग्रन्थ के आधार पर कहते हैं।

यदि कुण्डली में लग्न से सप्तम भाव में भौम वा शुक्र वा गुरू हो तो जातक के मस्तक में अवश्य चिन्ह होता है ॥ १९ ॥

यदि कुण्डली में लग्न में शुक्र वा भौम वा चन्द्रमा हो तो जातक के मस्तक में बारहवें वर्ष में अग्नि से चिह्न होता है ॥ २० ॥

यदि कुण्डली में लग्न से अष्टम भाव में राहु और लग्न में शुक्र हो तो जातक के बायें कान में अवश्य चिह्न होता है ॥ २१ ॥

यदि कुण्डली में लग्न से सप्तम में राहु और लग्न में गुरू हो तो जातक के बांयें हाथ में चिह्न होता है ॥ २२ ॥

यदि कुण्डली में लग्न से बारहवें या आठवें भाव में शुक्र और लग्न में गुरू हो तो जातक के हाथों में चिह्न होता है ॥ २३ ॥

यदि कुण्डली में तीसरे या छठे या ग्यारहवें भौम हो और भौम के साथ शुक्र हो तो जातक की बायीं बगल में हाथ के समीप चिह्न होता है ॥ २४ ॥

यदि कुण्डली में बुध शनि लग्न में हो या सूर्य दशम में हो तो दाहिनी बगल में जातक के चिन्ह होता है ॥२५॥

यदि कुण्डली में लग्न में भौम या बुध हो और राहु छठे या पांचवें या नवें हो तो जातक के लिङ्ग या गुदा में तिल मसादि का चिन्ह होता है ॥२६॥

यदि कुण्डली में पाँचवें या नवें भाव में शुक्र और गुरू व बुध अष्टम में तथा सप्तम या चौथे भाव में शनि हो तो जातक के पेट में चिन्ह होता है ॥२७॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में शुक्र व अष्टम में सूर्य और दशम भाव में राहु शनि हों तो जातक की नाभि में चिन्ह होता है ॥२८॥

यदि कुण्डली में दशम भाव में गुरू व दूसरे में चन्द्रमा और तीसरे भाव में शुक्र व राहु हों तो जातक की कमर में चिन्ह होता है ॥२९॥

यदि कुण्डली में बारहवें भाव में गुरू व तीसरे छठे ग्यारहवें भाव में बुध और नवम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक की गुदा में चिन्ह होता है ॥३०॥

यदि कुण्डली में चतुर्थ भाव में शुक्र राहु व लग्न में भौम शनि हों तो जातक के टकुना में या पैर वा हाथों में मछली का चिन्ह होता है ॥३१॥

अब आगे यवनाचार्य जी द्वारा कथित चिन्ह योगों को बताते हैं।

यदि कुण्डली में लग्नस्थ पापग्रह नीच राशि में शुभ ग्रह से रहित हो तो जातक काले दांत वाला, कर्त्तव्यहीन और चुगलखोर होता है ॥३२॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में भौम व चौथे में शनि, या बारहवें में शत्रु के नवांश में हो तो जातक पागल, सब जगह निन्दनीय और स्मरण शक्ति से हीन होता है ॥३३॥

यदि कुण्डली में भौम से पाँचवें या नवें भाव में सूर्य हो और शनि, बुध की राशि में हो तो जातक लम्बी जानु वाला, स्वरूपहीन और साहस प्रेमी होता है ॥३४॥

यदि कुण्डली में अष्टम भाव में शनि और बारहवें भाव में भौम हो तो जातक घाव युक्त, निरन्तर स्वरूपहीन, सन्तान से रहित, चुगलखोर और पाप में अनुरक्त होता है ॥३५॥

यदि कुण्डली में शुभग्रह के नवांश में बुध लग्न में हो तो जातक की आँख, मुख, कन्धा और छाती सुन्दर होती हैं।

यदि लग्न में चन्द्रमा की राशि हो तो हाथ व घाय शुभ तथा बुध का त्रिशांश हो तो जातक सुशील होता है ॥३६॥

यदि कुण्डली में बुध के द्वादशांश में लग्न हो तो जातक की जानु व पसुली सुन्दर होती है। यदि शुभग्रह से दृष्ट लग्न हो तो जातक अभीष्ट पराक्रमी व ओजस्वी होता है ॥३७॥

गर्गः—

प्रचण्डरूपो विकलेक्षणश्च भवेन्निशान्धः किल बुद्बुदाक्षः।
कण्ठे ग्रहः स्यान्मदरक्तनेत्रो रवौ तनुस्थे रूधिरेक्षणः स्यात् ॥३८॥

पूर्णे शीतकरे लग्ने सुरूपो धनवान्मृदुः।
असंपूर्णे तु मलिनो मन्दवीर्यो भवेत्सदा ॥३९॥
गोमेषकर्कटे लग्ने चन्द्रस्थे रूपवान् धनी।
जडता व्याधिदारिद्र्यं शेषर्क्षे कुरुते शशी ॥४०॥
गुदरोगी बृहन्नाभिः कुब्जं कुष्ठादिसंयुतः।
मध्यदेशे भवेद्व्यङ्गः स त्राच्यो लग्नगे कुजे ॥४१॥
सुमूर्तिर्निपुणः शान्तो मेधावी च प्रियंवदः।
विद्वान् दयालुरत्यर्थं विना क्रूरे बुधे तनौ ॥४२॥
कविः सुगीतः प्रियदर्शनः शुचिर्दाताथ भोक्ता नृपपूजितश्च।
सुखी च देवार्चनतत्परश्च धनी भवेद्देवगुरौ तनुस्थे ॥४३॥
वाचालः सत्यशीलाढ्यो विनीतो गीततत्परः।
काव्यशास्त्रविनोदी च धार्मिको लग्नगे भृगौ ॥ ४४ ॥
कण्डूतिदुर्नामकफप्रवृत्तिर्लग्ने शनौ स्यात्सततं नराणाम्।
हीनाधिकाङ्गत्वमथ प्रदेशे कालान्तरे वातगदः सदैव ॥ ४५ ॥
सर्वाङ्गरोगी विकलः कुमूर्तिः कुचैलधारी कुनखी कुकर्मा।
अधार्मिकः साहसकर्मदक्षो रक्तेक्षणश्चन्द्ररिपौ तनुस्थे ॥ ४६ ॥
राहौ लग्नगते जातः सक्षयो यत्र कुत्रचित्।
सिंहकर्किणि मेषे च स्वर्णलाभाय मङ्गलः ॥ ४७ ॥
यस्य लग्नोपगः केतुस्तस्य भार्या विनश्यति।
बहुरोगस्तथा व्याधिर्मिथ्यावादी च जायते ॥ ४८ ॥
तुलाकोदण्डमीनानां लग्नसंस्थः शनैश्चरः।
करोति भूपतिं जातमन्यराशौ गतायुषम् ॥ ४९ ॥

इति चिह्नज्ञानम्।

अब आगे गर्गोक्त वाक्यों से लग्नस्थ ग्रहों के फल को बताते हैं।

**सूर्य**—यदि जन्म के समय में लग्न में सूर्य हो तो जातक प्रचण्ड स्वरूप, अशान्त आँख वाला, रात्रि में अन्धा, बुदबुद ( पुनः पुनः खुलने व मूँदने वाले ) नेत्र वाला, कण्ठ में पीड़ा वाला, नशे से लाल आँख वाला और क्रोध भरी लाल आँखों से युक्त होता है ॥ ३८ ॥

**चन्द्रमा**—यदि जन्म के समय में लग्न में परिपूर्ण चन्द्रमा हो तो जातक स्वरूपवान्, धनी, सरल और अपूर्ण चन्द्रमा लग्नस्थ हो तो जातक दूषित और अल्प पराक्रमी होता है ॥ ३९ ॥

यदि लग्नस्थ चन्द्रमा मेष या वृष या कर्क राशि में हो तो जातक रूपवान् और धनी शेष राशियों में चन्द्रमा हो तो जातक मूर्ख, रोगी और दरिद्री होता है ॥ ४० ॥

एवं शुभफलस्योक्तो निर्णयो भावनार्थतः ।
अशुभस्य क्षयस्तस्मिन् सबले विबले चयः ॥ ५३ ॥
तीव्रो १ दृढाङ्गो २ बह्वाशी ३ रोगी ४ लावण्यवर्जितः ५ ।
अन्धो ६ दीर्घोऽ७थ जटिलोऽ८धिकाङ्गो ९ हीनकाङ्क्षकः १० ॥ ५४ ॥
दीनः ११ स्यान्नीतिरहितः १२ सूर्ये तनुगते क्रमात् ।
पूर्णो १ मनोहरः २ स्वच्छः ३ क्षीणो ४ रात्र्यन्धतान्वितः ५ ॥ ५५ ॥
तिमिरांशोऽ६तिसुभगः ७ सुमुखो ८ रम्यकेशकः ९ ।
स्थूलास्यो १० दीर्घयुङ्नासः ११ शुभेष्टोऽ१२ब्जे तनुस्थिते ॥ ५६ ॥
रक्तनेत्रो १ चिपिटदृक् २ कर्कशाक्षाऽऽन्धतायुतः ४ ।
नक्तान्ध५स्तिमिरोपेतो ६ क्रूरदृक् ७ स्थूललोचनः ८ ॥ ५७ ॥
नेत्ररोगी ९ दूरदर्शी १० कुदृष्टिः ११ सविघेक्षणः १२ ।
जन्मनादृक् फलं भौमे तनुभावस्थिते क्रमात् ॥ ५८ ॥
सवक्रनासिकायुक्तः १ सुलम्बोष्ठस्तु २ कान्तिमान् ३ ।
दुर्गन्धाऽस्यो ४ दीर्घजिह्वो ५ दीर्घकर्णोऽ६ऽसितालकः ७ ॥ ५९ ॥
शुभ्रकण्ठोऽ८तिसुभगः ९ करालः १० चपलः ११ तथा ।
मेदोवृद्ध्यतिपुष्टाङ्गो १२ बुधे स्यात्तनुभावगे ॥ ६० ॥
सुन्दरः १ सुन्दरकरः २ सुकूर्चो ३ रोगवर्जितः ४ ।
सुज्ञः ५ सुभूषः ५ सद्वक्त्रः ७ सुनाभिकटिसंयुतः ८ ॥ ६१ ॥
शुभोरुः ९ क्रोडरोगी च १० पाण्डुरोग ११ समान्वतः ।
सुलिङ्गनातिसौभाग्यसंयुतः १२ तनुगे गुरौ ॥ ६२ ॥
स्वास्यजानुः १ सुकरपा २ द्विभक्ताङ्गोऽ३ल्पकेशकः ४ ।
खल्वाटो ९ बहुरोगाढ्यो ६ कान्तिसौभाग्यसंयुतः ७ ॥ ६३ ॥
सुमुखश्च - सुरूपश्च ९ कुब्जोऽ१०पि गतगन्धवान् ११ ।
नेत्राभिरामो १२ भृगुजे क्रमेण तनुभावगे ॥ ६४ ॥
श्यामवर्णो १ भिन्नवर्णो २ भिन्नाङ्गो ३ भ्रमकाशवान् ४ ।
कफानिलाढ्यः ५ पित्ताढ्यो ६ गौरः ७ सततरोऽस्थिवान् ८ ॥ ६५ ॥
पीवरः ९ स्थूलनखता सूक्ष्मताभ्यां समन्वितः १० ।
स्थूलदन्तो ११ दीर्घजानुः १२ शनौ स्यात्तनुभावगे ॥ ६६ ॥

अब आगे यवनोक्त लग्नादि भावों के विशेष फल को कहते हैं। प्रथम लग्नस्थ विशेष फल को कश्यप जातक के वाक्यों से बतलाते हैं।

लग्नस्थ कोई भी ग्रह १ अपनी उच्च राशि, २ उच्च राशि नवांश, ३ शुभग्रह के वर्ग में ४ नीचराशि में, ५ नीचराशि के नवांश में, ६ पापग्रह के वर्ग में, ७ मित्र राशि में, ८ मित्र राशि के नवांश में, ९ वर्गोत्तम में, १० शत्रु की राशि में, ११ शत्रु

राशि के नवांश में १२ और अपनी राशि में इस प्रकार बारह परिस्थितियों में लग्नभाव जन्य यवनाचार्यजी द्वारा कथित लग्नेश की बलता या निर्बलता के आधार पर पूर्णापूर्ण फल शुभग्रह का होता है। यदि शुभग्रह पापग्रह से युक्त हो तो फल देने में असमर्थ होता है।

यदि लग्नस्थ पापग्रह बली हो तो फल का क्षय और निर्बल हो तो फल की वृद्धि होती है ॥ ५०-५३ ॥

**सूर्य**—यदि लग्नस्थ सूर्य अपनी उच्चराशि में तो जातक १ तोखा यदि उच्च राशि नवांश में हो तो २ मजबूत शरीरवाला, यदि शुभग्रह के वर्ग में हो तो ३ अधिक खाने वाला, यदि नीच राशि में हो तो ४ रोगग्रस्त यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ सुन्दरता से हीन, यदि पापग्रह के वर्ग में हो तो ६ अन्धा, यदि मित्र की राशि में हो तो ७ लम्बा, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ जटिल, यदि वर्गोत्तम राशि में हो तो ९ किसी शरीर के अवयव की अधिकता से युक्त, यदि शत्रु राशि में हो तो १० किसी शरीर के अवयव से हीन, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ दीन और यदि अपनी राशि में सूर्य लग्न में हो तो जातक १२ नीति से रहित होता है ॥५४-५४½ ॥

**चन्द्र**—यदि लग्न में उच्च राशि में चन्द्रमा हो तो जातक १ मन की इच्छाओं से समस्त रीति से परिपूर्ण, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो ३ सुन्दर, यदि शुभ वर्ग में हो तो ३ स्वच्छ ( पवित्र ), यदि नीच राशि में हो तो ४ क्षीण ( ह्रासोन्मुख ), यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ रात्रि में अन्धा होने वाला या यों समझिये रतोंदी वाला, यदि पापग्रह के वर्ग मे हो तो ६ अन्धकार से युक्त, यदि मित्र की राशि में हो तो ७ अत्यन्त भाग्यशाली, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ सुन्दर मुखवाला, यदि वर्गोत्तम राशि में हो तो ९ सुन्दर बार वाला, यदि शत्रु राशि में हो तो १० स्थूल मुख, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ लम्बी नाक वाला और लग्नस्थ चन्द्रमा यदि अपनी राशि मे १२ हो तो जातक शुभ इच्छा करने वाला होता है ॥ ५४½-५६ ॥

**भौम**—यदि लग्नस्थ भौम उच्च राशि में हो तो जातक १ लाल आँख वाला, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ चिपिटी आँख वाला, यदि शुभ राशि वर्ग में हो तो ३ कठोर दृष्टि वाला, यदि नीच राशि में हो तो ४ अन्धा, यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ रतोंदी वाला यदि पापग्रह के वर्ग में हो तो ६ अन्धकार से युक्त, यदि मित्र की राशि में हो तो ७ कठोर दृष्टि वाला, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ स्थूल नेत्र वाला, यदि वर्गोत्तम राशि में हो तो ९ आँखों का रोगी, यदि शत्रु की राशि में हो तो १० दूरदर्शी ( विद्वान्), यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ दूषित दृष्टि वाला और लग्नस्थ भौम यदि अपनी राशि में हो तो जातक पास से देखने वाला या यों समझिये पास ( नजदीक ) की दृष्टि वाला होता है । ५७-५८ ॥

**बुध** यदि लग्नस्थ बुध उच्च राशि में हो तो १ टेढ़ी नाक वाला, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ सुन्दर लम्बे ओष्ठ वाला, यदि शुभग्रह के वर्ग में हो तो ३

तेजस्वी या शोभा से युक्त, यदि नीच राशि में हो तो ४ मुख में दुर्गन्ध वाला, यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ लम्बी जीभ वाला, यदि पापग्रह के षड्वर्ग में हो तो ६ लम्बे कान वाला, यदि मित्र की राशि में हो तो ७ तलवार के समान लम्बे तलवे वाला, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ उद्दीप्त गले वाला, यदि वर्गोत्तम में हो तो ९ अधिक भाग्यवान्, यदि शत्रु की राशि में हो तो १० बड़े दाँत वाला या भयङ्कर, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ चपल और लग्नस्थ बुध यदि अपनी राशि में हो तो जातक मांस की अधिकता से पुष्ट ( स्थूल ) शरीरधारी होता है ॥ ५९-६० ॥

**गुरू**—यदि लग्नस्थ गुरू उच्च राशि में हो तो जातक १ सुन्दर, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ सुन्दर कार्य करने वाला या सुन्दर हाथ वाला, यदि शुभ राशि के वर्ग में हो तो ३ सुन्दर भौंह के मध्य भाग से युक्त, यदि नीच राशि में हो तो ४ रोग से रहित, यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ सुन्दर ज्ञाता, यदि पापग्रह के षड्वर्ग में हो तो ६ सुन्दर वेषधारी, यदि मित्र राशि में हो तो ७ अच्छे वस्त्र पहनने वाला, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ सुन्दर नाभि और कमर से युक्त, यदि वर्गोत्तम राशि में हो तो ९ शुभ वक्षस्थल वाला, यदि शत्रु की राशि में हो तो १० पेट का रोगी, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ पाण्डु ( पीलिया ) रोग से युक्त और लग्नस्थ गुरू यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक सुन्दर लिङ्ग वाला और अत्यन्त सौभाग्य से युक्त होता है ॥ ६१-६२ ॥

**शुक्र**—यदि लग्नस्थ शुक्र उच्च राशि में हो तो १ जातक सुन्दर मुख व जानु वाला, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ सुन्दर हाथ व पैर वाला, यदि शुभग्रह के वर्ग में हो तो ३ विभक्त शरीर वाला, यदि नीच राशि में हो तो ४ छोटे-छोटे बाल वाला, यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ खल्वाट, यदि पापग्रह के षड्वर्ग में हो तो ६ अधिक रोगों से युक्त, यदि मित्र की राशि में हो तो ७ कान्तिमान् और सौभाग्यवान्, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ सुन्दर मुख वाला, यदि वर्गोत्तम राशि में हो तो ९ स्वरूपवान्, यदि शत्रु की राशि में हो ता १० कुबड़ा, यदि शत्रु राशि के नवांश में हा तो ११ गन्ध से रहित और लग्नस्थ शुक्र यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक नेत्रों को सुख देने वाला या यों समझिये परम दर्शनीय होता है ॥ ६३-६४ ॥

**शनि**—यदि कुण्डली में लग्नस्थ शनि अपनी उच्च राशि में हो तो १ जातक काले रङ्ग का, यदि उच्च राशि के नवांश में हो ता २ भिन्न वर्ण, यदि शुभ राशि के वर्ग में हो तो ३ भिन्न ( फटा हुआ ) शरीरधारी, यदि नीच में भ्रम व खासी से युक्त, ४ यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ कफ और वायु से युक्त, यदि क्रूर ग्रह षड्वर्ग में ६ हो तो पित्त से युक्त, यदि मित्र राशि में हो तो ७ सफेद, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ हड्डियों से युक्त, यदि वर्गोत्तम राशि में हो तो ९ मोटा यदि शत्रु की राशि में हो तो १० मोटे व छोटे नखों से युक्त, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो

११ मोटे दाँत वाला और लग्नस्थ शनि यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक लम्बे घुटना वाला होता है ॥ ६५-६६ ॥

अथ तनुभावराशिफलम् ।

वृद्धयवनः—

मेषोदये रक्ततनुर्मनुष्यः सदाल्पबुद्धिः परनिर्जितश्च ।
पित्ताधिकः सर्वजनोपसेव्यः सर्वाशनो बुद्धिविचक्षणश्च ॥ १ ॥
वृषोदये श्वेततनुर्मनुष्यः श्लेष्माधिकः क्रोधपरः कृतघ्नः ।
सुमन्दबुद्धिः स्थिरता समेतः पराजितः स्त्रीभृतकैः सदैव ॥ २ ॥
तृतीयलग्ने पुरुषोऽतिगौरः स्त्रीरक्तचित्तो नृपपीडिताऽङ्गः ।
हृनः प्रसन्नः प्रियवाग् विनीतः सुमूर्धजो गीतविचक्षणश्च ॥ ३ ॥
कर्कोदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकः कल्यतनुः प्रगल्भः ।
जलावगाहानुरतोऽतिबुद्धिः शुचिः क्षमी धर्मरुचिः सुसेव्यः ॥ ४ ॥
सिंहोदये पाण्डतनुर्मनुष्यः पित्तानिलाभ्यां परिपीडिताऽङ्गः ।
प्रियाऽमिषोऽरण्यचरः सुतीक्ष्णः शूरःप्रगल्भः सुतरां निरीहः ॥ ५ ॥
कन्या विलग्ने कफपित्तयुक्तो भवेन्मनुष्यः सुतकान्तिभाजः ।
श्लेष्मो प्रज्ञः स्त्रीविजितोऽतिभीरुः मायाधिकः कामुकरर्थिताऽङ्गः ॥६॥
तुलाविलग्ने च भवेन्मनुष्यो श्लेष्मायुतः सत्यरतः सदैव ।
पण्यप्रियः पार्थिवमानयुक्तः सुराचने तत्पर एव भक्तः ॥ ७ ॥
लग्नेऽष्टमे कोपपरो न सत्त्वो भवेन्मनुष्यो नृपपूजिताऽङ्गः ।
गुणान्वितः शास्त्रकथानुरक्तः प्रमर्दकः शत्रुगणस्य नित्यम् ॥ ८ ॥
धनोदये राजयुतो मनुष्यः कार्ये प्रधृष्यो द्विजदेवभक्तः ।
तुरङ्गयुक्तो सुहृदैः प्रयुक्तस्तुरङ्गजङ्घश्च भवेत्सदैव ॥ ९ ॥
मृगोदये तोपरतः सुताम्रो भीरुः सदा पुण्यनिषेवकश्च ।
श्लोष्मानिलाभ्यां परिपीडिताऽङ्गःसुदीर्घगात्रः परवञ्चकश्च ॥ १० ॥
घटोदये सुस्थिरतासमेतो वाताधिकस्तोषनिषेवणोक्तः ।
सुहृत्सुगात्रः प्रमदास्वभीष्टः शिष्टानुरक्तो जनवल्लभश्च ॥ ११ ॥
मीनोदये तोयरतो मनुष्यः भवेद्विनीतः सुरतानुकूलः ।
सुपण्डितः स्त्रीदयितः प्रचण्डः पित्ताधिकः कीर्तिसमन्वितश्च ॥१२॥

अब आगे वृद्धयवनोक्त लग्नस्थ बारह राशियों के फल को कहते हैं ।

**लग्नस्थ मेष राशि का फल—**

यदि जन्म के समय में लग्न में मेष राशि हो तो जातक लाल शरीरधारी, सदा अल्प ( लघु ) बुद्धि वाला, दूसरे से पराजित, अधिक पित्त वाला, समस्त जनों का सेवनीय, समस्त वस्तु खाने वाला और बुद्धि से विद्वान् होता है ॥ १ ॥

**दशमभावस्थ लग्नेश का फल —**

यदि जन्मपत्री में लग्नेश दशम भाव में हो तो जातक राजा से लाभ करने वाला, विद्वान्, सुशील, गुरू व माता की पूजा में बुद्धि रखने वाला, राजा और सम्पत्तिशाली होता है ॥ १० ॥

**एकादशस्थ लग्नेश का फल —**

यदि जन्मपत्री में लग्नेश ग्यारहवें भाव में हो तो जातक सुन्दर जीवन व्यतीत करने वाला, पुत्रवान्, प्रसिद्ध तेजस्वी, बली व सुखी होता है ॥ ११ ॥

**द्वादशस्थ लग्नेश का फल—**

यदि जन्मपत्री में लग्नेश बारहवें भाव में हो तो जातक चातुर्यता से बोलने वाला, बुद्धिमान्, अपने गोत्र वालों से प्रेम करने वाला, विदेशवासी, दानी व भोगी होता है ॥ १२ ॥

इस प्रकार लग्न भाव का विचार समाप्त हुआ ॥ १-१२ ॥

अथ धनभावचिन्ता । तत्र धनभावे किं चिन्त्यमित्युक्तं

जातकाभरणे—

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयाश्च रत्नादि कोशोऽपि सङ्ग्रहाश्च ।
एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ १ ॥

अब आगे द्वितीय भाव का विचार कहते हैं । प्रथम जातकाभरणोक्त वाक्य से यह बतलाते हैं कि धन भाव से किन-किन बस्तुओं का विचार करना चाहिये ।

जातकाभरण में कहा है कि सुवर्णादि धातुओं का बेचना व खरीदना, रत्नादि कोश का ज्ञान व सङ्ग्रह का विचार विद्वानों को दूसरे भाव से करना चाहिये ॥ १ ॥

जातकसारे—

धनभं स्वामिसत्खटैर्युग्दृष्टं धनवृद्धिदम् ।
क्षीणेन्दुपापयुग्दृष्टं विना स्वर्क्षं धनापहम् ॥ २ ॥

सारावल्याम्—

[1]रवितनयभौमरवयः कुटुम्बसंस्थाद्विलोकनाच्चापि ।
कुर्वन्ति धनविनाशं क्षीणेन्दुनिरीक्षिता विशेषेण ॥ ३ ॥
[2]भौमेन्दू धनसंस्थौ त्वग्दोषदरिद्रताकरौ कथितौ ।
मन्दस्तु धनस्थाने महार्थयुक्तं बुधेक्षितः कुरुते ॥ ४ ॥
[3]रविरपि विधनं जनयति यमेक्षितः शस्यतेऽन्यदृष्टश्च ।
सौम्या कुटुम्बराशौ बहुप्रकारं धनं दद्युः ॥ ५ ॥
[4]बुधदृष्टस्त्रिदशगुरुः कुटुम्बराशौ च निःस्वतां कुरुते ।
सोमतनयो शशिना निरीक्षितो हन्ति सर्वधनम् ॥ ६ ॥

---

१. सारा० ३४ अ० १५ श्लो० ।
२. सारा० ३४ अ० १६ श्लो० ।
३. सारा० ३४ अ० १७ श्लो० ।
४. सारा० ३४ अ० १८ श्लो० ।

[1]चन्द्रोऽपि धनस्थाने क्षीणो बुधवीक्षितः सदा कुरुते ।
पूर्वार्जितार्थनाशं निरोधमपि चान्यवित्तस्य ॥ ७ ॥
[2]शुक्रः कुटुम्बराशौ सूर्येन्दुनिरीक्षितो न धनदाता ।
सौम्यगृहे शुभदृष्टः स एव धनदः सदा ज्ञेयः ॥ ८ ॥

ग्रन्थान्तरे—

धनस्थानगते जीवे धनी भवति बालकः ।
बुधस्तत्रैव भोगी स्याच्छुक्रे भूमिपतिर्भवेत् ॥ ९ ॥
धनस्थाने यदा चन्द्रः पञ्चमस्थो यदा रविः ।
तदा धनक्षयं विद्याद्दशवर्षाणि पञ्च च ॥ १० ॥

गर्गः—

धनभावगते सूर्ये धननाशमहर्निशम् ।
करोति निर्धनं चाथ ताम्रवित्त ददाति च ॥ ११ ॥
वैद्यः काञ्चनयुक्तश्च मणिरत्नधनो भवेत् ।
कर्पूरचन्दनामोदी धनी कुमुदबान्धवे ॥ १२ ॥
कृषिको विक्रयी भोगी प्रवास ऋणवित्तवान् ।
धातुवादे मतिर्नित्यं द्यूतकारः कुजे धने ॥ १३ ॥
धनं ददाति बहुधा नारायेच्चन्द्रवीक्षिते ।
त्वग्दोषं कुरुते नित्यं सोमपुत्रः कुटुम्बकः (गः) ॥ १४ ॥
लक्ष्मीवान् नित्यमुत्साही धनस्थे देवतागुरौ ।
बुधदृष्टे तु निःस्वः स्यादिति सत्यं प्रभाषते ॥ १५ ॥
विद्यार्जितधनो नित्यं स्त्रीधनैरथवा धनी ।
शुभदृष्टः शुभक्षेत्रे बुधदृष्टे भृगौ धनी । १६ ॥
काष्ठाङ्गारलोहधनं कुत्सधनमक्षयः ।
नीचविद्यानुरक्तश्च दीनो वा मन्दगे धने ॥ १७ ॥
शुभा धनस्थिताः कुर्युर्वाग्मित्वं प्रियभोजनम् ।
क्रूराः प्रोक्ताः विशेषेण कदन्नं बहुभाषणम् ॥ १८ ॥
मत्स्यमांसधनो नित्यं नखचर्मास्थिविक्रयी ।
जीविका चौरवृत्त्या च राहौ धनगते नरः ॥ १९ ॥
द्वितीये भवने केतुर्धनहानिः प्रजायते ।
नीचसङ्गी च दुष्टात्मा सुखसौभाग्यवर्जितः ॥ २० ॥

अब आगे जातकसार के वाक्य से धनभाव का विचार बताते हैं ।

---

१. सारा० ३४ अ० १९ श्लो० ।   २. सारा० ३४ अ० २० श्लो० ।

यदि कुण्डली में धनभाव अपने स्वामी ग्रह से या शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो जातक के धन की वृद्धि और क्षीण चन्द्रमा या पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त धन भाव हो तो धन का विनाश होता है किन्तु अपनी राशि में क्षीण चन्द्रमा व पाप ग्रह हो तो धन का नाश नहीं होता है ॥ २ ॥

अब आगे सारावली के वाक्यों से धनभाव का फल बतलाते हैं।

यदि कुण्डली में शनि, भौम, सूर्य धन भाव में हों वा इनकी दृष्टि हो तो धन का विनाश और यदि क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट धन भाव हो तो विशेषता से धन का नाश होता है ॥ ३ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में—'रविरविजभूमितनयाः' यह पाठान्तर है ॥ ३ ॥

यदि कुण्डली में भौम व चन्द्रमा धन भाव में हों तो जातक चर्मरोगी व दरिद्री होता है। यदि दूसरे भाव में शनि, बुध से दृष्ट हो तो जातक बड़ा धनवान् होता है ॥ ४ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में—'रविभौमौ धनसंस्थौ' यह पाठान्तर है ॥ ४ ॥

यदि कुण्डली में धनस्थ सूर्य, शनि से दृष्ट हो तो निर्धन और अन्य ग्रह से दृष्ट हो तो धनदायक होता है। यहाँ धनस्थ सूर्य शनि से दृष्ट होने पर विधन जातक होता है किन्तु इसके विपरीत बृहद्यवन जातक में अधिक धनो होना कहा गया है। यथा— 'धने दिनेशेऽतिधनानि नूनं करोति मन्देन च वीक्षितो वा' ( २ अ० पृ० सं० २६ )। इसलिये 'विशेषेण धनमिति' यह अर्थ मान कर एक वाक्यता समझना चाहिये।

यदि शुभग्रह दूसरे भाव में हो तो जातक अनेक प्रकार के धन से युक्त होता है ॥ ५ ॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में बुध, गुरू से दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता है।

यदि दूसरे भाव में बुध, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक के समस्त धन का नाश होता है ॥ ६ ॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में क्षोण चन्द्रमा, बुध से दृष्ट हो तो जातक पूर्व ( पहिले ) में अर्जित ( पैदा ) किये हुए धन का सदा नाशक और दूसरे से मिलने वाले धन में रुकावट करने वाला होता है ॥ ७ ॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में शुक्र, सूर्य व चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक को धन देने वाला नहीं होता है। यदि शुभग्रह की राशि में शुक्र, शुभग्रह से दृष्ट हो तो वही धन देने वाला होता है ॥ ८ ॥

अब आगे ग्रन्थान्तर के वाक्य से धन भाव का फल कहते हैं।

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में गुरू हो तो जातक धनवान्, यदि वहीं पर बुध हो तो भोगो और शुक्र हो तो जातक राजा होता है ॥ ९ ॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में चन्द्रमा और पाँचवें में रवि हो तो जातक का पन्द्रहवें या १०–५ वर्ष में धन नाश होता है ॥ १० ॥

अब आगे गर्गाचार्यजी के वाक्यों से दूसरे भाव में स्थित सूर्यादि ग्रह फल को बतलाते हैं।

**सूर्य**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में सूर्य हो तो जातक का हर समय धन नष्ट होकर निर्धन और ताँबे से धनागम होता है ॥ ११ ॥

**चन्द्रमा**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में चन्द्रमा हो तो जातक वैद्य, सुवर्ण से युक्त, मणि व रत्नों से धनी, कपूर व चन्दन से प्रसन्न और धनवान् होता है ॥ १२ ॥

**भौम**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में मङ्गल हो तो जातक खेती करने वाला, बेचने वाला, भोगी, प्रवासी, ऋण से धनी, धातु निर्णय में बुद्धि वाला और जुआ खेलने वाला होता है ॥ १३ ॥

**बुध**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में बुध हो तो जातक अनेक प्रकार से धनी और यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो धन नाशक और चर्मरोगी होता है ॥ १४ ॥

**गुरु**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में गुरु हो तो जातक धनवान्, उत्साही और बुध से दृष्ट हो तो निर्धन होता है ॥ १५ ॥

**शुक्र**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में शुक्र हो तो जातक विद्या से धन पैदा करने वाला अथवा स्त्री धन से धनी होता है। यदि शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट द्वितीयस्थ शुक्र अथवा बुध से दृष्ट हो तो जातक धनवान् होता है ॥ १६ ॥

**शनि**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में शनि हो तो जातक काठ, कोयला, लोहा से धनी, दूषित कार्य से धन एकत्रित करने वाला, नीच विद्या में आसक्त अथवा दीन होता है ॥ १७ ॥

यदि कुण्डली में धनभाव में शुभग्रह हों तो जातक युक्तियुक्त बोलने वाला व भोजन प्रिय होता है। यदि दूसरे भाव में पापग्रह हों तो जातक दूषित अन्न खाने वाला और अधिक बोलने वाला होता है ॥ १८ ॥

**राहु**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में राहु हो तो जातक मछली व मांस के व्यापार से धनवान्, नाखून, चमड़ा व हड्डियों को बेचने वाला और चोरी से जीविका करने वाला होता है ॥ १९ ॥

**केतु**—यदि कुण्डली में धनभाव में केतु हो तो जातक के धन का विनाश, दुष्टों का साथ, कलुषित हृदय का और सुख सौभाग्य से रहित होता है ॥ २० ॥

## अथ धनभावे विशेषफलम्—

कश्यपः—

स्वोच्चे १ स्वोच्चनवांशे २ च शुभवर्गेऽथ ३ नीचगे ४।
नीचांशे ५ क्रूरषड्वर्गे ६ मित्रभे ७ सुहृदंशके ८॥ २१॥
वर्गोत्तमे९ऽरिभे१०ऽर्यंशे ११ स्वर्क्षे १२ द्वादशधा क्रमात्।
फलञ्च धनभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ २२ ॥

वित्तं नृपतिमानोत्थं १ नृपसेवासमुद्भवम् २ ।
सुलोकदक्षं ३ पापोत्थं ४ स्थूलजं ५ चौर्यसंभवम् ६ ॥ २३ ॥
कामा ७ ल्लोभा ८ त्परस्त्रीतः ९ स्वल्पं १० चाधम ११ सेवनात् ।
भृत्यजं १२ धनभावस्थे भास्करे लभते नरः ॥ २४ ॥
रत्नमुक्ते १ हेमरूप्ये २ स्वर्णं ३ धर्मेतरव्ययम् ४ ।
व्ययहीनं ५ पापभवं ६ सूतजं ७ कृषिसंभवम् ८ ॥ २४ ॥
सुहृद्दुर्जनजं ९ चौर्यं १० संभवे हीनकर्मजम् ११ ।
पूर्वजोपार्जितं १२ चन्द्रे धनभावगते धनम् ॥ २६ ॥
युद्धजं १ कोष्ठजं २ कृष्यं ३ सुजनोत्थं ४ धनोर्जितम् ५ ।
ऋणं ६ त्याजितदेशर्णं ७ मित्रवञ्चन ८ संभवम् ॥ २७ ॥
सुहृद्वञ्चनसंभूतं ९ गुरुदेवादिमोक्षजम् १० ।
नैस्वं ११ स्वजनविद्वेषाद् १२ वित्तं भौमे धने स्थिते ॥ २८ ॥
भूधनं १ सस्यपशुजं २ बहुपापसमुद्भवम् ३ ।
निष्कृष्टता समुद्भूतं ४ दैन्यार्जितरिपूद्भवम् ५ ॥ २९ ॥
वञ्चनोत्थं ६ वाजिभवं ७ कृषिजं ८ कृषिसंभवम् ९ ।
शत्रुसेवाभवं १० स्वल्पं ११ श्रेष्ठलोकाद् १२ बुधे स्वगे ॥ ३० ॥
वित्त न्यायार्जितं १ विप्रसाधुदत्तं २ क्षितीशजम् ३ ।
परदारसमुद्भूत ४ मन्त्यजोत्थञ्च ५ काष्ठजम् ६ ॥ ३१ ॥
गजाश्ववस्त्रसंभूतं ७ कृषिजं ८ स्वजनार्पितम् ९ ।
रिपुदास्याद् १० दरिद्राप्तं ११ निधिजं १२ धनगे गुरौ ॥ ३२ ॥
वित्तमक्षीणबहुलं १ पूर्वजातं २ क्षितांशजम् ३ ।
कार्पण्यजं ४ द्यूतलब्धं ५ परदेशातिसङ्गजम् ६ ॥ ३३ ॥
नृपजं ७ नृपपुत्रोत्थं ८ राजजं ९ वरकर्मजम् १० ।
दैन्यजं ११ पुत्रजनितं १२ शुक्रे धनगते क्रमात् ॥ ३४ ॥
वित्तं कुकर्मजातात्पं १ कष्टजं २ व्यसनोद्भवम् ३ ।
दुःखनिर्घृणताक्लेश ४ मन्त्यजोत्थञ्च ५ पापजम् ६ ॥ ३५ ॥
अस्थिस्वं ७ मृन्मयं ८ चैव जलजं ९ पापमेव च १० ।
दास्यजं ११ परमोषोत्थं १२ शनौ धनगते भवेत् ॥ ३६ ॥
सहस्रमुच्चगः सूर्यो लक्षमिन्दुः शतं कुजः ।
बुधः कोटिं गुरुः खर्वं शुक्रः शङ्कुं शनिः शतम् ॥ ३७ ॥
दद्युरत्युच्चगाः खेटास्ततो न्यूनं क्रमाद् धनम् ।
निजस्थानानुरूपञ्च स्वदशासु यथोदितम् ॥ ३८ ॥

शत्रु की राशि में हो तो १० गुरु, देवता व मुक्ति से धनी, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ धनाभाव और दूसरे भाव में भौम यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक अपने मनुष्यों से विरोध करके धन पैदा करने वाला होता है ॥ २७-२८ ॥

**बुध**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में बुध उच्च राशि में हो तो १ जातक भूमि से अर्थात् मकान या कृषि से धनी, यदि उच्चराशि के नवांश में २ हो तो घासादि या पशु से, यदि शुभ राशि के वर्ग में हो तो ३ अधिक पापों से, यदि नीच राशि में हो तो ४ दूषित कार्य से, यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ दीनता या शत्रु से, यदि पापग्रह राशि वर्ग में हो तो ६ ठगई से, यदि मित्र राशि में हो तो ७ घोड़ाओं से, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ खेती से, यदि वर्गोत्तम राशि में हो तो ९ खेती से, यदि शत्रु राशि में हो तो १० शत्रु की सेवा से, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ थोड़ा धन और धनभावस्थ बुध यदि अपनी राशि में हो तो जातक अच्छे देश या व्यक्ति से धन प्राप्त करता है ॥ २९-३० ॥

**गुरू**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में गुरू उच्च राशि में हो तो १ जातक न्याय से धन पैदा करने वाला, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ ब्राह्मण व साधु से अर्थात् अच्छे मनुष्य से धन प्राप्त करने वाला, यदि शुभ राशि वर्ग में हो तो ३ राजा से, यदि नीच राशि में हो तो ४ दूसरे की स्त्री से, यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ अन्त्यज ( श्वपच ) से, यदि पाप राशि वर्ग में हो तो ६ काठ या लकड़ी के व्यवसाय से, यदि मित्र राशि में हो तो ७ हाथी, घोड़ा व वस्त्र से, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ खेती से, यदि वर्गोत्तम में हो तो ९ अपने मनुष्यों से, यदि शत्रु राशि में हो तो १० शत्रु की सेवा से, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ दरिद्रता से और धनभावस्थ गुरू यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक खजाने से धन प्राप्त करता है ॥ ३१-३२ ॥

**शुक्र**—यदि कुण्डली में शुक्र उच्च राशि में हो तो १ जातक खर्च से रहित अधिक धन वाला, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ पहिले का धनी, यदि शुभराशि वर्ग में हो तो ३ भूमि से, यदि नीच राशि में हो तो ४ लोभ से, यदि नीच राशि के नवांश में हो तो ५ जुआ से, यदि पापग्रह की राशि में हो तो ६ परदेश की अधिक सङ्गति से अर्थात् प्रवास से, यदि मित्र राशि में हो तो ७ राजा से, यदि मित्र राशि के नवांश में हो तो ८ राजा के पुत्र से, यदि वर्गोत्तम में हो तो ९ राज्य से, यदि शत्रु राशि में हो तो १० अच्छे कार्य से, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ दीनता से और धनभावस्थ शुक्र यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक पुत्र के द्वारा धनी होता है ॥ ३३-३४ ॥

**शनि**—यदि कुण्डली में दूसरे भाव में शनि उच्च राशि में हो तो १ जातक बुरे कार्यों से थोड़ा धनी, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ कष्ट से, यदि शुभ राशि वर्ग में हो तो ३ व्यसनों से, यदि नीच राशि में हो तो ४ दुःख, निर्घृणता व क्लेश से, यदि नीचराशि के नवांश में हो तो ५ पतित जाति से, यदि पाप राशि वर्ग में हो तो ६ पाप से, यदि मित्र राशि में हो तो ७ हड्डियों से, यदि मित्र राशि के नवांश में हो

तो ८ मिट्टी से, यदि वर्गोत्तम में हो तो ९ जल से, यदि शत्रु राशि में हो तो १० पाप से, यदि शत्रु राशि के नवांश में हो तो ११ सेवा ( नौकरी ) कार्य से और धनभावस्थ शनि यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक दूसरे की चोरी करने से धन प्राप्त करता है ।।३५–३६।।

यदि कुण्डली में धन भावस्थ सूर्य अपने परम उच्चांश में हो तो जातक हजार पति अर्थात् एक हजार की सम्पत्ति वाला, यदि चन्द्रमा परम उच्चांश में हो तो लखपति, भौम हो तो सैंकड़े का पति, बुध हो तो करोड़पति, गुरू हो तो खर्वपति, शुक्र शङ्कुपति और शनि परम उच्चांश में हो तो सैंकड़े का स्वामी होता है। परमोच्चांश से भिन्न अंशो में फल की अल्पता व अधिकता देखकर ही कहना चाहिये। ग्रह अपने स्थान के अनुरूप ही दशा में फल कारक होता है ।। ३७-३८ ।।

अब आगे यवन जातकोक्त धन भावस्थ उच्चस्थ ग्रहों के फल को कहते हैं।

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में उच्च राशि में सूर्य हो तो जातक एक हजार की सम्पत्ति वाला, चन्द्रमा हो तो लखपति, भौम से सैंकड़े का मालिक, बुध से करोड़पति, गुरू से खर्वपति, शुक्र से शङ्कुपति और शनि से अल्प धनी होता है। मध्य में अनुपात से फल समझना चाहिये। यहाँ अनुपात स्थानबल से करना चाहिये। जैसे उच्च में ६० पूर्ण, मूल त्रिकोण राशि में ४५ = $\frac{3}{4}$। अपनी राशि में ३० = $\frac{1}{2}$ आधा, अधिमित्र की राशि में २२।३०, मित्र राशि में १५, समराशि में ७।३० अधिशत्रु में षोडशांश = १।५२।३० और नीच राशि में फल का अभाव होता है ।। ३९-४० ।।

## अथ धनभावगराशिफलम् ।

यवनः—

मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्यो धनं सुपुण्यैर्विविधं प्रभूतम् ।
चतुष्पदाढ्यो बहुबान्धवाढ्यो प्रयच्छति प्रीतिपरः सदैव ।। १ ।।
वृषे धनस्थे लभते मनुष्यः कृषिप्रयत्नेन धनं सदैव ।
अन्नाभिधानं च चतुष्पदाढ्यं सुवर्णरौप्यं मणिमौक्तिकोऽलम् ।। २ ।।
तृतीयलग्ने धनगे मनुष्यो धनं भवेत् स्त्रीजनतश्च नित्यम् ।
रौप्यं तथा काञ्चनजं प्रभूतं हयाधिकं सुष्ठुभिरेव सख्यम् ।। ३ ।।
चतुर्थराशौ धनगे मनुष्यो धनं भवेद्वृक्षजमेव नित्यम् ।
जलोद्भवं यद्यदनिष्टभोज्यं नयार्जितं प्रीतिकरं सुतानाम् ।। ४ ।।
सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं सदारण्यजनोत्थमाप्तम् ।
सर्वोपकारप्रवणं प्रभूतं स्वविक्रमोपार्जितमेव नित्यम् ।। ५ ।।
कन्योदये वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्भूमिपतेः सकाशात् ।
हिरण्यमुक्तामणिरत्नजातं गजाश्वनानाविधवित्तजञ्च ।। ६ ।।
तुले धनस्थे बहुपण्यजातं धनं भवेत्पुत्रजनैरुपेतम् ।
वित्ताद्द्रवं वा प्रतिभं प्रधानं स्वन्यायलब्धं गुरुलब्धशेषम् ।। ७ ।।

अलौ धनस्थे बहुपुण्यजातं धनं मनुष्यो लभते प्रभूतम्।
पाषाणजं मृण्मयजं तथापि सस्योद्भवं कर्मजमेव नित्यम्॥ ८॥
धनुर्धरे वित्तगते मनुष्यो धनं लभेत् स्थैर्यविधानजातम्।
चतुष्पदाढ्यं विविधं सशस्यं रसोद्भवं धर्मविधानलब्धम्॥ ९॥
मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रपञ्चैर्विविधैरुपायैः।
सेवासमुत्थञ्च सदा नृपाणां कृपिक्रियाभिश्च विशेषसङ्गात्॥१०॥
घटे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतं फलपुष्पजातम्।
जनोद्भवं साधुजनस्य भोज्यं महाजनोत्थञ्च परोपकारैः॥ ११॥
मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतंर्नियमोपवासैः।
विद्याप्रभावान्निधिसङ्गमाच्च मातापितृभ्यां समुपार्जितञ्च॥ १२॥

अब आगे दूसरे भाव में बारह राशियों के फल को यवनाचार्यजी के वाक्यों से बतलाते हैं।

**धनभावस्थ मेष राशि का फल—**

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में मेष राशि हो तो जातक सुन्दर पुण्य कार्यों से, नाना प्रकार से धनी, पशुओं से युक्त, अधिक बान्धवों वाला और दूसरे से सदा ही प्रेम करने वाला होता है॥ १॥

**धनभावस्थ वृष राशि का फल—**

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में वृष राशि हो तो जातक सदा ही खेती के कार्य से धनी, पशुओं से युक्त, सुवर्ण, चाँदी, मणि और मोतियों से सुशोभित होता है॥ २॥

**धनभावस्थ मिथुन राशि का फल—**

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में मिथुन राशि हो तो जातक स्त्री समुदाय से नित्य धनवान्, अधिक सोना चाँदी वाला, अधिक घोड़ाओं से युक्त और अच्छे लोगों से ही मित्रता करने वाला होता है॥ ३॥

**धनभावस्थ कर्क राशि का फल—**

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में कर्क राशि हो तो जातक वृक्षों के व्यवसाय से, जल से धनी, दूषित खाने वाला, न्याय से पैदा करने वाला और पुत्रों को प्रसन्न करने वाला होता है॥ ४॥

**धनभावस्थ सिंह राशि का फल—**

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में सिंह राशि हो तो जातक बन वासियों से धन प्राप्त करने वाला, समस्त लोगों के उपकार करने में श्रेष्ठ और पुरुषार्थ से अधिक धन प्राप्त करने वाला होता है॥ ५॥

**धनभावस्थ कन्या राशि का फल—**

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में कन्या राशि हो तो जातक राजा से धन प्राप्त करने वाला, सुवर्ण, मोती, मणि, रत्न, हाथी, घोड़ा तथा अनेक प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होता है॥ ६॥

### धनभावस्थ तुला राशि का फल—

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में तुला राशि हो तो जातक अधिक पुण्य से धनी, पुत्रों से युक्त, युद्ध से धन प्राप्त करने वाला वा प्रतिभाशाली, प्रधान, अपने न्याय से और गुरू द्वारा प्राप्त धन के शेष धन को प्राप्त करने वाला होता है ॥ ७ ॥

### धनभावस्थ वृश्चिक राशि का फल—

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में वृश्चिक राशि हो तो जातक अधिक पुण्य से ज्यादा धन प्राप्त करने वाला, पत्थर से या मिट्टी से या फल के कार्य से नित्य धनागम कर्त्ता होता है ॥ ८ ॥

### धनभावस्थ धनु राशि का फल—

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में धनु राशि हो तो जातक स्थिर कार्य से धनवान्, पशुओं से युक्त, अनेक फलों के रस से और धार्मिक विधान से धन प्राप्त करने वाला होता है ॥ ९ ॥

### धनभावस्थ मकर राशि का फल —

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में मकर राशि हो तो जातक प्रपञ्चों से, अनेक उपायों से, राजाओं को दासता से और विशेष सङ्गति के कारण खेती से धन पैदा करने वाला होता है ॥ १० ॥

### धनभावस्थ कुम्भ राशि का फल—

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में कुम्भ राशि हो तो जातक जल व पुण्य से अधिक धन प्राप्त करने वाला, मनुष्यों से, सज्जन पुरुष के भोज्य से और बड़े आदमियों के उपकार से धन प्राप्त करता है ॥ ११ ॥

### धनभावस्थ मीन राशि का फल—

यदि जन्मपत्री में दूसरे भाव में मीन राशि हो तो जातक अधिक नियम व उपवासों से या विद्या के प्रभाव से या खजाने से या माता पिता द्वारा अर्जित धन प्राप्त करता है ॥ १२ ॥

### अथ धनस्वामिद्वादशभावफलम् ।

वृद्धयवनः—

द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपणं व्यवसायिनं सुकर्माणम् ।
धनिनं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगभुजम् ॥ १ ॥
धनपो धनभवनस्थो धनवन्तं धर्मकर्मनिरतञ्च ।
लाभाधिकं सुलोभं कुरुते पुरुषं सदा दक्षम् ॥ २ ॥
सहजगते द्रव्येशे व्यवसायी कलिकरः कलाहीनः ।
चौरश्चञ्चलचित्तो भवति नरो विनयनयरहितः ॥ ३ ॥
तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभपरः सहोदयः पुरुषः ।
दीर्घायुः क्रूरखगे पुनरम्बा मरणकं विनिर्देश्यम् ॥ ४ ॥

कमलविमलासितनयं कर्मणि कष्टे नरं प्रसिद्धञ्च।
कृपणं दुःखनिधानं तनयगतो धनपतिः कुरुते ॥ ५ ॥
षष्ठगते द्रविणपतौ धनसङ्ग्रहतत्परं रिपुघ्नञ्च।
भूस्वामिनञ्च खचरे पापे धनवर्जितं पुरुषम् ॥ ६ ॥
धनपे सप्तमगृहगे श्रेष्ठकचिन्ताविलासभोगवती।
धनसङ्ग्रहणी भार्या क्रूरे खचरे भवति बन्ध्याम् ॥ ७ ॥
धनपे चाष्टमभवने स्वल्पफलश्चात्मघातकः पुरुषः।
उत्पन्नभुग्विलासी परहिंसी भवति दैवपरः ॥ ८ ॥
धनपे धर्मगृहगे सौम्ये दानप्रसिद्धभाग्भवति।
क्रूरे दरिद्रभिक्षुकविडम्बवृत्तिस्तथा मनुजः ॥ ९ ॥
दशमगृहस्थे धनपे नरेन्द्रमान्यो भवेन्नृपाल्लक्ष्मीवान्।
सौम्ये ग्रहे च मातुः पितुश्च परिपालकः पुरुषः ॥ १० ॥
एकादशगे स्वपतौ व्यवहारपरः श्रियः पतिः ख्यातः।
लोकाढ्यं प्रतिपालननिरतं कुरुते नरं जातम् ॥ ११ ॥
द्वादशगे द्रव्यपतावष्टकपाली विदेश स्थाढ्यश्च।
दुष्कर्मा भिक्षुकश्च क्रूरे सौम्ये च सङ्ग्रामी ॥ १२ ॥

इति धनभावविचारः

अब आगे बारह भावों में स्थित धनेश के फल को वृद्ध यवनाचार्य जी के वाक्यों से कहते हैं।

**लग्नस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में धनेश लग्न में हो तो जातक लोभी, व्यवसायी, सुन्दर कार्य करने वाला, धनी, प्रसिद्ध लक्ष्मीवान् और अधिक भोग भोगने वाला होता है ॥ १ ॥

**धनस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में धनेश धन स्थान में हो तो जातक धनवान्, धार्मिक कार्यों में अनुरक्त, अधिक लाभ से युक्त, अच्छा लोभी और सर्वदा चतुर होता है ॥ २ ॥

**तृतीय भावस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में धनेश तीसरे भाव में हो तो जातक व्यापारी, कलह करने वाला, कलाओं से रहित, चोर, चञ्चल चित्त वाला, नम्रता और न्याय से रहित होता है ॥ ३ ॥

**सुखस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में चौथे भाव में धनेश हो तो जातक पिता से परम लाभ करने वाला, सदा उदयी, यदि पापग्रह हो तो दीर्घायु और माता का नाशक होता है ॥ ४ ॥

**पञ्चमभावस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में पाँचवें भाव में धनेश हो तो जातक कमल के समान निर्मल न्याय वाला, कार्य में कष्ट से हीन, विख्यात, लोभी, दुःखी और धनी होता है ॥ ५ ॥

**षष्ठस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में छठे भाव में धनेश हो तो जातक धन सङ्ग्रह करने में अनुरक्त, शत्रुओं का नाश करने वाला, यदि पापग्रह हो तो भूमि का स्वामी और धन से रहित होता है ॥ ६ ॥

**सप्तमस्थ धनेश का फल**--यदि कुण्डली में सातवें भाव में धनेश हो तो जातक अच्छी चिन्ता करने वाला, भोग व विलास से युक्ता और धन सङ्ग्रह करने वाली पत्नी से युक्त होता है। यदि पापग्रह धनेश होकर सप्तम भाव में हो तो वन्ध्या स्त्री का स्वामी होता है ॥ ७ ॥

**अष्टमभावस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में आठवें भाव में धनेश हो तो जातक अल्पफली भूत होने वाला, आत्मघाती, प्राप्त वस्तु का भोगी, विलासी, दूसरे की हिंसा करने वाला, और परम भाग्यवान् होता है ॥ ८ ॥

**नवमभावस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में नवें भाव में शुभग्रह धनेश हो तो जातक दानी और प्रसिद्ध भाग्यशाली, यदि क्रूरग्रह हो तो जातक दरिद्री, भिक्षुक और धूर्तता की आजीविका वाला होता है ॥ ९ ॥

**दशमभावस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में दशवें भाव में धनेश हो तो जातक राजा से सम्मानित, राजा से लक्ष्मीवान्, यदि शुभग्रह हो तो माता व पिता का पालन करने वाला होता है ॥ १० ॥

**लाभस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में ग्यारहवें भाव में धनेश हो तो जातक परम व्यवहारी, प्रसिद्ध लक्ष्मीवान्, संसार में धनी और प्रतिपालन में अनुरक्त होता है ॥ ११ ॥

**द्वादशस्थ धनेश का फल**—यदि कुण्डली में बारहवें भाव में धनेश हो तो जातक शठ कपाल वाला, विदेश से धनवान्, दुष्कर्म करने वाला, भिक्षुक और शुभग्रह हो तो सङ्ग्राम करने वाला होता है ॥ १२ ॥

## अथ सहजभावविचारः।

अब आगे तीसरे भाव के विचार को बताते हैं।

तत्र सहजभावे किं किं चिन्त्यमित्युक्तं
जातकाभरणे—

सहोदराणामथ किङ्कराणां पराक्रमाणामुपजीविनाञ्च।
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन वाच्या ॥ १ ॥

यवनः—

सहजे सर्वपापाढ्ये पापर्क्षे भ्रातरो नहि।
सौम्यर्क्षे सौम्यखेटाढ्ये बहवः स्युः सहोदराः ॥ २ ॥
कुजदृष्टः सहजगो मन्दो भ्रातृविनाशकृत्।
बुधः सहजगो भौमवीक्षितः सहजार्तिदः ॥ ३ ॥

गुरुदृष्टः सहजगो भृगुः सहजसौख्यदः ।
यावन्तो नवभागाः स्युः सहजेऽब्जकुजेक्षिताः ॥ ४ ॥
तत्सङ्ख्या सहजा ज्ञेया दृष्टा अन्यैस्तु योषितः ।
स्वगृहोच्चगतैः खेटैर्द्वित्रिगुण्यं विनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥
सहजस्थो यदा राहुर्धनस्थाने बृहस्पतिः ।
बुधेन च समायुक्तस्तस्य बन्धुत्रयं वदेत् ॥ ६ ॥

सहज भाव से किन किन बातों को जानना चाहिये, इसे जातकाभरण नामक ग्रन्थ के वाक्य से कहते हैं ।

जातकाभरण में कहा है कि भाईयों का, नौंकरों का, पुरुषार्थ का और पालित जन्तुओं का विचार तीसरे भाव से करना चाहिये ॥ १ ॥

अब यवनाचार्यजी के वाक्यों से तीसरे भाव का विचार बतलाते हैं ।

यदि कुण्डली में तीसरे भाव में पापग्रह की राशि में सब पापग्रह हों तो जातक भाईयों से रहित और शुभग्रह की राशि में शुभग्रह हो तो अधिक भाई होते हैं ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में शनि, भौम से दृष्ट हो तो भाइयों का नाशक और तीसरे भाव में बुध यदि भौम से दृष्ट हो तो जातक के भाइयों को पीड़ा होती है ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में शुक्र, गुरू से दृष्ट हो तो भाईयों का सुख देने वाला होता है ।

जन्मपत्री में तीसरे भाव में जितनी संख्या का नवांश, चन्द्रमा व भौम से दृष्ट हो तो उतने भाई और अन्य ग्रह से दृष्ट हो तो उतनी बहिन होती हैं । यहाँ दृष्टा ग्रह यदि अपनी राशि में हो तो दो से गुना करके, यदि उच्च राशि में हो तो तीन से गुना करके संख्या समझना चाहिये ॥ ४–५ ॥

यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में राहु तथा दूसरे में गुरू, बुध से युक्त हो तो जातक तीन भाईयों से युक्त होता है ॥ ६ ॥

गर्गः—

सहजस्थानगो हेलिर्नाशयेत्सहजं ध्रुवम् ।
हन्त्यरिष्टं च कुरुते धनभार्यान्वितं नरम् ॥ ७ ॥
स्वसारं हन्ति शीतांशुः पापः पापगृहे स्थितः ।
पूर्णः शुभर्क्षगो दत्ते भगिनीं रूपसंयुताम् ॥ ८ ॥
सहजं प्रतिबध्नाति सहजस्थानगः कुजः ।
भूमिं राजास्पदं पुत्रं दीर्घमायुश्च यच्छति ॥ ९ ॥
अस्तः पापयुतस्त्रिस्थः स्वसारं हन्ति चन्द्रजः ।
अन्यथा विमलं कुर्यात्स एव शुभवीक्षितः ॥ १० ॥

धनवान्निर्धनाकारः कृपणो भ्रातृसंयुतः।
कुटुम्बी नृपपूज्यश्च सहजे देवतागुरौ ॥ ११ ॥
सहजस्थानगो दत्ते गौराङ्गीं भगिनीं भृगुः।
ततो जडं च क्रूरञ्च मन्दञ्च कुरुते नरम् ॥ १२ ॥
भ्रातृगो मंदगः कुर्यात् भातृस्वसृविनाशनम्।
नृपतुल्यं च सुखिनं सततं कुरुते नरम् ॥ १३ ॥
हन्ति वा व्यङ्गमथवा भ्रातरं कुरुते तमः।
लक्षेश्वरं रिष्टहीनं वीरं च तनुते नरम् ॥ १४ ॥
नवमे च यदा सूर्यः स्वगेहे यदि वर्तते।
तस्य नो जीवति भ्राता एकोऽपि नृपतिः समः ॥ १५ ॥
सहजाच्चन्द्रराश्यन्तगतैः खेटैस्तु सङ्ख्यकाः।
तृतीयाङ्का दृष्टिवशान्मृताः पापग्रहैस्तु ते ॥ १६ ॥
अग्रजातं रविर्हन्ति पृष्ठे जातं शनैश्चरः।
जातं जातं कुजो हन्ति राहुः केतुश्च नाशनम् ॥ १७ ॥
धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः।
सहजे च भवेद्राहुः भ्राता तस्य न जीवति ॥ १८ ॥
सहजस्थो यदा केतुः सौख्यं सौभाग्यमेव च।
पुत्रलाभो भवेत्तस्य जायते च महाधनी ॥ १९ ॥

अब आगे तीसरे भाव में स्थित सूर्यादि ग्रह फल और तद्भाव जन्य विचार को गर्गाचार्यजी के वाक्यों से कहते हैं।

**सूर्य**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में सूर्य हो तो जातक के अवश्य भाइयों का नाश, अरिष्ट का विलय, धनवान् और स्त्री से युक्त होता है ॥ ७ ॥

**चन्द्रमा**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में अशुभ चन्द्रमा पापग्रह की राशि में हो तो जातक बहिन का नाशक और यदि परिपूर्ण शुभ राशि में हो तो स्वरूपवती बहिन से युक्त होता है ॥ ८ ॥

**भौम**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में भौम हो तो जातक भाइयों का नाशक और राजा की भूमि या पद से युत पुत्र तथा दीर्घायु देने वाला होता है ॥ ९ ॥

**बुध** – यदि कुण्डली में तीसरे भाव में अस्त या पापग्रह के साथ बुध हो तो जातक बहिन का विनाश करने वाला होता है। इसके विपरीत में शुभग्रह से दृष्ट होने पर बहिन का सुख कारक होता है ॥ १० ॥

**गुरू**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में गुरू हो तो जातक धनवान् होकर भी लोभ के कारण निर्धनी, भाइयों से युक्त, परिवार वाला और राजा से सम्मानित होता है ॥ ११ ॥

शुक्र—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में शुक्र हो तो जातक सफेद रङ्ग की अर्थात् गौर वर्ण की बहिन से युक्त, मूर्ख और क्रूर होता है ॥ १२ ॥

शनि—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में शनि हो तो जातक बहिन व भाई का नाश करने वाला और राजा के समान सुखी होता है ॥ १३ ॥

राहु—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में राहु हो तो जातक भाइयों का नाशक अथवा भाइयों को अङ्गहीन करने वाला, लखपति, अरिष्टों से हीन और वीर होता है ॥ १४ ॥

यदि कुण्डली में अपनी राशि में नवम भाव में सूर्य हो तो जातक का भ्राता नहीं जीता है और इकेला भी राजा के समान होता है ॥ १५ ॥

यदि कुण्डली में तृतीय भाव से चन्द्रमा की राशि के अन्त तक जितनी संख्या में ग्रह हों उतने भाई बहिन और तृतीयाङ्क जितने पापग्रहों से दृष्ट हो उतने बहिन व भाइयों का नाश होता है ॥ १६ ॥

यदि कुण्डली में तीसरे भाव में सूर्य हो तो जातक पूर्व जात बहिन भाई का, यदि शनि हो तो बाद में उत्पन्न होने वाले का और भौम हो तो प्रत्येक का नाशक तथा राहु केतु हों तो भी भाई बहिन के सुख से जातक रहित होता है ॥ १७ ॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में भौम, शनि से युक्त हो और तीसरे भाव में राहु हो तो जातक का भाई नहीं जीता है ॥ १८ ॥

यदि कुण्डली में तीसरे भाव में केतु हो तो जातक सुख-सौभाग्य व पुत्र से युक्त बड़ा धनी होता है ॥ १९ ॥

अथ सहजभावे विशेषफलम् ।

कश्यपः—

स्वोच्चे १ स्वोच्चनवांशे २ वा शुभवर्गेऽथ ३ नीचगे ४ ।
नीचांशे ५ क्रूरषड्वर्गे ६ मित्रभे ७ सुहृदंशके ८ ॥ २० ॥
वर्गोत्तमेऽ९रिभेऽ १० यंशे ११ स्वर्क्षे १२ द्वादशधा क्रमात् ।
फलं सहजभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ २१ ॥
राजा १ राजसुतः २ सार्वभौमो ३ नीचगतथैव ४ च ।
भिक्षुकोऽ५प्रविरोधश्च ६ चारणो ७ ब्राह्मणः ८ तथा ॥ २२ ॥
कुलीनः ९ शास्त्रविद् १० वैरिक्षताऽङ्गो ११ निर्गुणः समः १२ ।
रवौ सहजभावस्थे क्रमादेतद्वदेत्सुधीः ॥ २३ ॥
मित्रः कदर्यः स्वपतिः १ निरङ्कः २ परदार्यवान ३ ।
अन्तको ४ नर्तको ५ भेदुः ६ परवञ्चक ७ एव च ॥ २४ ॥
बहुदोषी ८ निर्घृणश्च ९ मित्राधमतमोऽपि १० च ।
मायावी ११ परदारैकरति १२ श्चन्द्रे तृतीयगे ॥ २५ ॥
वरराजा १ प्रधानश्च २ राजमान्योऽथ ३ शास्त्रवित ४ ।
भृतको ५ व्यसनी चैव ६ सुखी वाथ ७ कुमारकः ८ ॥ २६ ॥

बह्वन्नपानसंयुक्तः ९ सहजाश्रित १० एव च।
समृद्धो ११ दण्डनाथश्च १२ भौमे सहजगे तथा ॥ २७॥
खण्डोऽथ १ कम्बुकी चैव २ कृतघ्नः ३ पापतत्परः ४।
गोपालो ५ गतसौहार्दो ६ बहुकामार्थनापितः ७॥ २८॥
कुम्भकारोऽ८थ निन्द्यश्च ९ लोकदिष्ट १० चरित्रवान् ११।
चौरो १२ बुधे भवेन्नित्यं जन्मलग्नात्तृतीयगे ॥ २९॥
अवनीतो १ दुष्टचित्तो २ नृशंस्याल्पप्रजस्तथा ३।
दरिद्रो ४ द्यूतनिरतो ५ विबन्धुरतिकाश्यवान् ६॥ ३०॥
पण्यैक ७ तत्परो द्यूत ८ कारः क्लीबोऽथ ९ शिल्पवान १०।
निकृष्टः ११ पतितो १२ जीवे क्रमात् सहजभावगे॥ ३१॥
पतितः क्ष्मेशजीवी च १ ततः कलहवल्लभः २।
वञ्चको ३ नीचकुलजो ४ नृशंसो ५ भण्ड ६ एव च॥ ३२॥
दुश्चारणोऽथ ७ सबलः ८ कृतघ्नो ९ क्रीडनस्तथा १०।
शिल्पज्ञः ११ स्वजनत्यक्तः १२ शुक्रे सहजगे सखा॥ ३३॥
वरराजाऽथ १ धनवान् २ शास्त्रज्ञो ३ मलिनात्मवान् ४।
वञ्चको ५ निघृणो ६ मन्त्री न्यायज्ञो ७ गुणवित्तवान् ८॥ ३४॥
मानी ९ पानरतो १० दीनो ११ जितारिः १२ सहजे शनौ।
चन्द्रशुक्रेज्यसौम्यार्किभौमार्कैस्तेऽधिकाः क्रमात् ॥ ३५॥

यवनः—

असङ्ख्यमित्रः सविता प्रदिष्टः देशाधिपः शीतकरस्तु नित्यम्।
सहस्रमित्रः क्षितिजो बुधश्च शताधिपो देवपुरोहितश्च ॥३६॥
अशीतिनाथो भृगुनन्दनश्च सारस्तु भौमेन समः प्रदिष्टः।
स्वतुङ्गराशौ यदि वर्त्तमानाः सर्वेऽनुपातस्य वशाद्वदन्ति॥ ३७॥

अब आगे तीसरे भाव के विशेष फल को या यों समझिये तीसरे भाव में बारह परिस्थितियों में स्थित सूर्यादिग्रह के फल को कश्यप ऋषि के वाक्य से कहते हैं।

**सूर्य**—यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में सूर्य उच्च राशि में हो तो १ जातक राजा, यदि उच्च राशि के नवांश में हो तो २ राजकुमार, यदि शुभ राशि के वर्ग में हो तो ३ सार्वभौम, नीच राशि में ४ दुष्ट, नीच राशि के नवांश में ५ भीख मांगने वाला, पापग्रह की राशियों के षड् वर्ग में ६ सामने या पूर्व में विरोध करने वाला, मित्र की राशि में ७ गाने ( कत्थक ) वाला, मित्र राशि के नवांश में ८ ब्राह्मण वृत्ति करने वाला, वर्गोत्तम में ९ अच्छे कुल में उत्पन्न होने वाला, शत्रु की राशि में १० शास्त्रों का ज्ञाता; शत्रु राशि के नवांश में ११ शत्रु से मग्नदेहधारी और यदि

तीसरे भाव में सूर्य अपनी राशि में हो तो जातक गुणों से हीन निर्विकार होता है ॥ २०–२३ ॥

**चन्द्रमा**—यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में चन्द्रमा अपनी उच्च राशि में हो तो जातक १ दूषित मित्र वाला व धनी, उच्चराशि के नवांश में २ अङ्क से हीन, शुभ राशि के षड्वर्ग में ३ दूसरे की स्त्री से युक्त, नीच राशि में ४ यमराज स्वरूप, नीच राशि के नवांश में ५ नाचने वाला, क्रूर राशि के षड् वर्ग में ६ भेद बताने वाला, मित्र राशि में ७ दूसरे को ठगने वाला, मित्र राशि के नवांश में ८ अधिक दोषों से युक्त, वर्गोत्तम में ९ घृणा से हीन, शत्रु की राशि में १० निकृष्ट मैत्री वाला, शत्रु राशि के नवांश में ११ मायावी और तीसरे भाव में चन्द्रमा यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक दूसरे की स्त्री में एकमात्र अनुरक्त होता है ॥ २४–२५ ॥

**भौम**—यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में भौम उच्च राशि में हो तो जातक १ श्रेष्ठ राजा, उच्च राशि के नवांश में २ प्रधान, शुभराशि के षड् वर्ग में ३ राजा से सम्मानित, नीच राशि में ४ शास्त्रों का ज्ञाता, नीच राशि के नवांश में ५ नौकर, क्रूर राशि के षड्वर्ग में ६ व्यसनी, मित्र राशि में ७ सुखी, मित्र राशि के नवांश में ८ सेतु के समान, वर्गोत्तम में ९ अधिक अन्न पान से युक्त, शत्रु की राशि में १० भाई के आश्रित शत्रु राशि के नवांश में सम्पन्न और तीसरे भाव में भौम यदि अपनी राशि में हो तो जातक न्यायाधीश होता है ॥ २६–२७ ॥

**बुध**—यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में उच्च राशि में बुध हो तो जातक १ खण्ड अर्थात् टुकड़े वा हिस्सा वाला या अन्तिम समय में अशक्त, उच्च राशि के नवांश में २ पराक्रम वाला, शुभ राशि के षड्वर्ग में ३ कृतघ्न, नीच राशि में ४ पापात्मा, नीच राशि के नवांश में ५ गायों को पालने वाला, पाप राशि के षड् वर्ग में ६ मित्रता से हीन, मित्र राशि में ७ अधिक कामनाओं से युक्त, मित्र राशि के नवांश में ८ घड़ा बनाने वाला, वर्गोत्तम में ९ निन्दनीय, शत्रु राशि में १० संसार द्वेषी, शत्रु राशि के के नवांश में ११ चरित्रवान् और तीसरे भाव में बुध यदि अपनी राशि में हो तो जातक चोर होता है ॥ २८–२९ ॥

**गुरु**—यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में उच्च राशि में गुरु हो तो जातक १ विनम्र, उच्च राशि के नवांश में २ दूषित चित्त वाला, शुभ राशि के षड्वर्ग में ३ क्रूर तथा अल्प सन्तानवाला, नीच राशि में ४ दरिद्री, नीच राशि के नवांश में ५ जुआ में अनुरक्त, पाप राशि के षड्वर्ग में ६ बान्धवों से हीन और दुबला-पतला, मित्र की राशि में ७ बेचने में तत्पर या दूकानदार मित्र राशि के नवांश में ८ जुआ खेलने वाला, वर्गोत्तम में ९ नपुंसक, शत्रु राशि में चित्रकारी का ज्ञाता, शत्रु राशि के नवांश में ११ निकृष्ट वा घृणित और तीसरे भाव में गुरु यदि अपनी राशि में हो तो जातक पतित होता है ॥ ३०–३१ ॥

**शुक्र**—यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में शुक्र उच्च राशि में हो तो जातक १ पतित, भूमि के मालिकपन से आजीविका वाला, उच्च राशि के नवांश में हो तो २ कलहप्रिय,

शुभ राशि के षड्वर्ग में हो तो ३ ठगने वाला, नीच राशि में नीच कुलोत्पन्न, नीच राशि के नवांश में ५ निन्दनीय, क्रूर राशि के षड् वर्ग में ६ भांड, मित्र राशि में ७ दूषित आचरण करने वाला, मित्र राशि के नवांश में ८ बलवान्, वर्गोत्तम में ९ कृतघ्न, शत्रु राशि में १० खिलाड़ी; शत्रु राशि के नवांश में ११ चित्रकारी का ज्ञाता और तीसरे भाव में शुक्र यदि अपनी राशि में हो तो जातक अपने मनुष्यों से त्यक्त और मित्र होता है ॥ ३२-३३ ॥

**शनि**—यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में उच्च राशि में शनि हो तो जातक १ श्रेष्ठ राजा उच्च राशि के नवांश में धनी, शुभ राशि के षड्वर्ग में ३ शास्त्र का ज्ञाता, नीच राशि में ४ दूषित आत्मा वाला नीच राशि के नवांश में ५ ठगने वाला, क्रूर राशि के षड्वर्ग में ६ घृणा से रहित, मित्र राशि में ७ सचिव या न्यायवेत्ता, मित्र राशि के नवांश में ८ गुणी व धनवान्, वर्गोत्तम में ९ अभिमानी, शत्रु की राशि में १० शराब पीने में अनुरक्त, शत्रु राशि के नवांश में ११ दीन और तीसरे भाव में शनि यदि अपनी राशि में हो तो जातक १२ शत्रुओं को पराजित करने वाला होता है।

यहाँ चन्द्रमा से शुक्र, शुक्र से गुरू, गुरू से बुध, बुध से शनि, शनि से भौम, भौम से सूर्य अधिक होता है ॥ ३४-३५ ॥

अब आगे यवनाचार्यजी के वाक्यों से विशेष फल को बताते हैं।

यदि जन्मपत्री में तीसरे भाव में सूर्य अपनी उच्च राशि में हो या यों जानिये परमोच्चांश में हो तो जातक अगणित मित्र वाला, यदि चन्द्रमा हो तो किसो देश का मालिक, भौम बुध हों तो एक हजार मित्र वाला, गुरू हो तो सैकड़ों का स्वामी, शुक्र हो तो अस्सी का मालिक और शनि हो तो १ हजार मित्र वाला होता है ॥ ३६-३७ ॥

## अथ तृतीयभावराशिफलम्।

वृद्धयवनः—

तृतीयसंस्थे प्रथमे च राशौ मित्रं द्विजाति लभते मनुष्यः।
परोपकारं प्रणवं शुचिं च प्रभूतवित्तं नृपपूजिताङ्गम् ॥ १ ॥
वृषे तृतीये लभते मनुष्यो मित्रं नरेन्द्रं प्रचुरप्रतापम।
सुवित्तदं भूरियशो निधानं शूरं कविं ब्राह्मणरक्तचित्तम् ॥ २ ॥
तृतीयराशौ सहजप्रयाते मित्रं लभेद्वैश्यगुरुप्रसेवम।
कृषीबलं धर्मकथानुरक्तं सदा सुशीलं सुतसम्मतञ्च ॥ ३ ॥
चतुर्थराशौ च तृतीयसंस्थे मित्रं भवेद्विप्रजनैः सदैव।
शान्तैः सुधर्मैः स्वनघैः कृतज्ञैर्देवद्विजाराधनतत्परैश्च ॥ ४ ॥
सिंहे तृतीये लभते मनुष्यः क्षुद्रं च मित्रं परवित्तलुब्धम्।
वधात्मकं पापकथानुरक्तं प्रचण्डवाक्यं जनगर्हितञ्च ॥ ५ ॥

तृतीयसंस्थे प्रमदाभिधाने मैत्री भवेच्चैव वराङ्गनानाम् ।
विशेषतो चारुविलासिनीभिः सुपुण्यरक्तं गुरुभक्तकञ्च ॥ ६ ॥
तृतीयसंस्थे तु तुलाभिधाने मत्री भवेत्पापपरैर्मनुष्यैः ।
लौल्यात्मकैर्लौल्यकथानुरक्तैः सार्धं मनुष्यस्य सुतार्थयुक्तैः ॥ ७ ॥
अलौ तृतीये भवने मनुष्यैर्मैत्री सदा पापजनैर्द रद्रैः ।
कृतघ्नताद्यैः कलहानुरक्तैः व्यपेतलज्जैर्जनताविरुद्धैः ॥ ८ ॥
चापे तृतीये लभते मनुष्यो मैत्री सुशूरैर्नृपसेवकैश्च ।
वित्तेश्वरैर्धर्मपरैः प्रसन्नैः कृपानुरक्ते रणकोविदैश्च ॥ ९ ॥
मृगस्तृतीये च नरस्य यस्य करोति सौख्यं सततं सुखाढ्यम् ।
नित्यं सुहृद्देवगुरुप्रसक्तं महाधनं पण्डितमप्रमेयम् ॥ १० ॥
कुम्भे तृतीये लभते मनुष्यो मैत्रीं व्रतज्ञैर्बहुकीर्तियुक्तैः ।
क्षमाधिकैः सत्यपरैः सुशीलैर्गुणाधिकैः साधुकथानुरक्तैः ॥ ११ ॥
मीने तृतीये लभते मनुष्यो मत्री सदा हास्यपरैः समुग्धैः ।
कुशीलनैः क्रीडनकैः कुशीलैर्गीतप्रियैर्गेयपरैः खलैश्च ॥ १२ ॥

अब आगे तीसरे भाव में बारह राशियों के फल को वृद्ध यवनाचार्य जी के वाक्यों से कहते हैं।

**तीसरे भाव में मेष राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में मेष राशि हो तो जातक ब्राह्मणों से मित्रता करने वाला, परोपकारी, श्रेष्ठ, पवित्र, अधिक विद्वान् और राजा से सम्मानित होता है ।।१।।

**तीसरे भाव में वृष राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में वृष राशि हो तो जातक राजा, मित्रता से युक्त, बड़ा प्रतापी, सुन्दर धनवान्, अधिक यशस्वी, वीर, कवि और ब्राह्मणों में अनुरक्त चित्त वाला होता है ।।२।।

**तीसरे भाव में मिथुन राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में मिथुन राशि हो तो जातक बनिया व गुरू को सेवा करने से उनका मित्र, खेती करने वाला, धार्मिक कथाओं में आसक्त, सदा सुशील और पुत्र से सम्मत होता है ।।३।।

**तीसरे भाव में कर्क राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में कर्क राशि हो तो जातक सदा ही ब्राह्मणों से मित्रता करने वाला तथा शान्त, सुन्दर धार्मिक, कृतज्ञ और देव व ब्राह्मणों की पूजा में तत्पर मनुष्यों से मैत्री करने वाला होता है ।।४।।

**तीसरे भाव में सिंह राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में सिंह राशि हो तो जातक क्षुद्र मित्र वाला, दूसरे के धन का लोभी, हिंसक, पाप की बातों में आसक्त, उग्र बोलने वाला और मनुष्यों से निन्दनीय होता है ।।५।।

**तीसरे भाव में कन्या राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में कन्या राशि हो तो जातक वेश्याओं से मित्रता करने वाला, विशेष सुन्दर विलास करने वाली स्त्रियों से मैत्री वाला, सुन्दर पुण्यवान् और गुरु का भक्त होता है ।।६।।

**तीसरे भाव में तुला राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में तुला राशि हो तो जातक पापियों से मित्रता करने वाला, चञ्चल आत्मा वालों से चञ्चलता की वार्ता में आसक्त और पुत्र व धन से युक्त मनुष्यों से मैत्री वाला होता है ।। ७ ।।

**तीसरे भाव में वृश्चिक राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में वृश्चिक राशि हो तो जातक सदा पापी-दरिद्री-कृतघ्न-कलही-निर्लज्ज और जनसमूह के विपरीत आचरण करने वाले से मित्रता करने वाला होता है ।।८।।

**तीसरे भाव में धनु राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में धनु राशि हो तो जातक वीर-राजा के नौकर-धनी-धर्मात्मा-प्रसन्न-कृपालु और युद्ध के जानने वालों से मैत्री वाला होता है ।।९।।

**तीसरे भाव में मकर राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में मकर राशि हो तो जातक निरन्तर सुख से युक्त, सदा मित्र-देवता व गुरू का भक्त, बड़ा धनवान् और अप्रमेय विद्वान् होता है ।।१०।।

**विशेष**—पुस्तक में यह श्लोक नहीं है यहाँ बृहद्यवनजातक से दिया है क्योंकि राशिस्थ फलों की समता प्रायः इसी ग्रन्थ से मिलती है ।।१०।।

**तीसरे भाव में कुम्भ राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में कुम्भ राशि हो तो जातक व्रत के जानकार—अधिक कीर्तिमान्, अधिक क्षमावान्—परम सत्यात्मा-सुशील-बड़े गुणवान् और अच्छी बातों में आसक्त मनुष्यों से मित्रता करने वाला होता है ।।११।।

**तीसरे भाव में मीन राशि का फल**—यदि कुण्डली में तीसरे भाव में मीन राशि हो तो जातक हँसने वालों से मोहित-कुशील-खिलाड़ी-दूषित चिन्तक-गान प्रेमी-गायक और दुष्टों से मैत्री वाला होता है ।।१२।।

अथ सहजेशद्वादशभावफलम्—

**बृद्धयवनः**—

सहजपतौ लग्नगते वाग्वादी लम्पटः स्वजनभेदी ।
सेवापरः कुमित्रः क्रूरो वा भवति पुरुषश्च ।।१।।
धनगृहगे सहजेशे भिक्षुर्विधनोऽल्पजीवितः पुरुषः ।
बन्धुविरोधी क्रूरे सौम्ये पुनरीश्वरे खचरे ।। ३ ।।
सहजगतः सहजपतिः समत्वं ससुहृदं शुभं स्वजनम् ।
देवगुरुपूजनरतं नृपलाभपरं नरं कुरुते ।। ३ ।।
भ्रातृपतौ तुर्यगते पितृसोदरसुखकृदुदयकृत्तेषाम् ।
मात्रा सह वैरकरः पितृवित्तभक्षकः पुरुषः ।। ४ ।।
दुश्चिक्यपतौ सुतगते सुबान्धवः सुतसहोदरैः पाल्यः ।
दीर्घायुर्भवति नरः परोपकारैकनिरतमतिः ।। ५ ।।

षष्ठगते सहजपतौ बन्धुविरोधी च नयनरोगी च ।
भूलाभी भवति भृशं कदाचिदपि रोगसंकलितः ॥ ६ ॥
सहजपतौ सप्तमगे नरस्य भार्या भवेत्प्रवररूपा ।
सौभाग्यवती युवती क्रूरे देवरगृहमायाति ॥ ७ ॥
भ्रातुः पतिरष्टमगः सहजमृतसोदरं नरं कुरुते ।
क्रूरे बहुपुरुषं जीवति यद्यष्टवर्षाणि ॥ ८ ॥
धर्मगते सहजपतौ क्रूरे बन्धूज्झितस्तथा सौम्ये ।
सद्बान्धवश्च सुकृती सोदरभक्तो भवति मनुजः । ९ ॥
दुश्चिक्येशे दशमे नृपपूज्यो मातृबन्धुपरिभक्तः ।
उत्तमबन्धुषु सेवा विनिश्चितो जायते मनुजः ॥ १० ॥
लाभस्थः सहजेशः सुबान्धवं राजलाभिनं कुरुते ।
पुरुषं बन्धुषु सेवा विधायिनं भोगनिरतञ्च ॥ ११ ॥
व्ययगे दुश्चिक्येशे मित्रविरोधी स्वबन्धुसंतापी ।
दूरे वासितबन्धुर्विदेशगामी नरो भवति ॥ १२ ॥

इति सहजभावविचारः ।

अब आगे बारह भावों में स्थित तृतीयेश के फल को वृद्ध यवनाचार्य जी के वाक्यों से बतलाते हैं ।

**लग्न में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी लग्न में हो तो जातक वाणी से विवादी, लम्पट, अपने मनुष्यों का भेदी, परम सेवक, दुष्ट मित्र वाला अथवा क्रूर होता है ॥ १ ॥

**धन में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का मालिक धन भाव में हो तो जातक भीख माँगने वाला, निर्धन, अल्पायु, क्रूर ग्रह हो तो बान्धवों का विरोधी, शुभ ग्रह होने पर अधिपति या समर्थवान् होता है ॥ २ ॥

**सहज में तृतीयेश का फल** यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी तीसरे भाव में हो तो जातक समान भावना का, मित्रों से युक्त, अपने मनुष्यों का अच्छा करने वाला, देवता व गुरू की पूजा में आसक्त और राजा से अधिक लाभ करने वाला होता है ॥ ३ ॥

**सुख में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव में हो तो जातक पिता व भाई को सुख देने वाला व उदय करने वाला, माता का विरोधी और पिता के धन का भोगी होता है ॥ ४ ॥

**सुत में तृतीयेश का फल**--यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी पाँचवें भाव में हो तो जातक अच्छे बान्धवों वाला, पुत्र और भाईयों से पालने योग्य, दीर्घायु और दूसरे के उपकार करने में आसक्त होता है ॥ ५ ॥

**शत्रु में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी छठे भाव में हो तो जातक बान्धवों का विरोध करने वाला, आँख का रोगी, भूमि से लाभ करने वाला और किसी भी समय में अधिक रोगों से युक्त होता है ॥ ६ ॥

**जाया में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी सातवें भाव में हो तो जातक की स्त्री श्रेष्ठ रूप वाली और सौभाग्य से युक्ता यदि पापग्रह हो तो देवर के घर जाती है ॥ ७ ॥

**मृत्यु में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी आठवें भाव में हो तो जातक बान्धव और भाईयों का नाशक, यदि क्रूर ग्रह हो तो अधिक पुरुषों के साथ आठ वर्ष तक जीवन प्राप्त करता है ॥ ८ ॥

**भाग्य में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में नवें भाव में तीसरे भाव का स्वामी क्रूर ग्रह हो तो जातक बान्धवों से त्यक्त, शुभग्रह होने पर श्रेष्ठ बान्धवों से युक्त, पुण्यवान् और भाईयों का भक्त होता है ॥ ९ ॥

**कर्म में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी दशम भाव में हो तो जातक राजा से पूजित, माता व बान्धवों का भक्त और श्रेष्ठ बान्धवों का निश्चय ही सेवक होता है ॥ १० ॥

**लाभ में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी ग्यारहवें भाव में हो तो जातक सुन्दर बन्धु वाला, राजा से लाभ करने वाला, बन्धुओं का सेवक और भोग में आसक्त होता है ॥ ११ ॥

**व्यय में तृतीयेश का फल**—यदि जन्म के समय में तीसरे भाव का स्वामी बारहवें भाव में हो तो जातक मित्रों का विरोध करने वाला, अपने 'बान्धवों का संतापी, दूर-वासी बान्धवों वाला और विदेश जाने वाला होता है ॥ १२ ॥

इस प्रकार तीसरे भाव का विचार समाप्त हुआ।

## अथ सुहृद्भावविचारस्तत्र किं चिन्त्यमित्युक्तं

जातकाभरणे—

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्राद्यमालोकनकं चतुर्थे।
दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रवृद्धिर्नियमेन तेषाम् ॥१॥ इति।

यवनः—

स्वस्वामिशुभयुग्दृष्टं चतुर्थं मित्रसौख्यदम्।
बुधो भौमेन संदृष्टो कुरुतेऽत्र सुहृत्क्षयम् ॥ २ ॥

चन्द्राद् विलग्नाच्च रविश्चतुर्थे कुर्यात् पितृव्यस्य गृहास्पदञ्च।
शुक्रस्तु दाराश्रयसौख्यवृत्तं स्रग्वस्त्रसौभाग्यगृहं प्रदद्यात् ॥ ३ ॥
बुधस्तु यत्नाहितबन्धुसौख्यं बन्धौ परावासकृताधिवासम्।
सुदुःखितज्ञोऽन्यगृहाटनानां कुजोऽर्कजो दासगृहाशयानाम् ॥ ४ ॥

पापश्चतुर्थे परवेश्मसंस्थं तदीक्षितोऽन्यैः शुभदैरदृष्टः।
परोत्थसंस्थानपरोपतापं प्रायश्च बन्धूद्भवजं सुदुःखम्॥ ५॥

गर्गः—

जीवेक्षिते शुभं शुक्रे ज्ञारदृष्टे सुहृन्क्षयः।
सुखे क्रूरयुते मातुः क्लेशकृत्सशुभे सुखम्॥ १॥
बन्धुं निहन्ति सविता बन्धुस्थानगतो नृणाम्।
सततं कारयेत्तापं छत्रवाहनमेव च॥ २॥
जनयेद्बहुसौख्यानि सङ्ग्रामेऽप्यपलायनम्।
कृशं च बहुभार्यं च मानिनं कुरुते रविः॥ ३॥
भार्याबान्धवभृत्यौ च हर्म्यं वाहनसम्पदः।
बन्धौ कुमुदबन्धौ च भवन्ति सततं नृणाम्॥ ४॥
बन्धुहीनः कुजे बन्धौ भूम्या जीवी नरः सदा।
प्रवासी पङ्किले देशे भवने वासकर्दमे॥ ५॥
बहुमित्रो बहुधनो बन्धौ पापं विना बुधः।
नानारसविलासी च सपापे त्वन्यथा फलम्॥ ६॥
भवन्ति बालमित्राणि यस्य मित्रगतो गुरुः।
दिव्यमालाम्बरक्रीडा नानावाहनयोग्यता॥ ७॥
परदयितविचित्रावासवासी विलासी
बहुविधसुखभोगी राजपूज्यश्चिरायुः।
वरपरिकरभार्यो भार्गवे बन्धुसंस्थे
भवति मनुजवर्यः सर्वदा विक्रमी च॥ ८॥
भग्नासनगृहो नित्यं विकलो दुःखपीडितः।
स्वस्थानभ्रंशमाप्नोति सौरे बन्धुगते नरः॥ ९॥
नीचमित्रगृहावासी ग्रामोपान्तनिकेतनः।
कुचैलः कुसुमावीशे राहौ मित्रगते नरः॥ १०॥
बन्धुस्थानगते राहौ बन्धुपीडकरो भवेत्।
गवि कर्किणि मेषे च स च बन्धप्रदो भवेत्॥ ११॥
चतुर्थे च भवेत्केतुः मातृपित्रोश्च कष्टकृत्।
अतिचिन्ता महाकष्टं सुहृदं सुखवर्जितम्॥ १२॥

अब आगे चौथे भाव के विचार को कहते हैं। प्रथम चौथे भाव से किन-किन वस्तुओं का विचार करना चाहिये, इसे जातकाभरण के वाक्य से कहते हैं।

जातकाभरण नामक ग्रन्थ में कहा है कि चौथे भाव से मित्र-घर-गाँव-पशु और

खेत आदि का विचार करना चाहिये। यदि चतुर्थ भाव शुभग्रह से दृष्ट या युत हो तो उक्त वस्तुओं की नियम से वृद्धि होती है ॥ १ ॥

अब आगे यवनाचार्य जी के वाक्यों से चतुर्थ भाव के फल को कहते हैं।

यदि जन्मपत्री में चौथा भाव अपने स्वामी से या शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक मित्र को सुख देने वाला या मित्र सुख से युक्त होता है।

यदि चौथे भाव में बुध भौम से दृष्ट हो तो जातक के मित्रों का क्षय होता है अर्थात् मित्रों से हीन होता है ॥ २ ॥

यदि जन्मपत्री में चन्द्रमा से या लग्न से चौथे स्थान में सूर्य हो तो जातक चाचा का घर प्राप्त करने वाला, यदि शुक्र हो तो स्त्री के आश्रय से सुखी, माला, वस्त्र, सुन्दर भाग्य और घर से युक्त होता है ॥ ३ ॥

यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में बुध हो तो जातक यत्न से शत्रु व बान्धवों से सुखी और दूसरे के घर में रहने वाला होता है।

यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में भौम हो तो जातक अच्छी रीति से दुःखों को जानने वाला, दूसरे के घरों में घूमने वाला, यदि शनि हो तो नौकरों के घर में रहने वाला होता है ॥ ४ ॥

यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में पापग्रह अन्य पापग्रह की राशि में अन्य पापग्रह से दृष्ट और शुभग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक दूसरे के उत्थान को देखकर जलने वाला और प्रायः कर बान्धवों से दुःखी होता है ॥ ५ ॥

अब आगे गर्गाचार्य जी के वाक्यों से चौथे भाव में स्थित ग्रहों के फल को कहते हैं।

यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में शुक्र, गुरू से दृष्ट हो तो मित्रों का सुख, यदि बुध भौम से दृष्ट हो तो मित्रों का क्षय, यदि चौथे भाव में पापग्रह हो तो माता को क्लेशकारी, यदि शुभग्रह हो तो माता का सुखकारी होता है ॥ १ ॥

**सूर्य**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में सूर्य हो तो जातक बान्धवों का नाशक, निरन्तर पश्चात्ताप करने वाला, आतपत्र व सवारी से युक्त, अधिक सुखी, युद्ध में नहीं भागने वाला, दुबला, अधिक स्त्रियों से युक्त और अभिमानी होता है ॥ २-३ ॥

**चन्द्रमा**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव से चन्द्रमा हो तो जातक स्त्री, बान्धव व नौकरों से युक्त, घर व सवारी की सम्पत्ति से सदा युक्त होता है ॥ ४ ॥

**भौम**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में भौम हो तो जातक बान्धवों से हीन, भूमि से आजीविका करने वाला, कीचड़ वाले देश का प्रवासी अथवा कीचड़ में बने हुए घर में रहने वाला होता है ॥ ५ ॥

**बुध**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में बुध हो तो जातक अधिक मित्रों से युक्त, बड़ा धनवान्, अनेक रसों का भोगी, यदि पापग्रह के साथ हो तो इसके विपरीत फल होता है ॥ ६ ॥

**गुरू**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में गुरू हो तो जातक बालकों से मित्रता करने वाला, सुन्दर माला व वस्त्रों से खेलने वाला अधिक सवारी के साधनों से सम्पन्न होता है ॥ ७ ॥

**शुक्र**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में शुक्र हो तो जातक दूसरे का प्रिय, विचित्र आवास में रहने वाला, विलासी, अनेक प्रकार से सुख का भोगी, राजा से पूजित, दीर्घायु, श्रेष्ठ समुदाय व स्त्री वाला, मनुष्यों में श्रेष्ठ और सर्वदा पराक्रमी होता है ॥ ८ ॥

**शनि**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में शनि हो तो जातक भग्न ( फूटे ) घर में रहने वाला, सदा अशान्त, दुःख से पीड़ित और अपने स्थान से च्युत होने वाला होता है ॥ ९ ॥

**राहु**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में राहु हो तो जातक दुष्ट मित्र के घर में रहने वाला, गाँव के अन्त में घर वाला और मैले वस्त्र वाला तथा बान्धवों को पीड़ित करने वाला होता है। यदि मेष या वृष या कर्क में हो तो बान्धवों से युक्त होता है ॥ १०-११ ॥

**केतु**—यदि जन्मपत्री में चौथे भाव में केतु हो तो जातक माता-पिता को कष्ट देने वाला, अधिक चिन्तित, बड़े कष्ट से युक्त और मित्र सुख से रहित होता है ॥ १२ ॥

### अथ चतुर्थभावे विशेषफलम् ।

कश्यपः—

स्वोच्चे १ स्वोच्चनवांशे च २ शुभवर्गेऽथ ३ नीचभे ४ ।
नीचांशे ५ क्रूरषड्वर्गे ६ मित्रभे ७ सुहृदंशके ८ ॥ १३ ॥
वर्गोत्तमेऽ९रिभेऽ१० ऽंशे ११ स्वर्क्षे १२ द्वादशधा क्रमात् ।
फलञ्च सुखभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ १४ ॥
कष्टजं १ स्वल्पवित्तं च २ परदारभवं ३ नवम् ४ ।
दुःखाढ्य ५ मृणदुःखाढ्य ६ सपापं ७ चौर्यसंभवम् ८ ॥ १५ ॥
नित्यक्षयं ९ युद्धभवं १० पर सेवाभवं ११ तथा ।
वधबन्ध १२ भवं सूर्ये सुखं स्यात् सुखभावगे ॥ १६ ॥
गजाश्वजं १ हेमभवं २ नित्यमेकविधं ३ तथा ।
द्यूतजं ४ भूरिकृषिजं ५ पापजं ६ बहुपुत्रजम् ७ ॥१७॥
पितृजं ८ विनयोद्भूत ९ मनीतिजनितं १० तथा ।
कपटोत्थं ११ खलोद्भूतं १२ सुखं चन्द्रे सुखस्थिते ॥१८॥
परसूदनसंभूतं १ परवञ्चनसंभवम् २ ।
वञ्चनोत्थं ३ नैव परं ४ मोषजं ५ वधबन्धजम् ६ ॥१९॥
परशोकोत्थ ७ मन्यायात् ८ परस्वविलयोद्भवम् ९ ।
पौंश्चल्या १० परयेत्युत्थं ११ सुखं मोहात् १२ कुजे सुखे ॥२०॥
महाजनोत्थं १ राजोत्थ २ मक्षयं क्लेशज ४ ततः ।
परसेवासमुद्भूत ५ मथ चान्त्यजसङ्गजम् ६ ॥२१॥

सुपुत्रजं ७ कलत्रोत्थं ८ कन्योऽत्थं ९ क्रयविक्रयात् १०।
पशुपाल्यात् ११ स्वबन्धुभ्यः १२ सुखं सौम्ये सुखे स्थिते ॥ २२ ॥
नित्यपूर्णो १ सुखार्द्धं च २ धर्मजं ३ नीचसङ्गजम् ।
मिश्रभावसमुद्भूतं ५ मोषणोत्थं ६ तथाङ्गजम् ७ ॥ २३ ॥
भृत्यजं ८ भगिनीजातं ९ नीचसेवासमुद्भवम् १०।
नीचसेवाभवं ११ भूपसङ्गजं १२ सुखगे गुरौ ॥ २४ ॥
मित्रजातं १ खरोष्ट्रोत्थं २ गजवाजिसमुद्भवम् ३।
परदार्यात् ४ विनाशोत्थं ५ गुरुपत्नीसमुद्भवम् ६ ॥ २५ ॥
गोधनोत्थ ७ मजाव्युत्थं ८ महिषीजं ९ कुसेवया १०।
परदेशभवं ११ देवद्विजसङ्गात् १२ सुखे स्थिते ॥ २६ ॥
पक्षिणो बन्धनाद्युत्थं १ मांसाहारेण २ कर्षणात् ३।
अमानुष्याल् ४ लोकबन्धात् ५ पररन्ध्रातिसङ्गजम् ६ ॥ २७ ॥
स्वस्त्रीत्यागभवं ७ स्वीययोष्यहानेः ८ परार्दनात् ९।
परवञ्चनजं मर्त्यविक्रयाद् ११ रसविक्रयात् १२ ॥ २८ ॥
सुखं शनौ सुखस्थे स्यादथ श्रेष्ठं क्रमाच्च तत् ।
शनिभौमर्कशुक्रज्ञचन्द्रजीवैः सुखस्थितैः ॥ २९ ॥

यवनः—

अनन्तसौख्यः सुरराजमन्त्री राजाधिपः सोमसुतः सितश्च ।
सहस्रकः शीतमयूखमाली षष्ठाधिपाः सूर्यशनैश्चराराः ॥ ३० ॥
स्वतुङ्गसंस्थास्त्वनुपाततश्च सौख्यानि यच्छन्ति सदा ग्रहेन्द्राः ।
नीचाश्रिता नीचसुखा भवन्ति षड्वर्गशुद्धाश्च यथा स्वतुङ्गैः ॥ ३१ ॥

अब आगे चौथे भाव के विशेष फल को कश्यप ऋषि के वाक्यों से कहते हैं ।

**चौथे भाव में सूर्य का विशेष फल** - यदि कुण्डली में चौथे भाव में सूर्य उच्चराशि में हो तो जातक १ कष्ट से, उच्च राशि के नवांश में २ अल्पधन से, शुभ राशि षड्वर्ग में ३ दूसरे की स्त्री से, नीच राशि में ४ नवीनता से, नीचराशि के नवांश में ५ दुःख से, क्रूर राशि के षड्वर्ग में ६ ऋण के दुःख से, मित्र की राशि में ७ पाप से, मित्रराशि के नवांश में ८ चोरी से, वर्गोत्तम में ९ नित्यक्षीणता से, शत्रु की राशि में १० युद्ध से, शत्रुराशि के नवांश में ११ दूसरे की सेवा से और चौथे भाव में यदि सूर्य अपनी राशि में हो तो जातक हिंसा व बन्धन से सुखी होता है ॥१३–१६॥

**चौथे भाव में चन्द्रमा का विशेष फल**—यदि कुण्डली में चौथे भाव में चन्द्रमा उच्च राशि में हो तो जातक १ हाथी व घोड़ाओं से, उच्च राशि के नवांश में हो तो २ सुवर्ण से, शुभ षड्वर्ग में ३ प्रतिदिन एकसा, नीच राशि में ४ जुआ से, नीचराशि के नवांश में ५ अधिक खेती से, क्रूर राशि के षड्वर्ग में ६ पाप से मित्र राशि में ७ अधिक पुत्रों से, मित्र राशि के नवांश में ८ पिता से, वर्गोत्तम में ९ विनम्रता से, शत्रु राशि

में १० अनीति से, शत्रुराशि के नवांश में ११ कपट से और चौथे भाव में चन्द्रमा अपनी राशि में हो तो जातक दुष्टों १२ से सुख प्राप्त करता है ॥१७-१८॥

**चौथे भाव में भौम का विशेष फल**—यदि कुण्डली में चौथे भाव में भौम उच्चराशि में हो तो १ जातक दूसरे को दुःख देने से, उच्च राशि के नवांश में २ दूसरे को ठगने से, शुभ षड्वर्ग में ३ ठगने से, नीच राशि में ४ मध्यम, नीच राशि के नवांश में ५ चोरी से, पाप षड्वर्ग में ६ हिंसा व बन्धन से, मित्र की राशि में ७ दूसरे के शोक से, मित्र राशि के नवांश में ८ अन्याय से, वर्गोत्तम में ९ दूसरे के धन के विलय से, नीच-राशि में १० व्यभिचारिणी स्त्री से, नीच राशि के नवांश में ११ दूसरे की स्त्री से और चौथे भाव में भौम अपनी राशि में हो तो जातक मोह से १२ सुख प्राप्त करता है ॥१९-२०॥

**चौथे भाव में बुध का विशेष फल**—यदि कुण्डली में चौथे भाव में बुध उच्चराशि में हो तो १ जातक अधिकजनों से, उच्च राशि के नवांश में २ राजा से, शुभ षड्वर्ग में ३ अक्षीणता से नीच राशि में ४ क्लेश से, नीचराशि के नवांश में ५ दूसरे की सेवा से, क्रूर राशि के षड्वर्ग में ६ अन्त्यजों की सङ्गति से, मित्र राशि में ७ अच्छे पुत्र से, मित्र राशि के नवांश में ८ स्त्री से, वर्गोत्तम में ९ कन्या से, शत्रु राशि में १० खरीदने व बेचने से, शत्रुराशि के नवांश में ११ पशुपालन से और चौथे भाव में यदि अपनी राशि में १२ बुध हो तो जातक अपने बान्धवों से सुखी होता है ॥ २१-२२ ॥

**चौथे भाव में गुरु का विशेष फल**—यदि कुण्डली में चौथे भाव में गुरु उच्च राशि में हो तो जातक १ नित्य पूर्णता से, उच्च राशि के नवांश में २ आधा, शुभ षड्वर्ग में ३ धर्म से, नीचराशि में ४ दुष्टों की सङ्गति से, नीच राशि के नवांश में ५ मिश्रित भावना से, क्रूर राशि के षड्वर्ग में ६ चोरी से, मित्र राशि में ७ शरीर से, मित्र राशि के नवांश में ८ नौकर से, वर्गोत्तम में ९ बहिन से, शत्रु की राशि में १० दुष्टों की सेवा से, शत्रुराशि के नवांश में ११ दुष्टों की सेवा से और चौथे भाव में गुरु यदि अपनी राशि में हो तो जातक १२ राजा की सङ्गति से सुख प्राप्त करता है ॥२३-२४॥

**चौथे भाव में शुक्र का विशेष फल**—यदि कुण्डली में चौथे भाव में शुक्र उच्च राशि में हो तो जातक १ मित्र से, उच्च राशि के नवांश में २ गधा और ऊँट से, शुभ राशि के षड्वर्ग में ३ हाथी और घोड़ाओं से, नीच राशि में ४ दूसरे के स्त्री से, नीच राशि नवांश में ५ विनाश से, क्रूर राशि के षड्वर्ग में ६ गुरु पत्नी से, मित्र की राशि में ७ गायों से, मित्र राशि के नवांश ८ में भेड़ बकरी से, वर्गोत्तम में ९ स्त्री से, शत्रु राशि में १० दूषित सेवा से, शत्रु राशि के नवांश में ११ दूसरे देश से और चौथे भाव में शुक्र यदि अपनी राशि में हो तो १२ जातक देवता व ब्राह्मणों की सङ्गति से सुख प्राप्त करता है ॥ २५-२६ ॥

**चौथे भाव में शनि का विशेष फल**—यदि कुण्डली में चौथे भाव में शनि उच्च राशि में हो तो १ पक्षियों के बन्धन से, उच्च राशि के नवांश में २ मांस खाने से, शुभ राशि के षड्वर्ग में ३ कर्षण से ( खेती ), नीच राशि में ४ मनुष्येतर से, नीच राशि के

मृगे सुखस्थे सुखभाग्मनुष्यः सदा भवेत्तोयनिषेवणेन।
उद्यानवापीतटसङ्क्रमेन मित्रप्रचारैः सुरतप्रधानैः॥ १०॥
घटे सुखस्थे प्रमदाभिधानात्प्राप्नोति सौख्यं विविधं मनुष्यम्।
मिष्टान्नपानैः फलशाकपत्रैर्विदग्धवाक्यैः कुहकानुकारैः॥ ११॥
मीने सुखस्थे तु सुखं मनुष्यः प्राप्नोति सौख्यं जलसंश्रयेण।
शमैः सदा देवसमुद्भवैश्च स्थानैः सुवस्त्रैः सुधनैर्विचित्रैः॥ १२॥

अब आगे चौथे भाव में बारह राशियों के फल को वृद्ध यवनाचार्यजी के वचन से कहते हैं।

**सुख भाव में मेष राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में मेष राशि हो तो जातक पशुओं से, विलासिनी स्त्रियों से, विचित्र भोगों से, अनेक प्रकार अन्न व पान से और पराक्रम से पैदा किये हुए धन से सुखी होता है॥ १॥

**सुख भाव में वृष राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में वृष राशि हो तो जातक अधिक मान्यता व सम्मान से, पराक्रम से, राजा के सेवन से, ब्राह्मणों की पूजा से और नियम तथा व्रतों से सुखी होता है॥ २॥

**सुख भाव में मिथुन राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में मिथुन राशि हो तो जातक स्त्रियों से, जल में स्नान से, वन की सेवा से, अधिक पुष्प और वस्त्रों के सेवन से सुखी होता है॥ ३॥

**सुख भाव में कर्क राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में कर्क राशि हो तो जातक स्वरूपवान्, सुन्दर भाग्यशाली, सुशील, स्त्री से सङ्गति करने वाला, समस्त गुणों से युक्त, विद्या से विनयी और जन प्रिय होता है॥ ४॥

**सुख भाव में सिंह राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में सिंह राशि हो तो जातक कदाचित् क्रोध से, अधिक दरिद्रता से, अशीलता से, दुष्ट मित्रों के सङ्ग से और धन के संग्रह से सुखी होता है॥ ५॥

**सुख भाव में कन्या राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में कन्या राशि हो तो जातक स्त्रियों के संयोग से, अधिक अन्न पान से, राजा की सेवा से अथवा बड़े उद्यम से और धर्म के सेवन से सुखी होता है॥ ४॥

**सुख भाव में तुला राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में तुला राशि हो तो जातक चुगलखोरी से, दूसरे के दोषों को देखने से व कहने से, चोरी से, युद्ध से और मोह से सुखी होता है॥ ७॥

**सुख भाव में वृश्चिक राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में वृश्चिक राशि हो तो जातक सदा अत्यन्त तीखा, दूसरे से भयभीत चित्त वाला, अधिक सेवा, पराक्रम व गर्व से रहित, दूसरे से चतुर, बुद्धि व धीरता से रहित होता है॥ ८॥

**सुख भाव में धनु राशि का फल**—यदि जन्माङ्ग में चौथे भाव में धनु राशि हो तो जातक युद्ध में रहने से, अच्छा बोलने से, विचित्र घोड़ाओं की सेवा से और बिना बन्धन से सुखी होता है॥ ९॥

**सुख भाव में मकर राशि का फल**—यदि जन्माऽङ्ग में चौथे भाव में मकर राशि हो तो जातक जल सेवन से, बाग, बगीचा, कुआ, बावरी के संयोग से, मित्रों के प्रचार से और श्रेष्ठ संयोग से सुखी होता है ॥ १० ॥

**सुख भाव में कुम्भ राशि का फल**—यदि जन्माऽङ्ग में चौथे भाव में कुम्भ राशि हो तो जातक स्त्री के नाम से अनेक प्रकार से, मधुर भोजन व पान से, फल, साग, पत्ताओं से, विद्वानों के वचन से और ठगी से सुखी होता है ॥ ११ ॥

**सुख भाव में मीन राशि का फल**—यदि जन्माऽङ्ग में चौथे भाव में मीन राशि हो तो जातक जल सेवन से, सदा शान्ति से, देवस्थानों से, सुन्दर वस्त्रों से और विचित्र धनों से सुखी होता है ॥ १२ ॥

## अथ चतुर्थेशद्वादशभावफलम्

तुर्यपतौ लग्नगते पितृपुत्रौ स्नेहलौ मिथः कुरुते ।
पितृपक्षवैरिकलितं पितृनाम्ना सुप्रसिद्धञ्च ॥ १ ॥
पातालपे धनस्थे क्रूरखगे पितृविरोधकृच्च शुभे ।
पितृपालकः प्रसिद्धः पिता हि भुङ्क्ते च तल्लक्ष्मीम् ॥ २ ॥
तुर्येशे सहजगते पितृमातृच्छेदकं विदितपितरम् ।
पित्रा सह कलहकरं पितृबान्धवपालकं पुरुषम् ॥ ३ ॥
तुर्यगते तुर्यपतौ पितरीक्षितयाधिनाथमानकरः ।
विदितः पितृलाभपरो भवति सुधर्मा सुखी निधिपः ॥ ४ ॥
सुतगे तुर्यगृहेशे पिता स लाभोऽङ्गजश्च दीर्घायुः ।
भवति क्षितिप्रसिद्धः ससुतः सुतपालकः सोऽपि ॥ ५ ॥
हिबुकपतौ रिपुसंस्थे पितुरर्थविनाशकः पितरि वैरी ।
पितृदोषकरः क्रूरः सौम्ये धनसञ्चकस्तनयः ॥ ६ ॥
अम्बुपतौ सप्तमगे क्रूरे स्नुषां न पालयति ।
सौम्ये पालयति पुनः कुलटां तां कुजकवी कुरुतः ॥ ७ ॥
छिद्रगतस्तुर्यपतिः क्रूरो रोगान्वितं दरिद्रञ्च ।
दुष्कर्मरतं मृत्युप्रियमथ मानवं कुरुते ॥ ८ ॥
सुकृतगते तुर्यपतौ पितर्यसंगीतसमस्तविद्यावान् ।
पितृसंग्रहधर्मपरः पितृनिरपेक्षो भवेन्मनुजः ॥ ९ ॥
पातालपेऽम्बरगते पापे सुतमातरं त्यजेज्जनकः ।
श्रयते त्वन्यां दयितां सौम्ये पुनरन्यसेवावान् ॥ १० ॥
एकादशगे तुर्याधिपतौ पितृपालकः सुकर्मा च ।
पितृभक्तो भवति सुतः प्रचुरायुर्व्याधिविकलश्च ॥ ११ ॥

द्वादशगे तुर्यपतौ मृतः पिता विदेशगो वाच्यः।
पुत्रस्य पापखचरे त्वन्यपितुर्जन्म निर्देश्यः॥ १२॥

इति चतुर्थभावः।

अब आगे बारह भावों में स्थित चतुर्थेश के फल को कहते हैं।

**लग्नस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश लग्न में हो तो जातक पिता व पुत्र से स्नेह करने वाला, पिता का पक्ष शत्रुओं से युक्त और पिता के नाम से विख्यात होने वाला होता है ॥१॥

**धनस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में पापग्रह चतुर्थेश दूसरे भाव में हो तो जातक पिता से विरोध करने वाला, यदि शुभ ग्रह हो तो पिता की सेवा करने से विख्यात होने वाला और पिता उसकी लक्ष्मी का सुख भोगता है ॥२॥

**पराक्रमस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश तीसरे भाव में हो तो जातक पिता माता को भेदित करने वाला, प्रसिद्ध पिता वाला, पिता के साथ कलह करने वाला और पिता के बान्धवों का पालन करने वाला होता है ॥३॥

**सुखस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश चौथे भाव में हो तो जातक पिता की दृष्टि से प्रभुत्व पाने वाला, अभिमानी, प्रसिद्ध पिता से लाभ करने वाला, अच्छा धर्मात्मा, सुखी और खजाने का मालिक होता है ॥४॥

**पुत्रस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश पांचवें भाव में हो तो जातक पिता व पुत्र के लिये लाभ करने वाला, दीर्घायु, भूमि में विख्यात, पुत्रवान् और पुत्र का पालन करने वाला होता है ॥५॥

**शत्रुस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश छठे भाव में हो तो जातक पिता के धन का विनाशक, पिता का शत्रु, यदि पापग्रह हो तो पिता के लिये दोषी यदि शुभ हो तो धन का संग्रह करने वाला व पुत्रवान् होता है ॥६॥

**जायास्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश पापग्रह सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री का पालन करने वाला, शुभ ग्रह हो तो स्त्री का पालक, यदि भौम या शुक्र हो तो व्यभिचारिणी स्त्री से युक्त होता है ॥७॥

**मृत्युस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश पापग्रह आठवें भाव में हो तो जातक रोगी, दरिद्री, बुरे कार्यों में अनुरक्त और मृत्यु प्रेमी होता है ॥ ८ ॥

**धर्मस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश नवें भाव में हो तो जातक का पिता संगीत को छोड़कर समस्त विद्याओं का जानकार, पिता के धर्म पर चलने वाला और पिता से उपेक्षित होता है ॥ ९ ॥

**कर्मस्थ चतुर्थेश का फल**— यदि जन्म के समय में चतुर्थेश दशम भाव में हो तो जातक माता के साथ पिता से संत्यक्त और पिता दूसरी का आश्रयी, शुभग्रह हो तो दूसरों की सेवा करने वाला होता है ॥ १० ॥

**लाभस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश ग्यारहवें भाव में हो तो जातक पिता का पालक, अच्छा कार्य करने वाला, पिता का भक्त, दीर्घायु और रोग से अशान्त होता है ॥ ११ ॥

**व्ययस्थ चतुर्थेश का फल**—यदि जन्म के समय में चतुर्थेश बारहवें भाव में हो तो जातक के पिता की परदेश में मृत्यु, पापग्रह हो तो दूसरे से उत्पन्न जातक को समझना चाहिये ॥ १२ ॥

इस प्रकार चौथे भाव का फल समाप्त हुआ ॥ १-१२ ॥

अथ सुतभवनचिन्ता । तत्र सुतभावे किं चिन्त्यमित्युक्तं जातकाभरणे—

बुद्धिः प्रबन्धात्मजमन्त्रविद्याविनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्था ।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिन्तनीयम् ॥ १ ॥

[1]सारावल्याम्—

सुतभवनमशुभयुतं शुभदृष्टं वा सुतर्क्षमिह येषाम् ।
तेषां प्रसवः पुंसां भवत्यवश्यं न विपरीते ॥ २ ॥
एकतमे गुरुवर्गे सुतराशौ चौरमो भवेत्पुत्रः ।
लग्नाच्चन्द्रादथवा बलयोगाद् वीक्षितेऽपि वा सौम्यैः ॥ ३ ॥
सङ्ख्या नवांशतुल्या सौम्यांशे तावती सदा दृष्टा ।
शुभदृष्टे तद्द्विगुणा क्लिष्टा पापांशकेऽथवा दृष्टे ॥ ४ ॥

ग्रन्थान्तरे—

यावत्सङ्ख्या ग्रहाणां सुतभवनगता पूर्णदृष्टिर्गता वा
तावत्सङ्ख्याप्रसूतिर्भवति बलयुताः पुंग्रहाः पुत्र जन्म ।
पुत्री शुक्रस्तु चन्द्रो हिमसुतरविजो गर्भहानिं करोति
केचिच्चन्द्राद्विचार्यं मुनिवरकथितं तद्विचिन्त्यं नवांशे ॥ ५ ॥
पञ्चमभवनस्वामी यत्सङ्ख्येंऽशे भवति तावती सङ्ख्या ।
शुक्रनवांशे तस्मिन् बहून्यपत्यानि शुक्रसंदृष्टे ॥ ६ ॥
पञ्चमाधीश्वरस्यांशो यावद्भिः पापखेचरैः ।
वीक्ष्यते तन्मिता गर्भाः व्लीयन्ते शुभैः शुभम् ॥ ७ ॥

[2]सारावल्याम्—

सौरर्क्षे सौरगणे बुधदृष्टे गुरुकुजार्किदृग्हीने ।
क्षेत्रजपुत्रं जनयति बौधेऽपि गणे रविजदृष्टे ॥ ८ ॥
मान्दं सुतर्क्षमिन्दुर्निरीक्षिते यदि शनैश्चरेण युतम् ।
दत्तकपुत्रोत्पत्तिः क्रीतस्य बुधेन चैवं स्यात् ॥ ९ ॥

---

१. ३४ अ० २५-२७ श्लो० । २. ३४ अ० २८-४२ श्लो० ।

सप्तमभावो कौजे सौरयुते पञ्चमे सदा भवने ।
कृत्रिमपुत्रं विन्द्याच्छेषग्रहदर्शनान्मुक्ते ॥ १० ॥
वर्गे पञ्चमराशौ सौरे सूर्येण वात्र संयुक्ते ।
लोहितदृष्टे वाच्यो जातस्य सुतोऽधमप्रसवः ॥ ११ ॥
चन्द्रे भौमांशगते धीस्थे मन्दावलोकिते भवति ।
गूढोत्पन्नः पुत्रः शेषग्रहदर्शनाज्जाते ॥ १२ ॥
शनिवर्गस्थे चन्द्रे शनियुक्ते पञ्चमे सदा भवने ।
शुक्ररविभ्यां दृष्टे पुत्रः पौनर्भवो भवति ॥ १३ ॥
तस्मिन्नेव च भौमे शशिवर्गस्थे निरीक्षिते रविणा ।
पुरुषस्य भवति पुत्रो परविद्धश्चेति मुनिवचनात् ॥ १४ ॥
वर्गे रविचन्द्रमसोः सुतगेहे चन्द्रसूर्यसंयुक्ते ।
शुक्रेण दृष्टिमात्रे पुत्रः कथितः सहोढश्च ॥ १५ ॥
पापैर्बलिभिर्युक्ते पापर्क्षे पञ्चमे सदा राशौ ।
जातोऽपुत्रः पुरुषः सौम्यैर्ग्रहदर्शनातीते ॥ १६ ॥
शुक्रनवांशे तस्मिञ्छुक्रेण निरीक्षिते त्वपत्यानि ।
दासी प्रभवानि वदेच्चन्द्रादपि केचिदाचार्याः ॥ १७ ॥
सितशशिवर्गे धीस्थे ताभ्यां दृष्टेऽथवापि संयुक्ते ।
प्रायेण कन्यकाः स्युः समराशिगणेऽपि चान्यथा पुत्राः ॥ १८ ॥
लग्नाद् दशमे चन्द्रे सप्तमसंस्थे भृगोः पुत्रे ।
पापैः पातालस्थैर्वंशच्छेत्ता भवेज्जातः ॥ १९ ॥
भौमः पञ्चमभवने जातं जातं विनाशयति पुत्रम् ।
दृष्टे गुरुणा प्रथमं सितेन न च सर्वसंदृष्टः ॥ २० ॥
सुतपतिरस्तंगतो वा पापयुतः पापवीक्षितो वापि ।
सन्ततिबाधां कुरुते केन्द्रे कोणे द्विलाभगे चन्द्रे ॥ २१ ॥
चन्द्रो यदार्कसक्तः कलत्रसंस्थस्तथैव पञ्चमे गेहे ।
रविदृष्टोऽप्यथ सहितः कानीनः संभवेत्पुत्रः ॥ २२ ॥

धनजनसुखहीनः पञ्चमस्थैश्च पापैर्भवति विकृत एव क्ष्मासुते तत्र जातः ।
दिवसकरसुते च व्याधिभिस्तप्तदेहः सुरगुरुबुधशुक्रैः सौख्यसंपद् धनाढ्यः ॥२३॥

अब आगे पञ्चम भाव से होरा शास्त्र के जानने वालों को विचारने योग्य बातों को जातकाभरण नामक ग्रन्थ के आधार पर कहते हैं ।

जातकाभरण में कहा है कि बुद्धि-प्रबन्ध-सन्तान-मन्त्र-विद्या-विनय-गर्भ स्थिति और नीति का विचार पञ्चम भाव से करना चाहिये ॥ १ ॥

अब आगे सारावली के वाक्यों से पञ्चम भाव के फल को बतलाते हैं।

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में पाप ग्रह शुभ ग्रह से दृष्ट हो या शुभ ग्रह की राशि, शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक सन्तान से युक्त होता है। इसके विपरीत में अर्थात् पाप ग्रह या पाप ग्रह की राशि पाप ग्रह से दृष्ट हो तो सन्तान का अभाव होता है ॥ २ ॥

**विशेष**—प्रकाशित सारावली में 'सुतभवनं शुभयुक्तं' यह पाठान्तर है ॥ २ ॥

यदि कुण्डली में लग्न वा चन्द्रमा से पञ्चम राशि में अर्थात् भाव में शुभ ग्रह की राशि में एक ही गुरु का वर्ग हो अथवा बली शुभ ग्रह से दृष्ट पञ्चमस्थ शुभ राशि हो तो जातक को अपनी स्त्री में स्वयं के गर्भाधान से पुत्र होता है ॥ ३ ॥

**सन्तान संख्या का ज्ञान**—यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में शुभ ग्रह का नवांश हो तो जातक को नवांश संख्या तुल्य सन्तानोत्पत्ति होती है। यदि उक्त नवांश शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो दूनी सन्तान संख्या समझना चाहिये। यदि पाप ग्रह के नवांश में पञ्चमस्थ राशि शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो कठिनाई से सन्तान होती है ॥ ४ ॥

अब आगे ग्रन्थान्तर के वाक्य से सन्तान ज्ञान को बताते हैं।

जन्म के समय में पञ्चम भाव जितने बली ग्रहों से दृष्ट हो उतनी सन्तानों से युक्त जातक होता है। इसमें जितने पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो उतने पुत्र समझने चाहिये, तथा शुक्र व चन्द्रमा से दृष्ट होने पर कन्या सन्तान से युक्त जातक होता है। यदि बुध या शनि से दृष्ट पञ्चम भाव हो तो गर्भ स्राव होता है। किसी आचार्य का कहना है कि चन्द्रमा से पञ्चम भाव में इसका विचार करना चाहिये किन्तु चन्द्रमा से पञ्चम भाव में नवांश के आधार पर सन्तान का ज्ञान करना चाहिये। ५ ॥

जन्माङ्ग में पञ्चमेश जितनी संख्या के नवांश में हो उतनी सन्तान, यदि पञ्चमेश शुक्र के नवांश में शुक्र से दृष्ट हो तो अधिक सन्तान उत्पन्न होती हैं ॥ ६ ॥

जन्म के समय पञ्चमेश जिस नवांश में हो वह जितने पापग्रहों से दृष्ट हो उतने गर्भ नष्ट होते हैं, तथा शुभग्रह से दृष्ट होने पर गर्भ नहीं होता है ॥ ७ ॥

अब आगे सारावली के वाक्यों से क्षेत्रजादि पुत्र योगों को बताते हैं।

**क्षेत्रज पुत्र प्राप्ति योग ज्ञान**—यदि कुण्डली में पञ्चम में शनि की राशि या शनि वर्ग बुध से दृष्ट और गुरु, भौम व शनि से अदृष्ट हो या पञ्चम भाव में बुध की राशि का वर्ग शनि से दृष्ट हो तो जातक क्षेत्रज पुत्र से युक्त होता है ॥ ८ ॥

**विशेष--क्षेत्रज पुत्र का लक्षण**—'यस्तल्पजः प्रमीतस्य क्लीबस्य व्याधितस्य वा। स्वधर्मेण नियुक्तायां सपुत्रः क्षेत्रजः स्मृतः' मनुस्मृ० ९ अ० १६७ श्लो०। प्रकाशित सारावली में 'गुरुकुजार्कदृग्हीनः' यह पाठान्तर प्राप्त है। वृद्धयवन जातक में केवल सूर्य भौम का ही वर्णन प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

**दत्तक व क्रीत पुत्र प्राप्ति योग**—यदि कुण्डली में पञ्चमभाव में शनि अपनी राशि में चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक दत्तक पुत्र से युक्त होता है।

यदि बुध की राशि में बुध चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक को क्रीत पुत्र होता है ॥ ९ ॥

**विशेष—दत्तक पुत्र लक्षण—**माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि । सदृशं प्रीतिसंयुक्तं सज्ञेयो दत्रिमः सुतः' ( मनुस्मृ० ९ अ० १६८ श्लो० ) ।

क्रीत पुत्र लक्षण—'क्रीणीयाद्यस्त्वपत्यर्थं मातापित्रोर्यमन्तिकात् । सक्रीतकः सुतस्तस्य सदृशोऽसदृशोऽपि वा' ( मनुस्मृ० ९ अ० १७४ श्लो० ) ॥ ९ ॥

**कृत्रिम पुत्र योग ज्ञान—**यदि कुण्डली में पञ्चमभाव में भौम का सप्तमांश शनि से युक्त तथा अन्य ग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक कृत्रिम पुत्र से युक्त होता है ॥ १० ॥

**विशेष—कृत्रिम पुत्र का लक्षण—**'सदृशन्तु प्रकुर्याद्यं गुणदोषविचक्षणम् । पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं सविज्ञेयश्च कृत्रिमः' ( मनुस्मृ० ९ अ० १६९ श्लो० ) ॥ १० ॥

**अधम पुत्र योग—**यदि कुण्डली में पञ्चमभाव में शनि का वर्ग हो वा सूर्य सुतभाव में भौम से दृष्ट हो तो जातक अधम पुत्र से युक्त होता है ॥ ११ ॥

**गूढ़ पुत्र योग—**यदि कुण्डली में भौम के नवांश में चन्द्रमा, शनि से दृष्ट व अन्य ग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक गूढ़ पुत्र से युक्त होता है ॥ १२ ॥

**विशेष—गूढ पुत्र का लक्षण—**'उत्पद्यते गृहे यस्य न च ज्ञायेत कस्य सः । सगृहे गूढ उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तल्पजः' ( मनुस्मृ० ९ अ० १७० श्लो० ) ॥ १२ ॥

**पुनर्भू पुत्र योग—**यदि कुण्डली में पञ्चमभाव में शनि के वर्ग में चन्द्रमा शुक्र सूर्य से दृष्ट हो तो जातक पुनर्भू पुत्र से युक्त होता है ॥ १३ ॥

**विशेष—पुनर्भू पुत्र का लक्षण—**'या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया । उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते' ( मनुस्मृ० ९ अ० १७५ श्लो० ) ॥ १३ ॥

**परविद्ध पुत्र योग—**यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में चन्द्रमा के वर्ग में भौम, सूर्य से दृष्ट हो तो जातक परविद्ध पुत्र से युक्त होता है ऐसा मुनियों का कथन है ॥१४॥

**विशेष—**प्रकाशित सारावली में 'शनि वर्गस्थे' 'पुत्रोऽपविद्ध इति करुणमुनि' यह पाठान्तर प्राप्त है ॥ १४ ॥

**सहोढ पुत्र योग—**यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में सूर्य, चन्द्रमा के वर्ग में सूर्य चन्द्रमा, शुक्र से दृष्ट हों तो जातक सहोढ पुत्र से युक्त होना है ॥ १५ ॥

**विशेष—सहोढ पुत्र का लक्षण—**'या गर्भिणी संस्क्रियते ज्ञाताज्ञातापि वा सती । वोढुः सगर्भो भवति सहोढ इति चोच्यते' ( मनुस्मृ० ९ अ० १७३ श्लो० ) ॥ १५ ॥

**अपुत्र योग—**यदि कुण्डली में पापग्रह की राशि पञ्चम भाव में व बली पापग्रह शुभग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक पुत्र से हीन होता है ॥ १६ ॥

**दासी पुत्र योग—**यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में शुक्र का नवांश शुक्र से दृष्ट हो तो जातक दासी ( नौकरानी ) के पुत्र से युक्त होता है। किसी आचार्य का मत है कि चन्द्रमा से पञ्चम भाव में उक्त स्थिति का विचार करना चाहिये ॥ १७ ॥

**कन्या सन्तति योग**—यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में शुक्र चन्द्रमा का षड्वर्ग हो तथा शुक्र चन्द्र से दृष्ट या युत पञ्चम भाव हो तो जातक कन्या सन्तति से युक्त होता है। या पञ्चम भाव में सम राशियों का षड्वर्ग शुक्र चन्द्रमा से दृष्ट या युक्त हो तो भी प्रायः कन्या सन्तान से युक्त होता है। इसके विपरीत स्थिति में पुत्रवान् होता है ॥ १८ ॥

**सन्तान हीन योग**—यदि कुण्डली में लग्न से दशम भाव में चन्द्रमा तथा सप्तम में शुक्र और पापग्रह चौथे भाव में हो तो जातक सन्तान हीन होता है ॥ १९ ॥

यदि कुण्डली में पाँचवे भाव में भौम हो तो सन्तान ( पुत्र ) हो होकर नष्ट हो जाते हैं। यदि पञ्चमस्थ भौम, गुरु या शुक्र से दृष्ट हो तो प्रथम सन्तान का नाश नहीं होता है। यदि सब ग्रहों से दृष्ट भौम हो तो सन्तान का अभाव होता है ॥ २० ॥

यदि कुण्डली में पञ्चमेश अस्त हो या पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तथा चन्द्रमा केन्द्र ( १।४।७।१० ) में या त्रिकोण में या दूसरे या ग्यारहवें भाव में हो तो सन्तति उत्पन्न होने में बाधा होती है ॥ २१ ॥

**विशेष**—यह पद्य प्रकाशित सारावली में अनुपलब्ध है ॥ २१ ॥

**कानीन पुत्र योग**

यदि कुण्डली में सातवें या पाँचवें भाव में चन्द्रमा, सूर्य हों या इनसे दृष्ट या युक्त उक्त भाव हों तो जातक कुमारी से उत्पन्न पुत्र से युक्त होता है ॥ २२ ॥

**विशेष**—कानीन पुत्र का लक्षण 'पितृवेश्मनि कन्या तु यं पुत्रं जनयेद्रहः। तं कानीनं वदेन्नाम्ना वोढुः कन्या समुद्भवः' ( मनुस्मृ० ९ अ० १७२ श्लो० ) ॥ २२ ॥

**पञ्चमस्थ शुभ पापग्रह फल**—

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में पापग्रह हों तो जातक धन-जन और सुख से रहित, यदि भौम हो तो विकार से युक्त या अशान्त, शनि हो तो रोगों से पीडित देहधारी, यदि बुध, गुरु, शुक्र हों तो सुख, संपत्ति व धन से युक्त होता है ॥ २३ ॥

वन्ध्यायोगाः जातकप्रदीपे—

> नो सूते तनुगेऽर्कजे द्युनसितेऽथो मन्दसूर्यौ द्युने
> कर्मे पूर्णगुरुः प्रपश्यति यदा नो गर्भिणी जायते।
> दृश्येऽर्धे सितसूर्यजौ द्विपि विधुर्द्यूनेऽपि चोग्रेक्षिते
> नो सूतेऽथ रिपौ शशिक्षितिसुतौ तोयर्क्षगौ नोद्भवः ॥ १ ॥
> पञ्चमराशौ पापो जातं जातं शिशुं विनाशयति।
> सप्तमराशौ पापा द्वे भार्ये बादरायणेनोक्ते ॥ २ ॥
> भौमे राहुणा वापि युक्तः स्यात्पञ्चमेश्वरः।
> राहुभौमान्तरस्थो वा पुत्रनाशकरो भवेत् ॥ ३ ॥
> अस्तंगते पञ्चमेशे पापाक्रान्ते च दुर्बले।
> नापत्यं जायते दैवाज्जायते म्रियते शिशुः ॥ ४ ॥

लग्नात्तृतीयभवने यदि सोमसुतो भवेत् ।
द्वौ पुत्रौ कन्यकास्तिस्रो जायन्ते नाऽत्रसंशयः ॥ ५ ॥
लग्ने पापो व्यये पापो धने सौम्योऽपि संस्थितः ।
पञ्चमे भवने पापः परिवारक्षयङ्करः ॥ ६ ॥
धनस्थाने यदा क्रूरः क्रूरग्रहनिरीक्षितः ।
न नश्यति निजं क्षेत्रमल्पपुत्रस्तदा भवेत् ॥ ७ ॥
यवनः—
सूर्यार्किभौमैकतराश्रिते भे तद्वीक्षिते तद्ग्रहभागयोगे ।
एषां गृहस्थे च कुजेऽल्पवीर्ये समुद्भवः कीर्तित अप्रजानाम् ॥ ८ ॥
नीचारिभांशोपगते जिते स्यात्काव्ये कुजे जन्ममृतप्रजानाम् ।
शुक्रेन्दुखस्थे च सुता प्रजानां शेषांशकस्थे तु सुतप्रजानाम् ॥ ९ ॥
सौम्यदृष्टिविहीने च पापैर्बलिभिरन्वितैः ।
पापभे पञ्चमे तत्र ह्यनपत्यो भवेन्नरः ॥ १० ॥
पापः पञ्चमसंस्थः पुत्रविनाशं करोति बलहीनः ।
सौम्यः शुभं विधत्ते बलसहितश्चाष्टमाधिपं हित्वा ॥ ११ ॥
इन्दोर्वेश्मनि धीस्थे सौरे बहुपुत्रभाग्यसंयुक्तः ।
सूर्ये स्थिते तृतीये पुत्रं जनयेदसन्मिश्रे ॥ १२ ॥
भौमे शशिवेश्मस्थे द्वितीयपाणिगृहे सुतं विन्द्यात् ।
तत्रस्थेऽपि शशाङ्के स्वल्पापत्यो बहुस्त्रीकः ॥ १३ ॥
इन्दोर्वेश्मनि जीवे पुत्रस्थे दारिका बहुत्वं स्यात् ।
सौम्येऽल्पसुतत्वं स्याच्छुक्रे बहुपुत्रभाक्तृतीयभार्यायाम् ॥ १४ ॥
अशुभशुभैः संमिश्रे चन्द्रगृहे पुत्रभाग्बलाधिक्यात् ।
विपरीतं फलं ब्रूयात् पापानां जन्मकालेऽपि ॥ १५ ॥
चन्द्रे सुतभं याते रविगेहे दारिकाबहुत्वं स्यात् ।
कन्यायां हिमरश्मौ तथैव वाच्यं तु हिबुके वा ॥ १६ ॥
पापद्वयेन युक्ते पञ्चमभवने बहुप्रजालाभः ।
पञ्चमे नवमस्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः ।
अग्रे जाता विनश्यन्ति पश्चाज्जीवन्ति वै सुताः ॥ १७ ॥
विवाहितायामन्यायामेकपुत्रो भवेत्तदा ॥
विख्यातो भुवने त्यागी सदीर्घायुर्महीपतिः ॥ १८ ॥
एकादशे यदा क्रूरः पञ्चमे शुक्रशीतगू ।
प्रथमं कन्यका जन्म माता तस्य सकष्टकाः ॥ १९ ॥

सौम्ये स्वक्षेत्रगते पञ्चमे पुत्रशोकभाग्भवति।
सिंहस्थितेऽपि चैवं नवमे वा तृतीयभार्यायाम् ॥ २० ॥
जीवे मकरं याते पञ्चमभे आत्मजं मृतं विन्द्यात्।
मीनस्थितेऽपि सुतस्थे भार्या नाशोऽथवाल्पपुत्रो वा।
पापखगे वक्तव्यं सौम्ये खेटे तु विपरीतम् ॥ २२ ॥
कन्यालिवृषभसिंहाः पञ्चमगा यस्य सूतिसमये स्युः।
तस्याल्पसुतत्वं स्याद्ग्रहरहिते पुत्रशोकभाग्भवति ॥ २३ ॥
जीवस्थितस्य राशेः पञ्चमभे पापसंयुक्ते।
पुत्रविनाशं विन्द्यात्सौम्यक्षेत्रं तु शुभदं स्यात् ॥ २४ ॥
चन्द्रे सुतभं याते पुरुषांशे चोजराशिके भवति।
सूर्येण दृश्यमाने बहुपुत्रक्लेशभाक्प्रसूतिश्च ॥ २५ ॥
चन्द्रे पञ्चमभवने दृष्टाग्निर्हीनवीर्यके।
तद्वद्बलोपपन्ने सुपुत्रवान् विगतशोकश्च ॥ २६ ॥
पुत्रगृहे पुत्रेशे तत्स्थे खेटेऽथवा बलोपेते।
सत्पुत्रवान् सुबुद्धिः पुण्याचारो भवेत्पुरुषः ॥ २७ ॥
पापयुते विपरीतं मिश्रैर्मिश्रं बलाधिकाद् वाच्यम्।
राहौ पञ्चमभवने विसुतः पुण्येन परिहीनः ॥ २८ ॥

हरिवंशे—

सिद्ध्या चेद्रविणा शशी त्रिपुरता भौमे च रुद्री क्रिया
सौम्ये संपुटकांस्यपात्रविधिवज्जीवे च पैत्र्यातिथिः।
शुक्रे गोप्रतिपालनं च कथितं मन्दे च मृत्युञ्जयः
कन्यादानभुजङ्गकेतुकपिलासन्तानसौख्यप्रदा ॥ २९ ॥
यावत्सङ्ख्यो भवेद्राशिस्तावद्वारं विनिर्दिशेत्।
शिवस्य स्थापना वा स्यात्सपादलक्षप्रयोगो वा ॥ ३० ॥
भौमयुते सुतमरणं दृष्टे स्त्रीराशिके बहुस्त्रीकः।
मित्राद्यंशे भानुः पुत्रकृत्स्त्रीप्रदो युवतिराशौ ॥ ३१ ॥
लग्ने सुरेज्यशशिनौ सप्तमसंस्थे कुजे ससौम्ये च।
पापैः पातालस्थैर्वंशच्छेत्ता भवति जातः ॥ ३२ ॥
लग्नसुतरन्ध्ररिष्फेषु शुभाः कुर्वन्ति वंशविच्छेदम्।
लग्नाद्व्ययनिधनस्थैः पापैरसुतो सुते चन्द्रे ॥ ३३ ॥
बुधभार्गवयोरस्ते सुखगे पापे गुरौ सुतस्थेऽपि।
यवनेश्वरेण गदितो वंशच्छेत्ता भवेज्जातः ॥ ३४ ॥

लग्नेश्वरे सुतस्थे लग्ने पापग्रहे सुखे शशिनि।
सुतभंशे बलहीने जातो वंशक्षयं नरो याति॥ ३५॥
दशमे भवने चन्द्रः सप्तमे भवने सितः।
पापैः पातालरन्ध्रस्थैश्च वंशक्षयकरो नरः॥ ३६॥
रविराहुकुजाः सौरिर्लग्ने वा पञ्चमेऽपि वा।
आत्मानं पितरं हन्ति भ्रातरं जननीं तथा॥ ३७॥
लग्ने शशिनि विनष्टे सूर्यप्राप्ते गुरौ शशिक्षेत्रे।
पापैस्त्रिकोणसंस्थैः पुत्रसुखात्पूर्वमेव निधनं स्यात्॥ ३८॥
पञ्चमराशौ सौम्ये पापयुते बन्धुभे विलग्ने वा।
पापैर्नवात्मजस्थैः पुत्रमुखं दृश्यते न तु प्राप्तिः॥ ३९॥
भौमे विलग्नयाते चाष्टमराशिस्थिते दिनेशसुते।
सूर्ये वाल्पसुतर्क्षे पुत्रः कालान्तरे भवति॥ ४०॥
यदि तु बहुग्रहसहिते लग्ने लाभस्थिते निशानाथे।
गुरुसितसंस्थैः पापैः पुत्रः कालान्तरे भवति॥ ४१॥
लग्ने दिनकृत्तनये अष्टमसंस्थे गुरौ च यदि भौमे।
पञ्चमगेऽल्पसुतर्क्षे पुत्रः कालान्तरे भवति॥ ४२॥
सुतलग्नेशदारेशलग्नेशानां दशा यदा।
पुत्रलाभस्तदा प्रोक्तो यवनेश्वरसम्मते॥ ४३॥
लग्नपुत्रकलत्रेशयोगे यदि दशा भवेत्।
सुतयुक्तेक्षितेशानां पुत्रसिद्धिस्तदा भवेत्॥ ४४॥
सुतपतिगुर्वोरथवा तद्युतराश्यंशपानां वा।
बलसहितस्य दशायाः परिपाके वा भवेत्सुतप्राप्तिः॥ ४५॥
लग्ने वित्ते तृतीये वा लग्ने सापत्यमग्रिमम्।
तुर्ये जन्म द्वितीयस्य पुरः पुत्र्यादि जन्म च॥ ४६॥

अब आगे जातक प्रदीप नामक ग्रन्थ के वाक्यों से जातक को वन्ध्या स्त्री की प्राप्ति होगी इसको बतलाते हैं।

यदि कुण्डली में लग्न में शनि व सप्तम में शुक्र हों अथवा सूर्य शनि सप्तम में दशमस्थ गुरु से दृष्ट हों यद्वा चक्रार्ध में शुक्र शनि तथा छठे भाव में चन्द्रमा और सप्तम पाप ग्रह से दृष्ट हो वा छठे भाव में जलचर राशि में शनि भौम हों तो जातक वन्ध्या स्त्री से युक्त होता है॥ १॥

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में पाप ग्रह हो तो उत्पन्न हो होकर सन्तान का नाश और सप्तम भाव में पापग्रह हों तो बादरायणजी का कहना है कि जातक दो पत्नी से युक्त होता है॥ २॥

अब आगे पुत्रनाशक योगों को बतलाते हैं।

यदि कुण्डली में पञ्चमेश राहु या भौम से युक्त अथवा राहु भौम के मध्य में हो तो जातक पुत्र से हीन होता है ॥ ३ ॥

यदि कुण्डली में निर्बल पञ्चमेश अस्त होकर पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक पुत्र हीन होता है यदि दैवसंयोगशवश उत्पन्न हो तो भी नष्ट होता है ॥ ४ ॥

अब आगे दो पुत्र तीन कन्या जन्म योग को कहते हैं।

यदि कुण्डली में लग्न से तीसरे भाव में बुध हो तो जातक दो पुत्र, तीन कन्याओं से युक्त होता है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए ॥ ५ ॥

पुन: पुत्रनाशक योग

यदि कुण्डली में लग्न में पापग्रह व बारहवें में पापग्रह, दूसरे में शुभ या बुध और पञ्चम में भी पापग्रह हो तो जातक पुत्र से रहित होता है ॥ ६ ॥

यदि कुण्डली में दूसरे भाव में पापग्रह, पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक का वंश नष्ट न होकर अल्प पुत्र से युक्त होता है ॥ ७ ॥

अब आगे यवनाचार्य जो के वाक्यों से संतान नाशक योगों को कहते हैं।

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में अल्पबली भौम, सूर्य या शनि या भौम की राशि में या इन से दृष्ट या उक्त ग्रहों के नवांश में या राशियों में हो तो जातक पुत्र हीन होता है ॥ ८ ॥

यदि कुण्डली में नीच या शत्रु राशि के नवांश में पराजित शुक्र या भौम हो तो जातक मृत सन्तान वाला या इनकी राशि का नवांश हो तो कन्या सन्तान वाला और अन्य राशि के नवांश में भौम या शुक्र हो तो पुत्र से युक्त होता है ॥ ९ ॥

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में पापग्रह की राशि में बली पापग्रह शुभ ग्रह से अदृष्ट हो तो जातक पुत्र हीन होता है ॥ १० ॥

यदि कुण्डली में बल हीन पापग्रह पञ्चम भाव में हो तो पुत्र का नाश, यदि अष्टमेश को छोड़कर बली शुभ ग्रह पञ्चम भाव में हो तो जातक पुत्र सुख से युक्त होता है ॥ ११ ॥

यदि कुण्डली में कर्क राशि में पञ्चम भाव में शनि हो तो अधिक पुत्रों से युक्त भाग्यवान् यदि पापग्रहों के साथ तीसरे भाव में सूर्य हो तो जातक पुत्र को पैदा करने वाला होता है ॥ १२ ॥

यदि कुण्डली में कर्क राशि में पञ्चम भाव में शनि हो तो जातक दूसरी पत्नी से पुत्रवान् और वहीं कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो अधिक स्त्री होने पर अल्प पुत्रों से युक्त होता है ॥ १३ ॥

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में कर्क राशि में गुरु हो तो जातक अधिक कन्या सन्तान वाला, यदि बुध हो तो अल्प पुत्र वाला और यदि शुक्र हो तो तीसरी स्त्री से अधिक पुत्रवान् होता है ॥ १४ ॥

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में कर्क राशि में पाप शुभ दोनों हों तो बली शुभ होने पर पुत्रवान् व निर्बल होने से पुत्र हीन जातक होता है ।। १५ ।।

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में सूर्य की राशि में चन्द्रमा हो तो अधिक कन्याओं से युक्त यद्वा चौथे भाव में कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो भी अधिक पुत्रियों से युक्त जातक होता है ।। १६ ।।

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में दो ग्रह हों तो जातक अधिक सन्तान वाला, यदि पञ्चम, नवम, चतुर्थ में ग्रह हों तो प्रथम उत्पन्न का नाश, बाद में जायमान जीता है। विवाहित द्वितीय पत्नी से एक पुत्र होता है वह संसार में प्रसिद्ध, त्यागी, दीर्घायु और राजा होता है ।। १७-१८ ।।

यदि कुण्डली में ग्यारहवें भाव में क्रूरग्रह, पाँचवें में शुक्र व चन्द्रमा हो तो प्रथम गर्भ से कन्या का जन्म व माता कष्ट से युक्त होती है ।। १९ ।।

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में बुध की राशि में बुध हो तो जातक पुत्र के शोक से युक्त अथवा नवम भाव में सिंह राशि में बुध हो तो तीसरी भार्या में उत्पन्न पुत्र के शोक से युक्त होता है ।। २० ।।

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में मकर या मीन राशि में गुरु हो तो जातक नष्ट पुत्रवान् यदि शुभ राशि में नवम में गुरु हो तो अल्पायु से युक्त पुत्र वाला होता है ।। २१ ।।

यदि कुण्डली में पापग्रह सप्तमेश पञ्चम भाव में हो तो स्त्री का नाश अथवा जातक अल्प पुत्रवान् होता है। यदि शुभग्रह हो तो स्त्री पुत्र से युत होता है ।। २२ ।।

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में कन्या या वृश्चिक या वृष या सिंह राशि में ग्रह हो तो जातक अल्प पुत्रवान् यदि ग्रहों का अभाव हो तो पुत्र शोक से युक्त होता है ।। २३ ।।

यदि कुण्डली में गुरु की राशि से पञ्चम राशि में पापग्रह हो तो पुत्र का नाश यदि शुभग्रह की राशि हो तो पुत्र सुख से युक्त जातक होता है ।। २४ ।।

यदि कुण्डली में पाँचवें भाव में पुरुष राशि के नवांश में विषम राशि में चन्द्रमा, सूर्य से दृष्ट हो तो जातक अधिक पुत्रों के क्लेश का भागी होता है ।। २५ ।।

यदि कुण्डली में पाँचवें भाव में निर्बल चन्द्रमा व बुध हों तो जातक दत्तक पुत्र से युक्त यदि बली हों तो सुन्दर पुत्रवान् व शोकहीन होता है ।। २६ ।।

यदि कुण्डली में पञ्चमेश पाँचवें भाव में अथवा पञ्चमस्थ शुभग्रह बली हो तो जातक सुन्दर पुत्र व बुद्धि से युक्त और पुण्यवान् होता है ।। २७ ।।

यदि कुण्डली में पञ्चमस्थ शुभग्रह निर्बल हो तो पुत्रहीन यदि शुभ पाप दोनों हों तो बली ग्रह के आधार पर पुत्र सुखासुख का विचार करना चाहिये। यदि राहु पञ्चम भाव में हो तो जातक पुत्र व पुण्य से हीन होता है ।। २८ ।।

हरिवंश में कहा है कि यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा सन्तति नाशक हों तो त्रिपुरता की सिद्धि से, भौम हो तो रुद्राभिषेक से, बुध हो तो दो कांसे के पात्रों की विधि से, गुरु हो तो पैतृक श्राद्ध से अर्थात् गया श्राद्ध से, शुक्र हो तो गाय का पालन करने से, शनि हो तो मृत्युञ्जय के जप से, राहु हो तो कन्यादान से और यदि केतु हो तो कपिला गाय का दान करने से सन्तान सुख होता है। पञ्चम भाव में जिस संख्या की राशि हो उतने बार पूर्वोक्त विधि करने पर या शिवालय का निर्माण कराने से अथवा सवा लाख का प्रयोग करवाने से सन्तान सुख होता है ॥ २९-३० ॥

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव भौम से युक्त हो तो पुत्र का मरण, यदि कन्या राशिस्थ भौम से दृष्ट हो तो अधिक कन्या उत्पन्न होती हैं। यदि मित्र के नवांश में सूर्य पञ्चम में हो तो जातक पुत्रवान्, स्त्री राशि में हो तो कन्याओं से युक्त जातक होता है ॥ ३१ ॥

यदि कुण्डली में लग्न में गुरु व चन्द्रमा, सप्तम भाव में बुध के साथ भौम और चौथे भाव में पापग्रह हों तो जातक पुत्रहीन या वंशहीन होता है ॥ ३२ ॥

यदि कुण्डली में लग्न, पञ्चम, अष्टम और बारहवें भाव में शुभग्रह हों तो जातक पुत्रहीन, यदि लग्न से बारहवें व आठवें भाव में पापग्रह और पाँचवें भाव में चन्द्रमा हो तो पुत्रहीन होता है ॥ ३३ ॥

यदि कुण्डली में सप्तम में बुध, शुक्र, चौथे पापग्रह और गुरु भी पाँचवें भाव में हो तो जातक वंशहीन होता है, ऐसा यवनाचार्यजी ने कहा है ॥ ३४ ॥

यदि कुण्डली में लग्नेश पाँचवें भाव में, लग्न में पापग्रह, चौथे भाव में चन्द्रमा और पञ्चमेश निर्बल हो तो जातक पुत्रहीन होता है ॥ ३५ ॥

यदि कुण्डली में दशम भाव में चन्द्रमा, सप्तम में शुक्र और चौथे भाव में पापग्रह हों तो जातक पुत्रहीन होता है ॥ ३६ ॥

यदि कुण्डली में सूर्य, राहु, भौम और शनि लग्न में वा पाँचवें भाव में हों तो जातक अपना या माता का या पिता का नाशक होता है ॥ ३७ ॥

यदि कुण्डली में लग्न में सूर्य के साथ चन्द्रमा अस्त हो तथा चन्द्रमा की राशि में गुरु और पापग्रह नवम, पञ्चम में हों तो जातक का पुत्र सुख से पूर्व ही मरण होता है ॥ ३८ ॥

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में बुध, लग्न या चौथे में पापग्रह और पाँचवें व नवें में पापग्रह हों तो जातक पुत्रहीन होता है ॥ ३९ ॥

अब आगे कालान्तर में पुत्र प्राप्ति योगों को कहते हैं।

यदि कुण्डली में लग्न में भौम, अष्टम भाव में शनि अथवा अल्प राशिस्थ सूर्य पाँचवें भाव में हो तो जातक कालान्तर में पुत्र से युक्त होता है ॥ ४० ॥

यदि कुण्डली में लग्नस्थ अधिक ग्रह हों व ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा और पापग्रह गुरु व शुक्र की राशि में हों तो जातक कुछ समय बीतने पर पुत्र से युक्त होता है ॥ ४१ ॥

श्रीमन्मिश्रबलभद्रविरचितम्

# होरारत्नम् ( द्वितीयो भागः )

**व्याख्याकारः डॉ० मुरलीधर चतुर्वेदी**

प्रस्तुत ग्रंथ श्री बलभद्र मिश्र द्वारा संकलित 'होरारत्नम्' का द्वितीय भाग है। इसमें ६ से १० तक पांच अध्याय हैं। इनमें कश्यपजातक, चन्द्राभरणजातक, जन्मसरणि, ज्ञानमुक्तावली, देवशालजातक, त्रैलोक्यप्रकाश, मरीचिजातक, यवनेश्वरजातक, राजविजय आदि कई दुर्लभ ग्रन्थों के उद्धार दिये हैं। इस भाग के अध्यायों का विवरण इस प्रकार है:

**छठे** अध्याय में नाभस योगों के अतिरिक्त सर्प, किङ्कर, दारिद्रय, रोग, क्रय-विक्रय, चित्र, वाद्य-वादन, भैषज्य, सूतक कर्म तथा भिक्षुक योगों का वर्णन है।

**सातवें** अध्याय में बारह भावों के फल का विवेचन है।

**आठवें** अध्याय में बारह राशियों में चन्द्रमा का तथा चन्द्रमा से बारह भावों में ग्रहों का फल वर्णित है।

**नवम्** अध्याय में आयुचिन्ता, दशारिष्ट, दशा-महादशा का फल वर्णित है।

**दशम** अध्याय में स्त्रीजन्माङ्ग के शुभाशुभयोग एवं स्त्रीकुण्डली में राजयोगों का वर्णन किया गया है।

मूल संस्कृत पद्यों के साथ-साथ हिन्दी अनुवाद और विशेष भी संलग्न हैं। अन्त में इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में एवं प्रस्तुत (द्वितीय) भाग में उद्धृत ग्रन्थ तथा ग्रन्थकारों की अकारादि क्रमसूची भी दी गई है। इस ग्रन्थ की विशेषताओं में महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके प्रत्येक विषय पर अनेक बातें ऐसी हैं जो कि अन्य ग्रन्थों में नहीं हैं।


**मोतीलाल बनारसीदास**

दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास बंगलौर

कलकत्ता पुणे मुम्बई

मूल्य: रु० ... द); ... जिल्द)





ISBN 81-208-2449-0

9 788120 824492